श्रवाण माह, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 183 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | गुरूवार 28 जुलाई 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

मॉनसून सत्रः विपक्ष के हंगामे के बीच दो दिनों के अंदर राज्यसभा और लोकसभा से अब तक विपक्ष के 24 सांसद निलंबित हो चुके हैं

मॉनसून सत्रः संसद में थम नहीं रहा बवाल

नई दिल्लीः संसद सत्र में बवाल थमने का नाम नहीं ले रहा। विपक्ष के हंगामे के बीच दो दिनों के अंदर राज्यसभा और लोकसभा से अब तक विपक्ष के 24 सांसद निलंबित हो चुके हैं। 20 सांसदों को एक हफ्ते के लिए निलंबित किया गया है, जबकि चार को पूरे सत्र के लिए। हफ्तेभर के लिए निलंबित होने वाले सांसदों में तृणमूल कांग्रेस यानी टीएमसी के सात, डीएमके छह, टीआरएस के तीन, सीपीएम के दो, सीपीआई के एक और आप के संजय सिंह शामिल हैं। इससे पहले लोकसभा के चार सांसदों को पूरे मानसून सत्र के लिए निलंबित कर दिया गया था। इनमें कांग्रेस सांसद ज्योतिमणि, राम्या हरिदास, मणिकम टैगोर, टीएन प्रतापन शामिल हैं। संसद का मौजूद सत्र काफी हंगामेदार रहा है। पहले दिन से ही विपक्ष विभिन्न मुद्दों को लेकर संसद में सरकार को घेर रहा है और चर्चा की मांग कर रहा। इसी को लेकर विपक्ष सदन के अंदर प्रदर्शन कर रहा।

ध्वनिमत से पास हुआ निलंबन का प्रस्तावः राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह ने आप नेता के निलंबन की घोषणा करते हुए कहा कि मंगलवार को उन्होंने सदन की कार्यवाही के दौरान कुर्सी पर कागज फेंका। सिंह का निलंबन संसदीय मामलों के कनिष्ठ मंत्री वी. मुरलीधरन द्वारा "कदाचार" और "सदन और पीठ के अधिकार की पूर्ण अवहेलना" के लिए एक प्रस्ताव के बाद किया गया था। यह प्रस्ताव ध्वनिमत से किया गया। बता दें, संसद का मानसून सत्र 18 जुलाई को शुरू हुआ और 12 अगस्त तक चलेगा। सत्र के दौरान 18 बैठकें होंगी। लोकसभा में विपक्ष ने बुधवार को कांग्रेस के चार सांसदों का निलंबन रद्द करने की मांग की। इस पर सरकार ने जोर देकर कहा कि इसे वापस लिया जा सकता है बशर्ते विपक्षी सदस्य यह आश्वासन दें कि वे सदन में वेल में प्रवेश नहीं करेंगे और तख्तियां नहीं दिखाएंगे। यह मांग राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी), तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) और द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) ने की थी। कांग्रेस के सदस्य सदन में मौजूद नहीं थे। जांच एजेंसियों के कथित दुरुपयोग के खिलाफ विजय चौक पर विरोध प्रदर्शन करने के बाद कई कांग्रेस सांसदों को हिरासत में लिया गया है।

स्पीकर की अनुमति से हम निलंबन हटाने को तैयारः विपक्षी सदस्यों की अपील का जवाब देते हुए संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने कहा कि स्पीकर की अनुमति से हम निलंबन हटाने को तैयार हैं, लेकिन क्या आप इस बात की गारंटी लेने के लिए तैयार हैं कि वे तख्तियां लेकर सदन और वेल में नहीं आएंगे। सुबह दो बार बाधित होने के बाद दोपहर दो बजे सदन की बैठक हुई। इस दौरान राकांपा नेता सुप्रिया सुले ने कहा कि विपक्ष सदन के सुचारू संचालन के लिए सरकार के साथ सहयोग करने को तैयार है।

हम आज भी अनुरोध करते हैं कि हमारे चार सदस्यों को माफ कर दिया जाना चाहिए और सदन में वापस लाया जाना

'अगर सदन की भावना है तो चार सदस्यों का निलंबन रद्द कर दिया जाए'

सुले ने कहा कि मैं विपक्ष की ओर से कह रही हूं कि हम सदन चलाना चाहते हैं। टीएमसी के सुदीप बंद्योपाध्याय ने भी कहा कि अगर सदन की भावना है तो चार सदस्यों का निलंबन रद्द कर दिया जाए।

उन्होंने कहा, प्रह्लाद जोशी ने घोषणा की है कि सरकार महंगाई पर चर्चा के लिए तैयार है, हम भी बहस में हिस्सा लेने के लिए तैयार हैं। इस मुद्दे को सुलझाएं और बहस शुरू करें।

आप सांसद संजय सिंह राज्यसभा से सस्पेंड

आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह को बुधवार को राज्यसभा से सस्पेंड कर दिया गया। उन पर सदन में मंगलवार को नारेबाजी करते हुए चेयरमैन के आसन पर पेपर फेंकने का आरोप है। बुधवार को राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह ने संजय सिंह को इस हफ्ते की बची हुई कार्यवाही के लिए निलंबित करने की घोषणा की। इस हफ्ते मानसून सत्र में हंगामा करने वाले राज्यसभा के 20 और लोकसभा के 4 सांसदों पर निलंबन कार्रवाई की जा चुकी है। राज्यसभा से से निलंबित किए गए सभी 20 सांसदों ने संसद में स्थित गांधी प्रतिमा के पास धरना देने का निर्णय लिया है। यह सभी सांसद 50 घंटे तक बारी-बारी धरना देकर अपने निलंबन का विरोध करेंगे।

ध्वनिमत से पास हुआ निलंबन का प्रस्तावः राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह ने आप नेता के निलंबन की घोषणा करते हुए कहा कि मंगलवार को उन्होंने सदन की कार्यवाही के दौरान कुर्सी पर कागज फेंका। सिंह का निलंबन संसदीय मामलों के कनिष्ठ मंत्री वी. मुरलीधरन द्वारा "कदाचार" और "सदन और पीठ के अधिकार की पूर्ण अवहेलना" के लिए एक प्रस्ताव के बाद किया गया था। यह प्रस्ताव ध्वनिमत से किया गया। बता दें, संसद का मानसून सत्र 18 जुलाई को शुरू हुआ और 12 अगस्त तक चलेगा।

सुप्रीम कोर्ट ने ईडी के गिरफ्तारी के अधिकार को बरकरार रखा

नई दिल्लीः सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) के विभिन्न प्रावधानों की संवैधानिकता को चुनौती देने वाली 241 याचिकाओं पर फैसला सुनाया। अदालत ने पीएमएलए के तहत प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को मिले गिरफ्तारी के अधिकार को बरकरार रखा है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मनी लॉन्ड्रिंग के तहत गिरफ्तारी मनमानी नहीं है। जस्टिस एएम खानविलकर, जस्टिस दिनेश माहेश्वरी और जस्टिस सीटी रविकुमार की बेंच ने विजय मदनलाल चौधरी बनाम यूनियन ऑफ इंडिया केस और 240 याचिकाओं पर फैसला सुनाया है। इसमें पूर्व केंद्रीय मंत्री पी चिदंबरम के बेटे कार्ति चिदंबरम, महाराष्ट्र सरकार के पूर्व मंत्री अनिल देशमुख, जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने भी ईडी की गिरफ्तारी, जब्ती और जांच प्रक्रिया को चुनौती दी थी।

सुप्रीम कोर्ट ने फैसले में क्या कहाः ईडी का गिरफ्तारी करने, सीज करने, संपत्ति अटैच करने, रेड डालना और बयान लेने के अधिकार बरकरार रखे गए हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि शिकायत ईसीआईआर को एफआईआर के बराबर नहीं माना जा सकता है। ये ईडी का इंटरनल डॉक्यूमेंट है।

सोनिया गांधी से ईडी की पूछताछ खत्म

नई दिल्लीः कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बुधवार को 3 घंटे पूछताछ की। एऊने उन्हें अब तक कोई नया नोटिस नहीं दिया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, एऊ ने सोनिया से पूछा कि यंग इंडिया के लेन-देन से जुड़ी कितनी बैठकें आपके घर 10 जनपथ पर हुईं। मंगलवार को भी जब ईडी ने उनसे कंपनियों के लेन-देन के बारे में सवाल किया तो सोनिया ने जवाब दिया- कांग्रेस, एसोसिएट जर्नल और यंग इंडियन से जुड़े सभी लेनदेन पूर्व कोषाध्यक्ष मोतीलाल वोरा देखते थे।

कांग्रेस अध्यक्ष से हुए ये अहम सवालः नई दिल्ली में बुधवार को प्रदर्शन कर रही महिला कार्यकर्ताओं को सुरक्षाबलों ने हिरासत में लिया। इस दौरान झड़प भी हुई। बुधवार को पूछताछ के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने

5जी स्पेक्ट्रम की दो दिन नीलामी में 2.94 लाख करोड़ रुपये की बोलियां मिलीं

नई दिल्ली। 5जी स्पेक्ट्रम की नीलामी के दूसरे दिन कुल 1.49 लाख करोड़ रुपये की बोलियां मिली हैं। सरकार को पहले दिन चार दौर की बोली में 1.45 लाख करोड़ रुपये की बोलियां मिली थीं।यानी सरकार को दो दिन में हुई कुल नौ दौर में 2.94 करोड़ रुपये की बोलियां मिली हैं। सरकार ने स्पेक्ट्रम की दूसरे दिन की बोली से उत्साहित होकर इसे तीसरे दिन के लिए बढ़ा दिया है। केंद्रीय दूरसंचार मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बुधवार को बताया कि पांचवीं पीढ़ी के

स्पेक्ट्रम की नीलामी के दूसरे दिन पांच दौर की बोली हुई और अंत तक 1.49 करोड़ रुपये की बोलियां प्राप्त हुईं है। सरकार को नीलामी के पहले दिन चार दौर की बोली पूरा होने पर 1.45 लाख करोड़ रुपये की बोलियां मिली थीं। यानी सरकार को दो दिन में हुई कुल नौ दौर में 2.94 करोड़ रुपये की बोलियां मिली हैं। उन्होंने कहा कि 5जी स्पेक्ट्रम की नीलामी के लिए तीसरे दिन गुरुवार को भी बोली जारी रहेगी।

दरअसल 5जी स्पेक्ट्रम के लिए निजी क्षेत्र की चार प्रमुख दूरसंचार कंपनियां रिलायंस जियो, भारती एयरटेल, वोडाफोन-आइडिया और अडाणी एंटरप्राइजेज भी इस नीलामी प्रक्रिया में हिस्सा ले रही है।

'केंद्रीय सशस्त बलों और असम राफल्स की भर्ती में पूर्व अग्निवीरों के लिए 10 प्रतिशत रिक्तियां आरक्षित'

नई दिल्ली। केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों और असम राफल्स में कांस्टेबल (सामान्य ड्यूटी)/राइफलमैन के पद की भर्ती में पूर्व अग्निवीरों के लिए 10 प्रतिशत रिक्तियां आरक्षित करने के लिए एक सैद्धांतिक अनुमोदन प्रदान किया गया है। साथ ही ऊपरी आयु सीमा में ढील और शारीरिक दक्षता परीक्षा से भी छूट दी जायेगी।

गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय की ओर से बुधवार को राज्यसभा में एक प्रश्न के उत्तर में उक्त जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि सीएपीएफ में कांस्टेबल (जीडी) के पद (पुरुष और महिला) के लिए न्यूनतम ऊंचाई के मानदंड निम्नअनुसार है। सामान्य श्रेणी में पुरुष 170 सेमी जबकि महिला 157 है।

यह दी गई छूटः

सभी अनुसूचित जनजाति (एसटी) अभ्यर्थी के लिए पुरुष को 162.5 सेमी, जबकि महिला को 150 सेमी की छूट दी गई है। जबकि पूर्वोत्तर राज्यों के सभी अनुसूचित जनजाति (एसटी) अभ्यर्थी में 157 सेमी पुरुष और 147.5 सेमी महिलाओं को छूट दी जायेगी। वहीं वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित जिलों के एसटी अभ्यर्थी में 160 सेमी पुरुष और 147.5 महिलाओं को छूट है। वहीं, गढ़वाली,कुमाऊंनी,डोगरा, मराठा उम्मीदवार तथा असम, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर और लद्दाख राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के उम्मीदवार में 165 सेमी पुरुष और महिला को 155 सेमी की छूट दी जायेगी। इसी क्रम में अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा के पूर्वोत्तर राज्य से पुरुष को 162.5 सेमी और महिलाओं को 152.5 सेमी की छूट दी जायेगी। वहीं, गोरखा प्रादेशिक प्रशासन (जीटीए) जिसमें दार्जिलिंग जिलों के तीन उप-मंडल नामतः दार्जिजिंग, कलिम्पोंग और कुसेओंग शामिल है। तथा इन जिलों के निम्नलिखित मौजा उप-मंडल शामिल है। रंगमोहन, बाराचेंगा, पानीघाट, छोटा अदलपुर, पहाड़ू, सुकना वन, सुकना भाग-1, सीतोंग वन, सिवोक हिल फॉरेस्ट, सिवोक फॉरेस्ट, छोटा चेंगा और निपनिया से आने वाले पुरुष को 157 सेमी की छूट जबकि महिलाओं को 152.5 की छूट है।

पाक महिला एजेंटों ने भारतीय जवान को हनीट्रैप में फंसाया

जयपुरः पाकिस्तानी महिला एजेंट्स ने फिर एक भारतीय जवान को हनीट्रैप में फंसा लिया। जवान वॉट्सऐप चैट और वीडियो कॉल के जरिए उनके संपर्क में था और संवेदनशील सूचनाएं भेज रहा था। आरोपी सैन्यकर्मी शांतिमोय राणा को गिरफ्तार कर लिया गया है। यह जवान जयपुर छावनी में तैनात था।

सीआईडी इंटेलिजेंस लंबे समय से उसकी गतिविधियों पर नजर रख रही थी। पाक एजेंटों ने रुपए का लालच देकर उससे इंडियन आर्मी से जुड़ी जानकारी हासिल की। सीआईडी ने उसे 25 जुलाई को हिरासत लिया था, शुरूआती पूछताछ के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। डीजी इंटेलिजेंस उमेश मिश्रा ने बताया कि सेना और पुलिस पूछताछ में 24 वर्षीय शांतिमोय ने कबूल किया कि वह काफी समय से सोशल मीडिया के जरिए पाकिस्तानी खुफिया एजेंटों के संपर्क में था।

पश्चिम बंगाल में बांकुड़ा जिले के कंचनपुर का रहने वाला शांतिमोय मार्च 2018 से भारतीय सेना में भर्ती हुआ था। अभी तक जांच-पड़ताल में सामने आया है कि एक पाकिस्तान महिला एजेंट ने उसे अपना नाम गुरनुर कौर उर्फ अंकिता बताया। कहा कि वह शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश) की रहने वाली है। शाहजहांपुर में ही मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विसेज में काम करती है। दूसरी महिला निशा ने खुद को मिलिट्री नर्सिंग सर्विस में बताया था। इन महिलाओं ने शांतिमोय को हनीट्रैप में फंसाकर उसे पैसों का भी लालच दिया। उससे रेजीमेंट के सेंसटिव व गोपनीय डॉक्यूमेंट्स और युद्धाभ्यास के वीडियो मंगवाए। बताया जा रहा है कि इसके एवज में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के इशारे पर आरोपी जवान के बैंक खाते में रुपए भी भेजे गए।

अमरनाथः 'अब तक 42 तीर्थयात्रियों की प्राकृतिक कारणों से हुई मौत'

नई दिल्लीः केंद्र सरकार ने बुधवार को संसद को बताया कि वार्षिक अमरनाथ यात्रा के दौरान इस साल 19 जुलाई तक 42 तीर्थयात्रियों की प्राकृतिक कारणों से मृत्यु हो चुकी है। राज्यसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय ने बताया कि 2020 और 2021 में कोविड-19 महामारी के कारण श्री अमरनाथ यात्रा का आयोजन नहीं किया गया था। उन्होंने बताया कि सरकार ने तीर्थयात्रियों के जीवन की रक्षा के लिए कई कदम उठाए हैं; जैसे- स्वास्थ्य प्रमाणपत्र की अनिवार्य आवश्यकता, ऑक्सीजन बूथ की स्थापना, यात्रा मार्ग के साथ विभिन्न स्थानों पर अस्पतालों की स्थापना, रेडियो फ्रीक्वेंसी आधारित पहचान (आरएफआईडी) के माध्यम से यात्रियों की निगरानी या कल्याण, स्वचालित मौसम स्टेशनों की स्थापना, समय-समय पर स्वास्थ्य और मौसम संबंधी परामर्श जारी करना। इसके अलावा किसी भी घटना या अप्रिय घटना की स्थिति में तीर्थयात्रियों को ढूंढने, बचाव और राहत के लिए एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, सेना, सीएपीएफ और जम्मू-कश्मीर सरकार के अधिकारियों विभिन्न सरकारी एजेंसियों को लगाया गया है।

युवा मोर्चा के प्रवीण ने कन्हैयालाल की हत्या के विरोध में पोस्ट की थी, 10 आरोपी हिरासत में

कर्नाटकः बीजेपी नेता की कुल्हाड़ी से काटकर हत्या

बेंगलुरूः प्रवीण ने 29 जून को राजस्थान में मारे गए कन्हैयालाल की हत्या के विरोध में पोस्ट की थी। पुलिस इस एंगल से भी जांच कर रही है। अब तक 10 आरोपियों को हिरासत में लिया है। इनसे पूछताछ की जा रही है। मामले में कर्नाटक के गृहमंत्री अरगा जनेंद्रा ने सीएम बसवराज बोम्मई से मुलाकात की है। हत्या के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं ने पुत्तूर में प्रदर्शन किया, जो देर रात तक चलता रहा। दक्षिण कन्नड़ बंद बुलाया। जिले में धारा 144 लागू कर दी गई है। उग्र भीड़ ने भाजपा सांसद नलिनकुमार कतिल की कार को घेरकर उसे झकझोर दिया। कार को पलटने की कोशिश

भी की। भीड़ ने नारे लगाए वी वांट जस्टिस।

बसों पर पथराव, पुलिस ने किया लाठीचार्जः प्रदर्शनकारियों ने कुछ जगह पर सरकारी बसों पर पथराव किया। इसके बाद पुलिस ने प्रदर्शन कर रहे लोगों पर लाठीचार्ज किया। पुत्तूर से मेंगलुरु जा रही एक बस पर बोलवार में पथराव किया गया जिससे बस डैमेज हुई है। इलाके में तनाव बना हुआ है। पुलिस ने आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए 4 टीमें गठित की हैं। यह जिला केरल से लगा हुआ है। इसलिए वहां की पुलिस से भी मदद ली जा रही है।

पोल्ट्री कारोबारी थे प्रवीण, दुकान पर ही हुई हत्याः पुलिस के मुताबिक, दक्षिण कन्नड़ जिले के बेल्लारे इलाके में प्रवीण की पोल्ट्री की दुकान है। मंगलवार को जब प्रवीण दुकान बंद कर घर लौट रहे थे, तभी बाइक पर कुछ लोग आए और उनका रास्ता रोक लिया। उन्होंने कुल्हाड़ी से प्रवीण पर हमला कर दिया। वे गंभीर रूप से घायल हो गए। लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस वहां पहुंची और प्रवीण को अस्पताल ले गई। जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

देश के 29,616 अछूते गांवों तक पहुंचाई जाएगी 4जी सेवाएंः अश्वनी

नई दिल्लीः केंद्रीय मंत्रिमंडल ने यूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड के माध्यम से देश के अबतक अछूते गांवों तक 4जी सेवा पहुंचाने से जुड़ी एक परियोजना को मंजूरी दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बुधवार को बैठक कर दूरसंचार मंत्रालय के इस प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की। मंत्रिमंडल के फैसलों की जानकारी देते हुए केंद्रीय मंत्री अश्वनी वैष्णव ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने योजनाओं और सेवाओं को संतृप्ति तक पहुंचाने के संकल्प की बात कही है। उनकी सरकार अंत्योदय के मंत्र पर काम करती है। उसी के तहत आज का यह निर्णय लिया गया है।

उन्होंने बताया कि अब तक अछूते रहे 29616 गांव तक 4जी सेवाओं को पहुंचाया जाएगा। इसके लिए देशभर में 19,772 टावर लगाए जाएंगे। इन पर कुल 26,316 करोड का खर्च आएगा। इस पूरी परियोजना को यूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड के जरिए पूंजी मुहैया कराई जाएगी। नामांकन के आधार पर बीएसएनएल को यह परियोजना सौंपी जाएगी। उन्होंने बताया कि सीमावर्ती क्षेत्रों में भी इस परियोजना के माध्यम से 4जी इंटरनेट सेवा को मजबूत किया जाएगा।

खबर संक्षेप

हर हर महादेव के नारों से गूंजते रहे शिवालय

झूंसी। सावन मास के तेरस के दिन मंदिरों में कांवरियों के साथ अन्य शिव भक्तों का जनसैलाब उमड़ पड़ा था ब्रह्म मुहूर्त से शुरू हुआ जलाभिषेक देर रात तक चलता रहा। वही लोगों ने मंदिरों व घरों में भगवान भोलेनाथ को प्रसन्न करने के लिए भांग, धतूरा, बेलपत्र चढ़ा कर विधि विधान से पूजा अर्चना कर रुद्राभिषेक किया। धार्मिक मान्यता के अनुसार सावन माह के तेरस के दिन भगवान शिव को जलाभिषेक करने का विशेष महत्व होता है।

इस दिन देवो के देव महादेव अत्यधिक प्रसन्न होते हैं और भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। मंगलवार को तेरस के दिन दर्शन-पूजन और जलाभिषेक के लिए शिवालयों में भक्तों की भारी भीड़ रही। ककरा दुबावल स्थित महर्षि दुर्वासा आश्रम, ऐन्द्री धाम में ब्रह्म मुहूर्त से ही शिव भक्तों का तांता लगा था मंगला आरती के बाद कपाट खुला तो जलाभिषेक शुरू हुआ जो देर रात तक चलता रहा। यही हाल झूंसी गंगा तट पर स्थित गंगोली शिवाला, कोटवा शिव मंदिर, हनुमानगंज शिव मन्दिर, सुबलहवा आश्रम के साथ सभी छोटी बड़ी मंदिरों में शिव को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठान चल रहा था।

प्रधान संघ ने भ्रष्टाचार के खिलाफ भरी हुंकार

ब्लाक मुख्यालय पर ताला बंद कर गायब रहें कर्मचारी व अधिकारी

अखंड भारत संदेश

करछना ब्लाक सभागार में बुधवार को प्रधान संघ ने विकास कार्यों में कमीशनखोरी व भ्रष्टाचार को लेकर प्रदर्शन करते

करछना। ब्लॉक सभागार में आयोजित विकास खंड करछना प्रधान संघ की बैठक में प्रधानों ने विकास कार्यों में कमीशन बाजी भ्रष्टाचार को लेकर नारेबाजी की और अधिकारियों के खिलाफ हुंकार भरी प्रधान संघ अध्यक्ष अवतार किशन सिंह एडवोकेट के नेतृत्व में आयोजित ब्लॉक सभागार में प्रधानों की बैठक में विकास कार्यों में व्यापक पैमाने पर कमीशन खोरी तथा मनरेगा कार्यों व अन्य विकास कार्यों में ब्यापक पैमाने पर कमीशन लेकर फाइलों की संस्तुति को लेकर अधिकारियों कर्मचारियों के खिलाफ ब्लॉक मुख्यालय पर प्रदर्शन कर नारेबाजी की उस दौरान ब्लॉक परिसर में सभी कर्मचारी वहा से, अधिकारी ताला बंद कर फरार हो गए थे आक्रोशित प्रधानों ने जिला अधिकारी प्रयागराज मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश व मुख्य विकास अधिकारी प्रयागराज को संबोधित ज्ञापन देने का निर्णय लिया तथा उन्होंने चेतावनी दी कि प्रधानों के साथ कमीशन बाजी भ्रष्टाचार अगर बंद नहीं हुआ तो मनरेगा के सभी काम अमृत सरोवर आदि इटरलॉकिंग,पंचायत भवन निर्माण, कार्य सभी कार्य का बहिष्कार कर धरना प्रदर्शन करने को बाध्य होंगे बैठक में उपस्थित प्रधान संघ के अध्यक्ष अवतार किशन सिंह महामंत्री धीतेश तिवारी प्रधान प्रतिनिधि सुरेश पांडे ,मुख्तार अहमद, प्रेमचंद, प्रधान प्रतिनिधि विपिन यादव, चंद्र प्रकाश तिवारी, परमानंद मौर्य राजकुमार पटेल ,दीप नारायण ,पटेल सुरेंद्र कुमार पटेल ,शैलेंद्र शर्मा, कृष्ण देव कोटार्य,प्रधान बडेलाल ,अम्बाला तिवारी प्रधान अमिलो, प्रधान बरदहा,सहित ब्लाक सभी ग्राम पंचायतों के प्रधान एवं प्रतिनिधियों ने बैठक में उपस्थित रहे।

वाहनों के फर्जी बीमे से भारत सरकार को हो रही भारी राजस्व की हानि

जारी। अज्ञात व्यक्तियों द्वारा ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी में फर्जी तरीके से वाहनों का बीमा कर कंपनी तथा भारत सरकार को भारी राजस्व की चपत लगाने का मामला प्रकाश में आया । ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी के शाखा प्रबंधक सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि कुछ अज्ञात व्यक्तियों द्वारा वाहन का सस्ते दर पर आईआरडीए के नियमों को दरकिनार करते हुए फर्जी तरीके से यूजर आईडी और पासवर्ड बनाकर वाहनों का बीमा कर रहे हैं जिससे सरकार द्वारा निर्धारित बीमा मूल्यों का दुरुपयोग हो रहा है जिससे भारत सरकार और बीमा कंपनी को भारी राजस्व की हानि हो रही है जो कि घोर अपराध की श्रेणी में आता है साथ ही शातिर लोग भारी कमर्शियल वाहनों का बीमा हल्के दोपहिया वाहनों में कर रहे हैं जिससे अज्ञात व्यक्तियों द्वारा अनाधिकृत तरीके से जारी किए गए बीमें के कारण बीमा कंपनी तथा सरकार को निर्धारित प्रीमियम नहीं प्राप्त हो पा रहा है फर्जी बीमा कताओं के खिलाफ बीमा कंपनी के शाखा प्रबंधक ने संभागीय परिवहन अधिकारी प्रयागराज , एसएसपी प्रयागराज तथा अपने उच्च के कार्यालय को रजिस्टर्ड शिकायती पत्र देकर जाँच कर कार्यवाही की मांग करते हुए अज्ञात ब्यक्तियों द्वारा रैकेट बनाकर वाहनों के फर्जी बीमे पर चिंता जाहिर की।

लेखपाल के खिलाफ कार्यवाई को थाने में एकत्रित प्रधान संघ के सदस्य

लेखपाल के खिलाफ थाने पहुंचा प्रधान संघ, कार्रवाई की मांग

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। क्षेत्र के इरादतगंज ग्राम प्रधान व लेखपाल के बीच हुआ विवाद उलझ गया है। जहां लेखपाल ने ग्राम प्रधान के ऊपर कई धाराओं में केस दर्ज कराया है ,वहीं ग्राम प्रधान संघ बुधवार के दिन घूरपुर थाने पहुंच लेखपाल के खिलाफ कार्रवाई की मांग की । बताते चले कि विगत कई दिनों पूर्व से ग्राम प्रधान इरादतगंज देवेंद्र प्रताप सिंह व हल्का लेखपाल वीरेंद्र खरे के एक दूसरे के ऊपर आरोप प्रत्यारोप लगा रहे है । लेखपाल ने प्रधान समेत कई लोगों के खिलाफ केस दर्ज कराया तो वहीं बिगहिया गांव के कई लोग पंचायती राज्यमंत्री सहित कई संबंधित अधिकारियों से मिलकर लेखपाल के द्वारा जमीन के पट्टे के नाम पर रुपये हड़पने का आरोप लगाया। जिसका ऑडियो व वीडियो भी विगत दिनों वायरल हुआ था । इधर बुधवार के दिन प्रधानसंघ जसरा के अध्यक्ष दारा सिंह पटेल के नेतृत्व में पहुंचे प्रधानों ने घूरपुर थाने पहुंच कर आरोपित लेखपाल के खिलाफ शिकायत की । जिस पर प्रभारी घूरपुर विमल किशोर ने आश्वस्त किया कि जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी।

कॉलेज में एडमिशन नहीं मिला तो प्रबंधक व शिक्षकों की जमकर कर दी पिटाई, केस दर्ज

अखंड भारत संदेश

करछना। थाना क्षेत्र के वीरपुर स्थित श्री जयपत्ती इंटर कॉलेज में बुधवार को प्रबंधक समेत 3 अध्यापकों की जमकर पिटाई कर दी गई घायलों को उपचार के लिए सीएससी करछना में भर्ती कराया गया था जहां से चिकित्सकों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया प्राप्त जानकारी के अनुसार श्रीमती जयपत्ती इंटर कॉलेज बीरपुर के प्रबंधक पुष्पराज ने बताया कि विद्यालय में सभी सीट फुल हो जाने के कारण बच्चों का दाखिला नहीं किया जा रहा है जिसको लेकर आरोपी खाई गांव निवासी विनय मिश्रा के पुत्र अर्पित मिश्रा समेत आठ लोग बुधवार को विद्यालय पहुंचकर एडमिशन जबरन कराना चाह रहे थे तथा विद्यालय में सीट फुल हो जाने का कारण एडमिशन करने से इंकार कर दिया जिस पर अर्पित मिश्रा अपने साथियों के साथ मिलकर लाठी-डंडे से जमकर स्कूल में तांडव मचाया जिसमें दंबगो ने लाठी डंडे से विद्यालय परिसर में शिक्षकों को दौड़ा-दौडा कर पीटा, प्रबंधक पुष्पराज के हाथ के अंगुलियों में फैक्चर हो गया अध्यापिका अनीता श्रीवास्तव घायल हो कर बेहोश हो गई जिन्हे बेहोशी की हालत में गाडी से लेजाकर अस्पताल पहुंचाया गया तथा वही महेंद्र कुमार अध्यापक, एक और अन्य टीचर को भी गंभीर चोटें आई मामले में पीड़ित पक्ष की ओर से नामजद सहित अज्ञात लोगों के खिलाफ तहरीर देकर केस दर्ज कराया है।

अस्पताल में घायल इलाजरत शिक्षिका

बरसात ने ही खोल दी नगर पंचायत के विकास की पोल

नगर के नाले और नालियां चोक, कई घरों में घुसा पानी, तहसील परिसर में जलभराव की समस्या से परेशान दिखे अधिवक्ता व वादकारी

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। सरकार भले ही नगरों एवं गांवो के विकास के लिए पानी की तरह पैसा बहा रही हो और ग्रामीण क्षेत्र एवं नगर क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों को हर सुविधाएं मुहैया कराने के इंतजाम हेतु निर्देश दिए हो, किंतु जमीनी हकीकत कुछ और ही बयां कर रही है। पहली बारिश ने ही नगर पंचायत कोरांव के विकास की कलई खोल दी। नगर के अधिकांशतः नाले और नालियां चोक होने से नगर के कई घरों में नालियों का गंदा पानी घुस गया। मंगलवार शाम को हुई झमाझम बारिश में जब नालियों का पानी सड़क पर आ गया और लोगों के घरों में घुसने लगा तो लोग बाल्टियों से पानी बाहर फेंकते देखे गए। जब बारिश का गंदा पानी लोगों के घरों में घुसने लगा तो सरकार को भी कोसने लगे कहा कागज पर विकास तो कर दिए जा रहे हैं किंतु आज तक नगर में जल निकासी की व्यवस्था नहीं हो सकी। नगर पंचायत कोरांव के अंबेडकर नगर, सुभाष नगर, बहादुर शाह नगर समेत कई मोहल्लों में नाले एवं नालियां चोक होने की वजह से लोगों के घरों में गंदा पानी घुस गया और काफी देर तक लोगों में अफरा-तफरी मची रही। कई व्यवसायियों के दुकानों में भी पानी घुसने से व्यापारियों का सामान भी भीग गया।

इसी प्रकार तहसील परिसर में भी जलभराव की समस्या से अधिवक्ता व वादकारी परेशान दिखे। वरिष्ठ अधिवक्ता रामेश्वर प्रसाद तिवारी का कहना है तहसील परिसर में मिट्टी पटवा कर अगर उसमें अच्छे किस्म के पेड़-पौधे लगवा दिए जाएं तो गर्मी को दिनों में आने वाले वादकारियों व अधिवक्ताओं को शीतल छाया मिलेगी। इसके साथ ही जलभराव की समस्या से अधिवक्ताओं एवं वाद कार्यों को अपने दो पहिया चार पहिया वाहन खड़े करने में भी समस्याएं होती हैं जिस से भी निजात मिल सकेगी अधिवक्ताओं ने तहसील परिसर में मिट्टी पटान कार्य कराए जाने की मांग की है।

विकास से कोसों दूर नगर कोरांव जल निकासी की नहीं है व्यवस्था

वर्ष 1990 के दशक में कोरांव बाजार को नगर पंचायत का दर्जा मिला था। लगभग 25 वर्ष से अधिक का समय बीत गया किंतु आज तक नगर पंचायत कोरांव में जल निकासी का बेहतर प्रबंधन नहीं हो सका। जिससे प्रत्येक वर्ष बारिश के दिनों में नगर के विकास कार्यों की जहां पोल खुलती है, वहीं लोगों के घरों में गंदा पानी घुसता है और लोग परेशान होते हैं। लेकिन आज तक नगर पंचायत में जल निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं हो सकी। जल निकासी की व्यवस्था हेतु कई बार कार्य योजनाएं तो तैयार कराई गई किंतु उन पर अमल नहीं हुआ जिससे समस्या आज भी जस की तस बनी हुई है। नगर वासियों ने जिलाधिकारी प्रयागराज समेत नगर विकास विभाग के उच्चाधिकारियों एवं नगर पंचायत प्रशासन कोरांव का ध्यान आकृष्ट कराते हुए जल निकासी की उचित व्यवस्था कराए जाने की मांग की है।

मोती नगर में नहर में लगी पाइप के जगह पुल निर्माण की मांग

नगर पंचायत कोरांव के मोती नगर मोहल्ले से होकर निकली अंतरी - सिकमी माइनर कोरांव बाजार में लेडियारी रोड को काटते हुए निकली है जहां माइनर में पाइप डालकर क्रॉसिंग दी गई है। पाइप संकरी होने के कारण बारिश के दिनों में पानी नहीं निकल पाता है और सैकड़ों बीघे भूमि जलमग्न रहती है। किसान अपनी खेती भी नहीं कर पाते हैं और बारिश के दिनों में जलभराव होने के कारण घरों में भी पानी घुसने लगता है। लोगों ने उक्त माइनर पर पुलिया निर्माण कार्य कराए जाने की मांग की है।

15 साल से बदहाल हैं मोदीनगर की सड़कें, नाली भी नहीं

शंकरगढ़। नगर पंचायत शंकरगढ़ के वार्ड संख्या सात मोदीनगर का दिनों दिन विस्तार होता जा रहा है, लेकिन विस्तारित मोहल्लों को मूलभूत सुविधाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है। जलनिकासी और सड़क की सुविधा न होने से स्थानीय लोगों को बरसात के सीजन में खासी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है।स्थानीय लोगों को सड़क, नाली और पेयजल की सुविधा नहीं मिलने से खासी मुश्किलों का भी सामना करना पड़ रहा है। इन दिनों बच्चे कीचड़ से गुजरकर स्कूल जा रहे हैं। राहगीर भी आए दिन गिरते रहते हैं। सड़क का गंदा पानी लोगों के घरों में घुस रहा है। इससे लोगों की जिंदगी नरकीय होती जा रही है। वार्ड नंबर सात मोदीनगर के सभासद प्रकाशचंद्र गुप्ता ने बताया कि इनके द्वारा कई बार इन सड़कों व नाली के निर्माण के लिए प्रस्ताव दिया गया, साथ ही लिखित व मौखिक रूप से शिकायत भी की गई है, परंतु यहां के लोग आज भी मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। स्थानीय लोगों ने नगर पंचायत का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराते हुए समस्याओं से निजात दिलाने की मांग की है।

एक दशक बाद भी राज्यसभा सांसद के गांव से होकर गुजरने वाली बरांव धंधुहा मार्ग की नहीं बदली सूरत

करछना। विकास खंड करछना क्षेत्र के अंतर्गत बरांव से होकर धधुंहा इटवा को जोड़ने वाला संपर्क मार्ग एक दशक से बदहाली का दंश झेल रहा है। 26 किलोमीटर लंबा इस मार्ग का मरम्मत कार्य न होने से मार्ग में डाली गई गिट्टी उखड़ कर बाहर आ गई है। जिससे समूचे मार्ग में बड़े-बड़े गड्ढे बन गए हैं। इस मार्ग से रोजाना हजारों की संख्या में राहगीर आवागमन करते हैं। गड्ढा युक्त मार्ग होने से राहगीरों को आवागमन करते वक्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सबसे ज्यादा लोगों को बरसात के दिनों में रात के अंधेरे में दिक्कत उठानी पड़ती है। मार्ग में बने गड्ढे में बरसात का पानी भर जाता है। जिसमें राहगीर फीसल कर गिरते पड़ते रहते हैं और चोटिल हो जाते हैं। बराव गांव निवासी राम अभिलाष शर्मा,कुलमई निवासी शिवधारी सिंह ने बताया इस मार्ग से जुड़े 2 दर्जन से अधिक विद्यालय संचालित होते हैं। लेकिन कई वर्षों से सड़क का मरम्मत कार्य नहीं किया जा रहा है। जबकि करछना से 8 बार विधायक व दो बार प्रयागराज सांसद रह चुके कुंवर रेवती रमण सिंह के गांव से होकर यह मार्ग गुजरती है। मामले को लेकर कई बार विभागीय अधिकारियों से शिकायत किया गया है। लेकिन विभाग की ओर से मरम्मत कार्य के नाम पर मार्ग में बने गड्ढे की पैचिंग कर छोड़ दिया जाता है। जो कुछ ही दिन बाद पुनः गड्ढे में तब्दील हो जाता है। कुछ इसी तरह क्षेत्र के बीरपुर से लेकर भगनपुर घोड़ेडीह से हर्रई तक का मार्ग पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया है। भले ही सरकार गड्ढा मुक्त सड़के होने की ढिंढोरा पीट रही हो लेकिन विभाग की उदासीनता के चलते जमीनी हकीकत कुछ और बयां कर रही है।

न्यूज झरोखा

विजली के खम्भे पर पेड़ गिरने से विजली आपूर्ति ठप

सिरसा। मेजा क्षेत्र ब्लाक उरूवा ग्रामपंचायत बरी में तेज बारिश में एक हरा नीम का पेड़ विजली के खम्भे पर गिरने से विजली सप्लाई ठप हो गया। क्षेत्र में हो रही लगातार वर्षा के कारण से जमीन नर्म हो गई हैं। जो पेड़ की पकड़ को कमजोर कर दिया और बिना किसी हवा आधी के ही पेड़ विजली के खम्भे पर गिर गया। पेड़ गिरने की वजह से एक सीमेंट विधुत पोल टूटकर गिर गया। जिससे उसमे लगा सप्लाई तार टूटकर जमीन पर बिखर गया। हालांकि कोई अप्रिय घटना नही घटित हुई। खम्भे में लगे हुए कनेक्शन धारकों के केविल बीच मे टूटकर गिर गया। गांव बरी में जिस रास्ते पर हरा नीम का पेड़ विजली के खम्भा पर गिरा है गांव का सबसे ज्यादा चालू रोड हैं और साथ ही साथ घनी बस्ती भी हैं। जिससे ग्रामवासियों को आने जाने में दिक्कतो का सामना भी करना पड़ सकता हैं। गांव वालों का कहना है कि जिस समय ये घटना घटित हुई उस वक्त विजली सप्लाई नहीं था। नहीं तो बहुत बड़ी घटना घट सकती थी। इस घटना से तुरंत विजली पावर हाउस पर सम्पर्क करके घटना की जानकारी दिया गया। मौके पर एक लाइन मैन भेज कर बिजली आपूर्ति को रोक दिया गया।

एसडीएम ने किया विपणन केंद्र का भौतिक सत्यापन

शंकरगढ़। उपजिलाधिकारी बारा शुभम यादव ने बुधवार को दूसरे पहर विपणन केंद्र शंकरगढ़ का औचक निरीक्षण किया। जिसमें उपलब्ध स्टॉक और रजिस्टर में अंकित आंकड़े सही पाए गए। विपणन केंद्र प्रभारी सत्येंद्र सिंह सरोज ने बताया कि विपणन केंद्र शंकरगढ़ से क्षेत्र की 76 ग्राम सभाओं और टाउन एरिया की दुकानों को नियमित रूप से सस्ते गल्ले की सप्लाई की जाती रही है। आज उपजिलाधिकारी बारा ने इस विपणन केंद्र का औचक निरीक्षण किया। औचक निरीक्षण के दौरान एसडीएम ने उपलब्ध स्टॉक का स्टॉक रजिस्टर से मिलान कराया, जो सही पाया गया। इस दौरान उपजिलाधिकारी ने स्टॉक में रखे गए गल्ले के बेहतर रखरखाव और साफ सफाई के लिए भी निर्देशित किया। एसडीएम ने यह भी कहा कि बरसात के इस सीजन में स्टाक को सीलन से बचाए रखने का पर्याप्त इंतजाम किया जाय। इस दौरान विपणन केंद्र प्रभारी सत्येंद्र सिंह सरोज समेत तमाम कर्मचारी उपस्थित रहे।

बृज मंगल सिंह कालेज रामपुर में एनसीसी भर्ती परीक्षा का हुआ आयोजन

करछना। बुधवार को क्षेत्र के रामपुर स्थित बृज मंगल सिंह इंटर कॉलेज में जूनियर एनसीसी कैडेट्स की भर्ती परीक्षा का आयोजन किया गया। विद्यालय के एनसीसी अधिकारी रमेश चंद्र तिवारी की देखरेख में बड़ी संख्या में बच्चों ने परीक्षा में प्रतिभाग किया। इस दौरान 16 यूपी बटालियन से आए हुए सूबेदार कप्तान सिंह एवं अन्य पीआई स्टाफ की मौजूदगी में 40 अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया। परीक्षा के दौरान फिजिकल, रिटर्न और इंटरव्यू जैसी कई परीक्षाओं के क्रम के उपरांत 17 प्रतिभागियों को चयनित किया गया। एनसीसी अधिकारी ने कहा कि राष्ट्र के विकास और देशसेवा की भावना को लेकर एनसीसी कैडेटों की अपनी एक अहम भूमिका है। शैक्षिक जीवन से ही ऐसी भावनाओं को जागृत कर स्वयं और समाज में सेवा के प्रति समर्पित होने वाले अभियान से जुड़कर सभी कैडेट सेवा सहयोग की भावना के प्रतीक बन जाते हैं।उन्होंने परीक्षा सकुशल संपन्न होने पर बटालियन से आए लोगों का आभार व्यक्त किया।

भाजपाइयों ने कांवरियों की सेवा के लिए लगाया कैंप

प्रतापपुर। प्रयागराज से गंगाजल लेकर विभिन्न सुप्रसिद्ध मंदिरों में जलाभिषेक करने जा रहे कांवरियों की सेवा हेतु सांवडीह में भाजपा के कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों ने कैंप लगाकर पूरे मनोभाव से कांवरियों की सेवा किया। भारतीय जनता पार्टी के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अमरनाथ यादव के नेतृत्व में कांवरियों को फल, दूध, बिस्कुट, पानी वितरित किया गया। समाजसेवी एवं भाजपा के युवा नेता राज सोनी द्वारा कांवरियों का पैर भी धोकर सेवा किया गया। इस अवसर पर भाजपा के जिला मंत्री गंगापार दिलीप यादव, चंचल पांडेय, विकास मिश्रा सिंगर, समरजीत मौर्या सहित तमाम लोग सेवाभाव से मौजूद रहे।

कार की टक्कर से सवारी भरी अप्पे पलटा आधा दर्जन घायल

घूरपुर। घूरपुर में सवारी भरकर शहर जा रही अप्पे कार की टक्कर से हाईवे पर पलट गया। जिसमे सवार आधा दर्जन यात्री घायल हो गए। मौके पर पुलिस पहुंचकर घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया। बुधवार की दोपहर जारी से अप्पे में सवारी भरकर शहर जा रही थी जैसे ही घूरपुर थाना के सामने हाईवे पर पहुंची की सड़क पार कर रही कार की टक्कर लग जाने से बीच सड़क अप्पे पलट गया। जिसमे सवार यात्री घायल हो दर्द से चीख पुकार करने लगे। मौके से पुलिस पहुंच घायल डंगर 50, सोनू 10, संजय 8, सजेंद्र 28, निवासीगण मेजा मुकुरु 32 भिचकुरी मेजा, शाहिद 26, मैदा कौंधियारा को अप्पे से निकाल इलाज के लिए जसरा स्थित सीएचसी में भर्ती कराया। और दुघर्टना करने वाली कार व अप्पे को अपने कब्जे में ले लिया।

साप्ताहिक शिव महापुराण कथा का आयोजन

जंघई। सावन माह के पवित्र मास में सावन महाशिवरात्रि से साप्ताहिक शिव महापुराण कथा का आयोजन पंचमूर्ति शिवालय झारी बरना ग्राम में आयोजित हो रही है। समाजसेवी एवं कथा के आयोजक सुनील सिंह ने लोगों से कथा में पहुंचने की अपील किया है।

खबर संक्षेप

पीसीएस 2022 प्री का रिजल्ट घोषित, 5954 अभ्यर्थी सफल

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग ने राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा प्रारंभिक पीसीएस प्री परीक्षा 2022 का परिणाम जारी कर दिया है। पीसीएस प्री 2022 परीक्षा में 5964 अभ्यर्थी सफल घोषित किए गए हैं। प्रारंभिक परीक्षा के लिए कुल 602974 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था। परीक्षा के तहत कुल 384 पदों पर भर्ती होनी है।अभ्यर्थियों के प्राप्तांक और कटऑफ आदि की सूचना अंतिम परिणाम घोषित होने के बाद आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध कराए जाएंगे। आयोग ने स्पष्ट कर दिया है कि इस संबंध में जनसूचना अधिकार अधिनियम 2005 के अंतर्गत पृथक से कोई भी सूचना का आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा।

जनप्रतिनिधि गणों की उपस्थिति में हुआ बिजली महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बिजली महोत्सव एवं ऊर्जा दिवस के अवसर पर बुधवार को युनाइटेड कालेज आफ इंजीनियरिंग नैनी में बिजली महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बिजली महोत्सव का शुभारम्भ महापौर श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नंदी, विधायक फूलपुर प्रवीण पटेल, विधायक शहर उत्तरी हर्षवर्धन वाजपेयी, विधायक बारा वाचस्पति, विधायक फाफामऊ गुरू प्रसाद मौर्य, जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री के द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। स्वागत उद्बोधन में विनोद कुमार, मुख्य अभियन्ता (वितरण) प्रयागराज क्षेत्र, प्रयागराज एवं अमलेन्दु त्रिपाठी, जिला नोडल अधिकारी, प्रयागराज ने बिजली क्षेत्र की प्रमुख उपलब्धियों का वर्णन किया और भारत सरकार एवं राज्य सरकार के परस्पर सहयोग से भविष्य में बिजली क्षेत्र में आने वाले बदलाओं पर प्रकाश डाला।आजादी के अमृत महोत्सपव के भाग के रूप में भारत की आजादी के 75 वर्षों का उत्सव मनाने के लिए पूवार्चल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, प्रयागराज क्षेत्र, प्रयागराज के सहयोग से विद्युत मंत्रालय ने उ0प्र0 के प्रयागराज जिले में एक बिजली महोत्साव का आयोजन किया। बिजली महोत्सव का आयोजन राज्य और केंद्र सरकारों के बीच एक संयुक्त मंच के रूप में किया गया, जिसमें बिजली के क्षेत्र की प्रमुख उपलब्धियों को उजागर किया गया। 169 गीगावाट उत्पादन क्षमता जोड़ी गई, हमारे देश को बिजली की कमी वाले देश से अधिशेष बिजली वाले देश में बदलना। 1.6 लाख सीकेएम ट्रांसमिशन लाइनें जोड़ी गईं, पूरे देश को एक ही फ्रिक्वेंसी के ग्रिड से जोड़ा गया- दुनिया में सबसे बड़े एकीकृत ग्रिड वाले देश के रूप में उभरा। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि महापौर श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नन्दी ने भारत सरकार एवं राज्य सरकार की बिजली से सम्बन्धित योजनाओं से जनसामान्य को हो रहे लाभ के बारे मे विस्तृत जानकारी दी। उन्होने बताया कि बिजली क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षो में अभूतपूर्व सुधार देखा गया है। आगंतुकों और मेहमानों के साथ जुडने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, नुक्कड नाटक और बिजली के क्षेत्र पर लघु फिल्मों की स्क्रीनिंग का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान सच होते सपने विषय पर नुक्कड़ नाटक एवं ढेड़िया नृत्य का मंचन किया गया। आयोजन में लाभार्थियों को गणमान्य अतिथियों द्वारा प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया।इस अवसर पर जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री ने अपने सम्बोधन में बिजली क्षेत्र की उपलब्धियों हेतु बिजली विभाग के प्रयासों की सराहना की एवं सरकार की बिजली क्षेत्र में भविष्य की कार्य योजनाओं पर भी प्रकाश डाला। जिलाधिकारी ने कहा कि विकास सामान्य स्तर से ऊंचा है, सबको आगे बढ़ने का अवसर देता है। बिजली विभाग में काफी वृद्धि हुई है। बिजली विभाग में हर घर बिजली देने का कार्य किया है। जिलाधिकारी ने सभी अतिथियों एवं अन्य आगंतुकों का कार्यक्रम में भाग लेने के लिए धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रंजना त्रिपाठी के द्वारा किया गया।

प्राइवेट कम्पनी का प्रबंधक लाखों का सामान लेकर फरार मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा कस्बा में कई लोग मिल कर एक प्राइवेट कंपनी चलाते थे। जिसका प्रबंधक ढाई लाख का समान वाहन पर लाद कर फरार हो गया। पुलिस ने प्रबंधक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा कस्बा के स्टेशन रोड पर राकेश कुमार साहू ,राम कैलाश, शाकिर अली मिलकर (ईस्टोर इंडिया ग्रोसरी)नामक एक कम्पनी चलाते थे। आरोप है कि जिसके प्रबंधक मुनीम अहमद इदरीशी थे। बताया गया है कि उक्त कंपनी का प्रबंधक एक दिन रात में वाहन लेकर आया और कम्प्यूटर आदि तोड कर कीमती सामानों और चौदह सौ रुपया नगदी लेकर वाहन से फरार हो गया। जब लोगो को जानकारी हुई तो वह स्टेशन रोड पहुंच कर देखे और पुलिस को सूचना दिए। पुलिस ने कथित प्रबंधक मुनीर अहमद इदरीशी पुत्र रज्जाक अहमद अमेठी रोड चिलबिला प्रतापगढ़ के खिलाफ चोरी का मुकदमा दर्ज करा दिया है।

जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक सम्पन्न

स्वास्थ्य सम्बंधी योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता स्वीकार्य नहीं

अखंड भारत संदेश

जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक को सम्बोधित करते जिलाधिकारी

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में बुधवार को संगम सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता स्वीकार्य नहीं है। स्वास्थ्य से सम्बंधित जो योजनाएं संचालित है, उनका अच्छी तरह से क्रियान्वयन करते हुए लोगो को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने अस्पतालों में साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने के साथ-साथ नियमित अंतराल पर मेडिकल स्टॉफ का प्रशिक्षण भी कराते रहने का निर्देश दिए है। उन्होंने अस्पतालों में सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित बनाये रखने के भी निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने जेएसवाई, सुरक्षित मातृत्व अभियान योजना, प्रधानमंत्री मातृ वन्दना योजना, परिवार कल्याण कार्यक्रम, नियमित टीकाकरण, आरसीएच पोर्टल पर पंजीकरण एवं अपडेशन के कार्यों की समीक्षा की। जेएसवाई की समीक्षा करते हुए मेजा, बहरिया, सैदाबाद, बहादुरपुर, सोरांव, हण्डिया की प्रगति खराब पाये जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए उन्होंने सम्बंधित प्रभारी चिक्तिसाधिकारी को लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति लाए जाने का निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने गर्भवती महिलाओं का शत-प्रतिशत रजिस्टेज्शन कराये जाने का निर्देश दिया है। परिवार नियोजन कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए उन्होंने कैम्प लगाकर लक्ष्य के सापेक्ष नसबंदी सुनिश्चित किए जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने बच्चों का शत-प्रतिशत पूर्ण टीकाकरण कराये जाने का भी निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने वीसीजी, डिप्थेरिया, मीजल्स रूबेला का भी शत-प्रतिशत टीकाकरण कराये जाने के लिए कहा है। संस्थागत प्रसव की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने शत-प्रतिशत संस्थागत प्रसव सुनिश्चित कराये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) के तहत स्वास्थ्य टीम को स्कूलों एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों में बच्चों का शत-प्रतिशत स्वास्थ्य परीक्षण कराये जाने का निर्देश दिया है। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी नानक सरन सहित अपर मुख्य चिकित्साधिकारीगण तथा प्रभारी चिकित्साधिकारीगण उपस्थित रहे।

ऑटो बाइक में हुई टक्कर, तीन घायल

झूंसी। स्थानीय थाना क्षेत्र के सहसों अंदावा मार्ग पर ऑटो बाइक में हुई भिड़ंत में बुधवार को बाइक सवार तीन लोग घायल हो गए जिसमें एक महिला भी शामिल है बताया जाता है घायल जौनपुर से प्रयागराज इलाज के लिए जा रहे थे वही स्थानीय लोगों ने ऑटो सहित चालक को पकड़कर पुलिस को सौंप दिया।जौनपुर मुंगरा बादशाहपुर के हेमापुर निवासी राम सागर विश्वकर्मा 50 अपनी पत्नी शैल कुमारी को बाइक से इलाज के लिए प्रयागराज लेकर आ रहा था साथ में उसका 24 वर्षीय भांजा प्रदीप भी था वह अंदावा सहसो मार्ग पर रहीमापुर गांव के सामने पहुचे थे। तभी पीछे से आती ऑटो अचानक मुड़ गई जिसमें राम सागर बाइक लेकर अनियत्रित हो गया और ऑटो से टकरा गया। बाइक सवार तीनो सड़क पर जा गिरे आस-पास मौजूद लोग भाग रहे ऑटो चालक समेत पकड़ लिया। सूचना पर पहुंची 108 एंबुलेंस के ईएमटी संतोष भारतीय चालक इंद्रजीत तीनों घायलों को एसआरएन अस्पताल ले गए।

द हंस फाउंडेशन के चयनित सभी स्वयंसेवी हेल्थ वॉलिंटियर को दिया गया प्रशिक्षण

अखंड भारत संदेश

करछना। विकास खंड परिसर में राष्ट्रीयकृत चैरिटेबल संस्था द हंस फाउंडेशन द्वारा चयनित स्वयंसेवी हेल्थ वॉलिंटियर का दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया।प्रशिक्षण में द हंस फाउंडेशन द्वारा मेजा एवं करछना विकासखंड की 40 ग्राम पंचायतों में दी जा रही निशुल्क स्वास्थ्य सेवाओं के विषय में विस्तार पूर्वक बताया गया , चूंकि यह संस्था वर्ष 2009 से प्रदेश में कार्यरत है तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में अति पिछड़े ग्रामीण अंचलों को स्वास्थ्य सेवाओं से पोषित कर रही है, उक्त आशय से कुल 40 वॉलिंटियर्स का चयन कर उनको प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण प्रोजेक्ट मैनेजर द्वारा उनकी भूमिका, उद्देश्य और जो हंस फाउंडेशन के विषय में विस्तार से बताया गया।द हंस फाउंडेशन करछना के मोबाइल मेडिकल टीम के मेडिकल ऑफिसर डॉक्टर जितेंद्र द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं ,लैबोरेट्री ,जांच तथा दवाओं के विषय में वालंटियर को समझाया गया। प्रशिक्षण में प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर अभय प्रकाश द्वारा संस्था के विषय में विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई अमित द्विवेदी द्वारा वॉलिंटियर्स की प्रोफाइलिंग की गई दीक्षा सिंह एवं अजय सिंह द्वारा द हंस फाउंडेशन की फिल्म दिखा कर और स्वास्थ्य विभाग की पंचायत स्तर की योजनाओं तथा सेवाओं पर जानकारी दी गई ।प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर अमित कुमार ने यूएचएनडी, एनीमिया दस्त एवं मौसमी बीमारियों तथा उनके बचाव के उपाय बताए गए। प्रशिक्षण में प्रतीक्षा गुप्ता तथा माया देवी एवं स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र करछना की महत्वपूर्ण भूमिका रही।प्रशिक्षु शुशीला देवी , चंदा देवी , रेखा देवी , अंजली पटेल, सुमन आदि उपस्थित रहे।

मेजा में आकाशीय बिजली से किशोरी की मौत

मेजा रोड। मेजा इलाके में आकाशीय बिजली गिरने से बुधवार को एक और मौत हो गई। शाम 6:30 बजे हुई घटना की जानकारी के बाद लेखपाल की टीम पहुंची और घटना से क्षेत्रीय पुलिस को अवगत कराया। मेजा के सिंहपुर खुर्द परगना खैरागढ़ में शाम को बारिश के दौरान आकाशीय बिजली गिरी। इसकी चपेट में आकर 14 वर्षीय पूनम यादव की मौत हो गई। उसके पिता सुरेश यादव व परिवार के अन्य लोग मौके पर पहुंचे तो रोना पिटना मच गया। गांव के लोगों ने प्रशासन को इसकी जानकारी दी तो क्षेत्रीय लेखपाल रमाशंकर मौके पर पहुंचे। खीरी थाने के थानाध्यक्ष को घटना की जानकारी दी गई। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। एडीएम वित्त एवं राजस्व एमपी सिंह ने बताया कि मेजा क्षे में एक मौत आकाशीय बिजली से हो गई है।

भारतीय पत्रकार सभा के उपाध्यक्ष बने राजेश शुक्ला, संगठन के लोगों में हर्ष

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। भारतीय पत्रकार सभा की एक बैठक केन्द्रीय कार्यालय मे सभा के संरक्षक गजेन्द्र प्रताप सिंह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। बैठक मे सम्पादक राजेश भगवत शुक्ला को सभा का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया। राजेश शुक्ला विभिन्न मीडिया संस्थानों के माध्यम से पत्रकारिता की शुरूआत कर वर्तमान मे एक हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक के पद पर रहते हुए जनहित मे दबे, शोषित, पीड़ित, गरीब, मजनूमो की आवाज बनकर समाज की सेवा कर रहे है। उनके मनोनयन पर गजेन्द्र प्रताप सिंह, दिवाकर सिंह, अरविन्द सिंह बिसेन, राजेश सिंह, राजीव गहरवार, मनोज शुक्ला, रवि गुप्ता, संदीप मिश्रा, अरविन्द गुप्ता, वीरेन्द्र यादव, एस पी सिंह, अजय प्रताप सिंह,फते मोहम्मद, रोहित सिंह, नलिनी सिंह आदि ने हर्ष व्यक्त करते हुए भारतीय पत्रकार सभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष को दी बधाई।

घरेलू कलह से नाराज युवक ने फांसी लगा की आत्म हत्या

घूरपुर। थाना क्षेत्र के जमोली गांव में एक युवक ने मंगलवार की देर रात गांव के बाहर स्थित एक पेड़ की डाल में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घूरपुर के जमोली गांव निवासी ओम प्रकाश पांडेय (34) से उसके घर वालो से रुपयों के लेन देन को लेकर मंगलवार के दिन विवाद हो गया । घर वालो से विवाद से नाराज ओम प्रकाश गांव के बाहर एक पेड़ में साड़ी का फंदा बनाकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। घटना की जानकारी परिजनों को हुई तो कोहराम मच गया। गमगीन ओमप्रकाश की पत्नी व दो बच्चो का रो रोकर बुरा हाल है।

चोरी कर के भाग रहा अभियुक्त जनता के सहयोग से गिरफ्तार

मेजा रोड। पुलिस अधीक्षक यमुनापार सौरभ दीक्षित के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक / क्षेत्राधिकारी मेजा अमिता सिंह के पर्यवेक्षण में थानाध्यक्ष मेजा धीरेंद्र सिंह के कुशल नेतृत्व में उप निरीक्षक राम भवन वर्मा उनकी पुलिस टीम द्वारा ग्राम सोराव में शिवाकांत शुक्ला के मकान में चोरी कर के भाग रहे अभियुक्त जितेंद्र कुमार पुत्र भोला प्रसाद निवासी धवलपुर थाना न्यू बाईपास को ग्राम वासियों के मदद से एक मोबाइल फोन व पर्स 100 रुपए के साथ गिरफ्तार कर लिया।

ज्वाला देवी गंगापुरी में संपन्न हुआ छात्र सांसद शपथ समारोह

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रो0 राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) शिक्षा प्रसार समिति द्वारा संचालित ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज गंगापुरी के मीडिया प्रभारी दीपक कुमार मिश्र की सूचनानुसार बुधवार को छात्र संसद शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीपार्चन, पुष्पार्चन एवं सरस्वती वन्दना के साथ हुआ तत्पश्चात विद्यालय के प्रधानाचार्य युगल किशोर द्वारा आये हुए अतिथियों का परिचय एवं सम्मान कराया गया। कार्यक्रम की प्रस्ताविकी विद्यालय के छात्र संसद के उपाध्यक्ष जनार्दन प्रसाद दुबे द्वारा रखी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रोफेसर ऋषिकांत पाण्डेय (प्रोफेसर दर्शन शास्त्र ,केंद्रीय विश्वविद्यालय इलाहाबाद) ,कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी (प्रोफेसर मानविकी शाखा उ. प्र. राजर्षी टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज)रहे।कार्यक्रम के प्रारम्भ में मुख्य अतिथि प्रो. ऋषिकांत पाण्डेय जी द्वारा छात्र संसद एवं कन्या भारती के प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, सेनापति एवं उपसेनापति को शपथ दिलाया गया, तदनन्तर अन्य विभागों के मंत्रियो को कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. सत्यपाल तिवारी जी द्वारा विधि पूर्वक शपथ ग्रहण कराया गया।अनुराग सिंह (प्रधानमंत्री छात्र संसद), अदिति मिश्रा (प्रधानमंत्री कन्या भारती) एवं प्रांजल त्रिपाठी (अध्यक्ष शिशु भारती) मानवेन्द्र सिंह (उपाध्यक्ष शिशु भारती)चुने गये। वहीं जय गुप्ता एवं कौशिकी श्रीवास्तव उप-प्रधानमंत्री चुने गये दुर्गेश शुक्ला व इंद्राणी सिंह को सेनापति चुना गया। विद्यालय में छात्रसंसद की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि विद्या भारती के विद्यालयों में छात्र संसद का गठन किया जाना छात्रों के सवार्गीण विकास की परिकल्पना का एक अभिन्न अंग है। हम सब की यह सोच रहती है कि हमारे छात्र शैक्षिक विकास के साथ-साथ राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं क्रियात्मक रूप से इतने योग्य बने कि विद्यालय से निकलने के बाद वे देश व समाज को नई दिशा दे सकें।अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में बोलते हुए प्रो. सतपाल ने कहा कि छात्र संसद के माध्यम से विद्यार्थी में उत्तरदायित्व स्वीकार करने की क्षमता आती है तथा वह विद्यालय के अनुशासन, बौद्धिक क्रियाकलाप व खेलकूद की गतिविधियों में सहायक सिद्ध होता है जिससे छात्र का स्वयं विकास तो होता ही है विद्यालय की प्रत्येक गतिविधियां छात्र के माध्यम से ही सुचारू रूप से संचालित होती है, आज विद्या भारती द्वारा गठित छात्र संसद के इस अभिनव स्वरूप को देखकर मै यह निश्चित रूप से यह कह सकता हूँ कि हमारे ये नौनिहाल विद्यालय के साथ-साथ समूचें देश की भी बागडोर सभालनें में सक्षम हैं। विद्यालय के प्रबंधक डॉ आनंद कुमार श्रीवास्तव व अध्यक्ष शरद गुप्त ने कार्यक्रम की महत्ता बताते हुये छात्रों को यशष्वी होने का आशीर्वचन प्रदान किया।बहन सोनम विश्वकर्मा ने एकल गीत प्रस्तुत किया तथा आभार ज्ञापन विद्यालय की आचार्या श्रीमती बेबिका राय द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के आचार्य सरोज सिंह ने किया तथा कार्यक्रम का समापन वंदे मातरम के साथ हुआ।

झूंसी थाने पर हुई पीस कमेटी की बैठक में उपस्थित लोग

शांति व्यवस्था कायम रखने की अपील

झूंसी। थाने पर बुधवार को पीस कमेटी की बैठक हुई। जिसमे मोहर्रम व चल रही कावड़ यात्रा को शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न कराने पर चर्चा की गई। सीओ दारागंज आस्था जयसवाल ने गड़बड़ी करने वाले अराजकतत्वों के खिलाफ कठोर कार्यवाही की चेतावनी दी देते हुए शान्ति व्यवस्था बनाये रखने मे संभ्रांत लोगों का सहयोग मांगा। इंस्पेक्टर झूंसी वैभव सिंह ने कहा कोई नई परंपरा नहीं शुरू होगी। नियम व कानून तोड़ने वालों को चिन्हित करके कार्रवाई की जाएगी। शांति और भाईचारा के साथ त्योहार मनाएं। जिससे समाज में सांप्रदायिक सौहार्द कायम रहे। शांति व्यवस्था बनाए रखना सभी का कर्तव्य है। बैठक में छोटे प्रधान, महेंद्र कुशवाहा, अयाज अंसारी, गुड्डू मिया, अनवर प्रधान, अब्बू सहमा, गुड्डू खान, बलदेव, मो. अयाज आदि मौजूद रहे।

बढ़ा उत्साह : धान की रोपाई के काम में आई तेजी

अखंड भारत संदेश

जंघई। मानसून की एक सप्ताह पूर्व शुरू हुई बारिश से जहां खेत में पानी लग गए वहीं सड़कों पर भी जगह-जगह पानी लग गए और कीचड़ भी फैला नजर आ रहा। बारिश से लोगों को उमस भरी गर्मी से राहत मिल गई है। तापमान में भी गिरावट दर्ज की गई धान की रोपाई की तैयारी के लिए किसानों ने खेतों में जी तोड़ काम शुरू कर दिया है महिलाएं कजरी गाकर धान की रोपाई कर रही हैं। सप्ताह भर से रुक रुक कर हो रही बारिश से किसानों के चेहरे खिल उठे हैं इसके साथ ही धान की रोपाई का काम भी तेज हो गया है यह बारिश फसलों के लिए संजीवनी बूटी से कम नहीं है। क्षेत्र में हुई बारिश से लोगों को उमस भरी गर्मी से राहत महसूस हुई तो वहीं किसानों के चेहरों पर भी रौनक आ गई। बारिश न होने के कारण खेतों में दरारें पड़ने लगी थी। जिससे किसान धान की रोपाई को लेकर मायूस हो गए थे। किसान जैसे-तैसे निजी संसाधनों से अपनी फसल को बचाने में जुटे हुए थे हालांकि छोटे किसान फसल की सिंचाई व रोपाई के लिए आसमान की ओर टकटकी लगाए थे। दरअसल 15 जून से धान की रोपाई का काम शुरू हो जाता है लेकिन इस बार बारिश देरी से होने के कारण धान की रोपाई भी देरी हो रही थी। कुछ किसानों की नर्सरी सूखने की कगार पर थी। जिसे बचाने के लिए किसानों ने निजी संसाधनों से उसे बचाने का प्रयास किया।

बेसहारा मवेशी बढ़ा रहे संकट फसलों को पहुंचा रहे नुकसान

बारा। बारा तहसील क्षेत्र में बेसहारा मवेशियों की संख्या बढ़ती जा रही है ऐसे में यह किसानों को नुकसान पहुंचाने के साथ ही सड़क दुर्घटनाओं का भी बड़ा कारण बन रहे हैं बारा तहसील क्षेत्र का हाल यह है कि यहां गोवंश को पालने के लिए अस्थाई गौशाला ए बनाई गई थी इसके बाद भी हजारों की संख्या में निराश्रित मवेशी सड़क पर घूम रहे हैं। किसान बाबा सिंह ने बताया कि शाम होते ही सैकड़ों की तादाद में मवेशी सड़क पर आ जाते हैं इसके बाद आने जाने वाले लोगों को परेशानी उठानी पड़ती है इसके अलावा उन्होंने बताया कि यह निराश्रित मवेशी फसलों को भी हानि पहुंचा रहे हैं इतना ही नहीं शाम को तहसील मुख्यालय के आसपास भी निराश्रित गोवंश का डेरा लगा रहता है वही लोहगरा बाजार निवासी मनोज सिंह बताते हैं की मेन रोड पर गोवंश बैठ जाते हैं और आए दिन सड़क दुर्घटना होती रहती है सड़क से गुजरने हर वाहन को बहुत सोच समझ कर चलना होता है अगर बेसहारा मवेशियों की व्यवस्था नहीं की गई तो किसानों को की क्षति के साथ-साथ सड़क दुर्घटना का प्रमुख कारण बनते जा रहे हैं अगर समय रहते इनकी व्यवस्था नहीं की गई तो किसानों के साथ-साथ सड़क पर गुजरने वाले राहगीरों को भी नुकसान पहुंचता रहेगा एवं दुर्घटनाएं होती रहेंगी।

युवती से व्हाट्सएप चैटिंग करने वाले युवक पर मुकदमा

करछना। थाना क्षेत्र के तरौल गांव निवासी एक युवती के मोबाइल फोन पर युवक द्वारा अश्लील हरकत व व्हाट्सएप चैटिंग करने के खिलाफ पर युवती ने युवक के खिलाफ करछना थाने में धारा 354 ,385, 504, 506 ,341, 67 के तहत मुकदमा पंजीकृत कराया, थाना क्षेत्र के तरौल गांव निवासी साधना (काल्पनिक नाम) ने थाना क्षेत्र के लटकहा बबुरा गांव के ध्रुवेश कुमार यादव उर्फ रवि तेजा पुत्र कृष्णा कांत यादव के खिलाफ केस दर्ज कराते हुए आरोपित किया है कि युवक उसके मोबाइल पर गलत इरादे से चैटिंग करता था तथा प्रार्थिनी ने आरोप लगाया है कि उसकी शादी कहीं तय हो गई है तथा उसके ससुराली जनों के मोबाइल पर युवती की डीपी लगा कर शादी न करने का दबाव बना रहा है तथा वही युवती को फोन पर धमका रहा है कि मुझसे शादी कर लो नहीं तो तुम्हें जबरन उठा ले जाएंगे जिस पर युवती के पिता(श्री लाल काल्पनिक नाम) ने थाने जाकर उक्त युवक के खिलाफ केस दर्ज कराया, मामले में करछना पुलिस नामजद आरोपी युवक को गिरफ्तार करने में लगी हुई है ।

घर की करी टूटने से अन्दर बैठी महिला घायल

सहसों। तेज बारिश के चलते कच्चे घर में सीलन पहुंच गया। जिससे घर की दीवार धसने से घर की करी टूट गई। घर में बैठी महिला के ऊपर करी गिरने से गंभीर रूप से घायल हो गई। घायल महिला को उपचार हेतु स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया जिसका इलाज चल रहा है। थरवई थाना क्षेत्र के भोपतपुर गांव निवासी गुलशन बानो पत्नी नासिर अली का गांव में कच्चा मकान है जिसमें तेज बारिश के चलते अत्यधिक सीलन होने के कारण कच्चा घर गिर गया। घर के अंदर रखा गृहस्ती का उपयोगी सामान के अतिरिक्त जरूरी सामान नष्ट हो गया तथा घर के अंदर बैठी नासिर अली की पत्नी गुलशन बानो के ऊपर घर की करी टूटकर गिरने से गंभीर रूप से घायल हो गई। घर गिरने की सूचना पाते ही आसपास के लोग मौके पर पहुंच गए और मलबा को हटाकर महिला गुलशन बानो को निकाला और आनन-फानन में पास के ही स्थानीय अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती कराया जहां पर घायल महिला का इलाज चल रहा है। घर गिरने से लगभग 15 हजार के गृहस्ती के सारे सामान नष्ट हो गए। भुक्तभोगी परिजन ने मकान गिरने की सूचना तहसील प्रशासन को दे दी है।

ईडी द्वारा सोनिया से पूछताछ करने पर कांग्रेसियों ने की नारेबाजी

कार्यालय पर कांग्रेसियों ने किया सत्याग्रह कार्यक्रम

सत्याग्रह कार्यक्रम में नारेबाजी करते कांग्रेसी।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मंहगाई व बेरोजगारी से आम जनमानस बुरी तरह तृप्त है। जहां एक ओर आम खाने-पीने की चीजों पर जी0एस0टी0 लगा देने से रोजमर्रा की चीजें मंहगी हो गयी, गरीबों की थाली से रोटी छीनने का काम सरकार कर रही है। वही नौजवानों को रोजगार व नौकरियां नही मिल पा रही है, बेरोजगार नौजवान नौकरियों की तलाश में इधर-उधर भटक रहा है।

उक्त बातें आज यहां जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय पर आयोजित सत्याग्रह कार्यक्रम के दौरान उपाध्यक्ष डॉ0 बी0के0 सिंह ने कहीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री सिंह ने कहा कि सरकार एजेन्सियों का दुरूपयोग कर विपक्ष के नेताओं का उत्पीड़न कर रही है। नेशनल हेराल्ड के जिस मामले को प्रवर्तन निदेशालय ने 2015 में बन्द कर दिया था, उसकी फाइल एक बार पुनः खोलकर ईडी कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी व राहुल गांधी से पूछताछ कर नाहक परेशान कर रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के लोग डरने वाले नही है एक दिन सच जनता के सामने जरूर आयेगा। इनके मंसूबे सफल नही होंगे। इस अवसर पर सदर वि0स0 के पूर्व प्रत्याशी डॉ0 नीरज त्रिपाठी ने कहा कि सरकार कांग्रेस नेताओं की छवि जनता के बीच खराब करने के उद्देश्य से एक फर्जी केस में ईडी की पूछताछ करके कांग्रेस नेताओं की छवि खराब करने की कोशिश कर रही है। बेरोजगारी व मंहगाई के मुद्दे को लेकर कांग्रेस सड़कों पर उतरेगी। संचालन नगर अध्यक्ष इरफान अली ने किया। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष वेदान्त तिवारी, कपिल द्विवेदी, रोहित शुक्ल, फतेह बहादुर सिंह, करूणा शंकर मिश्र, अशुतोष तिवारी, विजय शंकर तिवारी, मो0 इश्तियाक, श्याम शंकर तिवारी, मोनू मिश्रा, मो0 दिलशाद, राकेश मिश्रा, सलीम उल्ला, मो0 कासिम, सुमित तिवारी, कै0एस0के शर्मा, मकरन्द शुक्ला, महेन्द्र शुक्ल, डॉ0 प्रशान्त देव शुक्ल सहित अनेक कांग्रेसजन मौजूद रहे।

रेलवे स्टेशन का सिग्नल ध्वस्त, पंपिंग सेट से निकाला गया पानी

ट्रेनों के संचालन पर भारी पड़ रहा बरसात का पानी

जल निकासी की व्यवस्था करने में फेल रहा रेल प्रशासन

पंपिंग सेट से निकाला जा रहा रेल लाइन से पानी।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। स्थानीय रेलवे स्टेशन पर रेल लाइनों में जमा हो रहे बरसाती पानी को निकालने में फेल हो चुके रेल प्रशासन को पंपिग सेट का सहारा लेना पड़ा है। बुधवार को भी हुई बारिश में रेलवे लाइन डूब जाने से सिग्नल सिस्टम ध्वस्त रहा, जिससे प्लेटफार्म दो और तीन का संचालन बाधित रहा। ट्रेनों को कागज पर चलाया गया।

पिछले कुछ दिनों से हो रही बारिश का पानी यार्ड में जमा हो रहा है। जल भराव होने से रेल लाइन पानी में डूब जाती है। सिग्नल सिस्टम के बॉक्स भी पानी में डूब जाते है। जिससे सिग्नल काम करना बन्द कर दे रहा है। मंगलवार के बाद बुधवार को भी दोपहर में हुई तेज बारिश का पानी रेलवे लाइन में भर गया।

जिससे सिग्नल सिस्टम ध्वस्त हो गया। हालांकि पंपिंग सेट मंगाकर उसके सहारे पानी को निकालने का काम तेजी से किया। पता चला है कि जल भराव को रोकने के लिए अधिकारी दूसरा विकल्प खोज रहे हैं। इसके लिए पटरी के किनारे जिस स्थान पर नाली है। वहां पर गड्ढा खोदने की चर्चा है। ट्रैक पर जमा होने वाला पानी गड्ढे में जमा हो जायेगा।

डीपीआरओ पँहुचे केरावडीह, ग्रामीणों से की पूछताछ

केरावडीह गांव में पूछताछ करते डीपीआरओ।

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर की ग्राम पँचायत केरावडीह में बने शौचालय की देख रेख कर रही केयर टेकर सीता देवी को हटाने का मामला मण्डलायुक्त तक पहुँच गया जिसमें गाव के शिकायत कर्ता ने 26 जुलाई 2022 को ऑनलाइन मण्डलायुक्त से शिकायत किया कि केयर टेकर के प्रकरण के मामले में 25 जुलाई को जांच अधिकारी ने बिना कोई स्थलीय जांच के रिपोर्ट लगा दिया जब कि प्रार्थी द्वारा केयर टेकर का चयन का प्रस्ताव शिकायत के साथ उपलब्ध कराया गया जिसे डी सी एन आर एल एम की रिपोर्ट में अवगत कराया गया है कि केयर टेकर द्वारा ही सामुदायिक शौचालय पर कार्य किया जा रहा है। मण्डलायुक्त के आदेश पर बुधवार की सुबह जिला पंचायत राज अधिकारी रविशंकर द्विवेदी व उपायुक्त स्वतह रोजगार डॉ नागेंद्र नारायण मिश्र के अचानक केरावडीह गांव पहुंचे। जांच पड़ताल के दौरान विवादित शौचालय में सीता देवी केयर टेकर को हटाकर दूसरी केयर टेकर शिवकली की नियुक्ति को लेकर ग्राम प्रधान व प्रधान प्रतिनिधि व ग्रामीणों से पूछताछ किया। इस दौरान गांव में हड़कंप मचा रहा। इसके साथ ही डीपीआरओ ने ब्रह्मौली गाव में अमृत सरोवर के साथ सामुदायिक शौचालय व स्कूल का निरीक्षण भी किया।

चार आरोपियों के खिलाफ मारपीट व धमकी का केस

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने चार आरोपियो के खिलाफ रंजिशन मारपीट को लेकर पुलिस ने मारपीट व गालीगलौज तथा जानलेवा धमकी का केस दर्ज किया है। कोतवाली के केशवपुर निवासी शिखा देवी पत्नी फूलचन्द्र ने दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती सोलह जून को रंजिशन विपक्षियो ने उसे लाठी डंडे से मारापीटा। विपक्षी गांव के हरकेश पुत्र रामपियारे तथा हरकेश की पत्नी प्रभावती व पुत्री पूनम तथा नौढ़िया के अर्जुन पुत्र बहादुर ने पीडिता को दरवाजे पर आकर गाली देने लगे। विरोध करने पर आरोपियो ने पीडिता को मारपीट कर चुटहिल कर दिया। पीडिता ने घटना को लेकर पुलिस को तहरीर दी। किन्तु जांच के नाम पर पुलिस ने केस नही दर्ज किया । उच्चाधिकारियों से शिकायत पर पुलिस ने मंगलवार को आरोपियो के खिलाफ केस दर्ज किया है।

पुरानी सब्जी मण्डी में अवैध अतिक्रमण हटाने गई पुलिस से नोंक-झोंक

नगर पालिका के बुल्डोजर के सामने लेटे व्यापारी, बैरंग लौटा बुल्डोजर

पुरानी सब्जी मण्डी में पुलिस से नोंक-झोंक करते व्यापारीगण।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शहर की पुरानी सब्जी मण्डी को खाली कराने के लिये भारी भरकम पुलिस से व्यापारियों, नेताओं, अधिवक्ताओं ने जमकर हंगामा किया, जिसके चलते ढाई घंटे तक चले हंगामे के बाद नगर पालिका का बुल्डोजर खाली हाथ वापस लौट आया।

बताया जाता है कि नगर पालिका आज दोपहर में लगभग बारह बजे बुल्डोजर, जेसीबी लेकर एसडीएम, सीओ व भारी भरकम पुलिस फोर्स के साथ पुरानी सब्जी मण्डी पहुंची थी जहां व्यापारियों के अलावा अधिवक्ताओं, कांग्रेस के नीरज तिवारी व उनके समर्थक तथा सपा के इरषाद सिद्दीकी व उनके समर्थक मौजूद थे, जिनके प्रबल विरोध के चलते नगर पालिका व पुलिस प्रशासन को खाली हाथ वापस लौटना पड़ा। विरोध इस कदर था कि लोग बुल्डोजर के सामने लेट गये थे तथा नगर पालिका के विरुद्ध नारे लगा रहे थे। बता दें कि नगर पालिका पुरानी सब्जी मण्डी खाली कराकर अपनी जमीन में मल्टी स्टोरी मार्केट बनाने का प्रस्ताव किया है। इसी के तहत कई बार नगर पालिका ने सब्जी मण्डी में बचे स्थाई निर्माण को तोड़ने का प्रयास किया लेकिन विरोधियों के विरोध के चलते नगर पालिका अपनी ही जमीन को खाली नहीं करा पा रही है। बताया जाता है कि नगर पालिका वहां अवैध निर्माण को खाली कराकर एक अच्छी मल्टी स्टोरी मार्केट बनाने के प्रयास में है। नगर पालिका ने सर्वसम्मति से इसका प्रस्ताव भी लिया है। अभी तक इस पुरानी सब्जी मण्डी से कई टन कूड़ा नगर पालिका हटा भी चुकी है। अब बचे हुए जीर्ण-शीर्ण अवैध निर्माण को हटाकर वहां मार्केट बनाने के प्रयास में नगर पालिका लगी हुई है। इस बारे में नगर पालिका के अधिषाषी अधिकारी मुदित सिंह ने बताया कि नगर पालिका अपनी जमीन में निर्माण कराने का प्रयास कर रही है। इसका विरोध अवैधानिक है। उन्होंने कहा कि नई मल्टी स्टोरी मार्केट में भी व्यापारियों को लाभ होगा।

गरीब छात्रों को मिली किताबों की सौगात

माध्यमिक विद्यालय के जरूरत मंद छात्रों की मदद को आगे आया बच्चा बैंक फ्रेंड्स ग्रुप

स्टडी सेंटर पर पहुंचे छात्रों को फ्री में दी गई पुस्तकें

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। गरीब और जरूरतमंद छात्रों को बच्चा बैंक फ्रेंड्स ग्रुप, बीबीएफजी की तरफ से फ्री में किताबों का वितरण किया गया। बुधवार की भंगवा गांव में समूह द्वारा संचालित फ्री स्टडी सेंटर पर हाई स्कूल और इंटर के छात्रों को किताबों की सौगात देकर बच्चा बैंक ने उनकी शिक्षा की मंजिल को और आसान कर दिया है। अनाथ और जरूरतमंद छात्रों की शिक्षा में मददगार बनकर उनके सपनों को साकार करने की कोशिश में तन मन और धन से जुटा बच्चा बैंक फ्रेंड्स ग्रुप और उसके सहयोगियों ने माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत मेधावी छात्र और छात्राएं जिनके पास पैसे नहीं थे उनको किताबें खरीदकर दी। जिसमें गणित, विज्ञान, अंग्रेजी के साथ अन्य विषय की किताबें शामिल थी। स्टडी सेंटर के टीचर शनि ने बताया कि गरीब और जरूरतमंद छात्रों की कॉपी, किताब और पेन इत्यादि से मदद की जा रही है। किताबे पाने के बाद साहिल, साहिबा, निखिल, नैंसी, अंजू, हिमांशु, शुभम, नीतेश, किशन, अंशू पटेल समेत सभी छात्रों के चेहरे खिल उठे। छात्र तिलक और जीजीआईसी में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

झांसा देकर करता रहा दुराचार, पीड़ित महिला ने लगाई थाने में गुहार

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। शादी में धोखा खाई एक युवती को ससुरालीजनों ने धोखा दिया और देवर ने शादी करने का झांसा दिया और 10 साल तक दुराचार करता रहा। पीड़ित महिला अब पट्टी कोतवाली में आरोपी के खिलाफ शिकायती पत्र देकर इंसाफ की गुहार लगाई है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के कंसापट्टी गांव की रहने वाली युवती ने इस संबंध में शिकायती पत्र दिया और बताया कि 10 साल पहले धोखे से उसकी शादी की गई थी जिसमें उसका पति गूंगा और बहरा था। जब वह उसके साथ रहने से इंकार कर दिया तो उसके देवर ने उससे कोर्ट मैरिज कराने की बात कह कर उसे अपने साथ रख लिया और उसके साथ दुराचार करता रहा। पीड़ित महिला का आरोप है कि जब उसने शादी के लिए दबाव बनाया तो वह उसे मारपीट कर जख्मी कर दिया और गला दबाकर हत्या करने का प्रयास किया। पीड़ित महिला को घर से भगा दिया गया और वह पट्टी कोतवाली पहुंची तथा शिकायती पत्र देकर इंसाफ की गुहार लगाई है।

वाहन का किस्त जमा करने जा रहे युवक से बीस हजार छीने

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। घर से अपने वाहन का किस्त जमा करने जा रहे एक युवक को उसके गांव के कुछ लोगों ने सड़क पर रोककर मारपीट करते हुए बीस हजार रुपये छीन लिया। पीड़ित ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में शिकायती पत्र देकर कानूनी कार्रवाई की मांग की है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के सलाहपुर गांव कराने वाला आशीष सिंह पुत्र नरेंद्र बहादुर सिंह ने बताया कि वह अपने पिकअप डाला की किस्त भरने के लिए बुधवार को बंधवा बाजार जा रहा था तभी गांव के रहने वाले एक व्यक्ति ने अपने दो साथियों के साथ लाठी डंडा से हमला कर दिया और उसकी जेब से बीस हजार रुपये तथा अन्य कागजात छीन लिया और मारा पीटा।

मुकदमों की बेहतर पैरवी करें शासकीय अधिवक्ता-जिलाधिकारी

डीएम ने शासकीय अधिवक्ताओं के साथ कानून व्यवस्था के सम्बन्ध में की बैठक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने कलेक्टेज्ट सभागार में अपराध एवं कानून व्यवस्था के सम्बन्ध में शासकीय अधिवक्ताओं (सिविल/फौजदारी) एवं अन्य सम्बन्धित अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में जिलाधिकारी ने आवष्यक वस्तु अधिनियम, गोवंष निवारण अधिनियम, गैंगेस्टर एक्ट, आईपीसी/सीआरपीसी के अन्तर्गत दर्ज मुकदमों, आबकारी अधिनियम, पास्को एक्ट, एससी/एसटी एक्ट के अन्तर्गत दर्ज मुकदमों के निस्तारण की समीक्षा की।

जिलाधिकारी ने शासकीय अधिवक्ताओं को निर्देषित किया कि गम्भीर धाराओं में दर्ज मुकदमों की प्रभावी पैरवी की जाए तथा शासन के मंषा के अनुरूप अपराधियों को सजा दिलवाई जाए। शासकीय अधिवक्ताओं से विगत तीन माह के मुकदमों के निस्तारण की समीक्षा करने पर जिलाधिकारी द्वारा नाराजगी व्यक्त की गयी तथा निर्देषित किया गया शासकीय अधिवक्ता मुकदमों की प्रभावी पैरवी करें तथा प्रतिमाह निस्तारण योग्य मुकदमों को चिन्हित कर उन मुकदमों में विवेचना के स्तर पर तथा अभियोजन के स्तर पर इसका परीक्षण कर लिया जाये ताकि कोई भी अपराधी छूट न पाये। जिलाधिकारी ने सभी शासकीय अधिवक्ताओं को निर्देषित किया कि उनके द्वारा प्रतिमाह मुकदमों के सम्बन्ध में प्रगति रिपोर्ट शासन को प्रेषित की जाती है, मुकदमों के निस्तारण में काफी विलम्ब हो रहा है जिस पर शासन द्वारा गम्भीर चिंता व्यक्त की गयी है।

जिलाधिकारी ने शासकीय अधिवक्ताओं से कहा कि अपराधियों को सजा दिलाने के लिये यदि विवेचना के स्तर पर कोई सहयोग चाहिये तो पुलिस अधीक्षक एवं जिलाधिकारी को अवगत करा सकते है किन्तु लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जायेगी। उन्होने अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) को निर्देषित किया कि जिन शासकीय अधिवक्ताओं के पिछले तीन माह में प्रगति सन्तोषजनक नही है उन्हें कारण बताओ नोटिस निर्गत की जाये और उनके द्वारा दिये गये प्रतिउत्तर को शासन को प्रेषित किया जाये। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) त्रिभुवन विष्वकर्मा, संयुक्त निदेषक अभियोजन हवलदार सिंह यादव, जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार, डीजीसी योगेष कुमार शर्मा, शासकीय अधिवक्ता फौजदारी/सिविल, सभी अभियोजन अधिकारी उपस्थित रहे।

परीक्षा कक्ष का निरीक्षण करते प्राचार्य प्रो0 मनोज मिश्र।

एमडीपीजी कालेज में 699 परीक्षार्थियों ने दी बीएड की परीक्षाएं

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एमडीपीजी केंद्र पर बुधवार से बीएड तृतीय सेमेस्टर की परीक्षाएं शुरू हुईं। इस दौरान एमडीपीजी कालेज के गेट के सामने सड़क पर परीक्षार्थियों की भीड़ अधिक होने से प्रयागराज-अयोध्या राजमार्ग पर घंटों जाम लगा रहा।

इस दौरान यातायात पुलिस के सिपाहियों ने किसी तरह मार्ग को बहाल कराया। एमपीडीपी कालेज के प्राचार्य प्रो मनोज मिश्र के निर्देशन में कालेज गेट पर सघन तलाशी के उपरांत ही विद्यार्थियों को कक्ष में प्रवेश करने दिया गया। आंतरिक सचल दल द्वारा कमरों में भी विद्यार्थियों की आवश्यक तलाशी ली जाती रही। एमडीपीजी केंद्र पर बीएड तृतीय सेमेस्टर के 705 परीक्षार्थी पंजीकृत थे जिनमें 699 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी तथा 6 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे।

घुघुरी लोक उत्सव में विशिष्ट महिलाओं को किया जाएगा सम्मानित

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडव कालीन भयहरणनाथ धाम में नागपंचमी के अवसर पर घुघुरी लोक उत्सव के मुख्य अतिथि के रूप में जनपद के जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल को प्रबन्ध समिति ने पत्र भेजकर आमंत्रित किया है। वहीं सांसद संगम लाल गुप्त को समापन अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है तथा विधायक विश्वनाथगंज जीत लाल पटेल उद्घाटन अतिथि के रूप में कार्यक्रम का शुभारम्भ करेगें। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व आयुक्त व पूर्व जिलाधिकारी प्रतापगढ आर0 एस0 बर्मा करेगें। यह जानकारी देते हुए भयहरणनाथ धाम क्षेत्रीय विकास संस्थान तथा प्रतापगढ गौरव सम्मान समिति के संयोजक समाज शेखर ने बताया कि घुघुरी लोक उत्सव में जहां स्थानीय प्रतिभावान बच्चो को मंच प्रदान किया जाता है वहीं उत्कृष्ठ व नामी कलाकारों के भी आयोजन होगें।

विधायक मोना की पहल पर बिजली व स्वास्थ्य सेवाएं हुई सृदृढ़, खुशी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। धार्मिक स्थली समेत दो बड़े गांवो मे अब लोगों को बिजली आपूर्ति में बडी सहूलियत मिल सकेगी। क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के प्रयास से नगर पंचायत के धार्मिक स्थल जंगली वीर बाबा तथा अझारा के साथ सांगीपुर ब्लाक की बड़ी बाजार रेहुआ लालगंज में पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम ने ट्रांसफार्मर क्षमता वृद्धि को मंजूरी दी है। इसके तहत अझारा गांव मे अब तिरसठ केवीए ट्रांसफार्मर की क्षमता वृद्धि कर इसे सौ केवीए व जंगली वीर बाबा पर लगे पचीस केवीए की क्षमता मे बढोत्तरी कर तिरसठ केवीए तथा रेहुआ लालगंज बाजार में पचीस केवीए की क्षमता बढोत्तरी कर तिरसठ केवीए क्षमता वृद्धि की गयी है। विधायक मोना के प्रयास से अब अझारा वार्ड तथा जंगली वीर बाबा व उसके समीप बसी बस्ती के साथ रेहुआ लालगंज के व्यापारियों को भी बिजली की ट्रिपिंग की समस्या से निजात मिल सकेगी। बुधवार को जानकारी होने पर अझारा तथा रेहुआ लालगंज एवं जंगली वीर बाबा की समीपवर्ती बस्ती में भी विधायक मोना के इस प्रयास की लोगों मे सराहना होती दिखी। इधर क्षेत्रीय विधायक के प्रयास से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र घुइसरनाथ धाम व पीएचसी अठेहा में फार्मासिस्टों की भी तैनाती हो जाने से लोगों मे राहत दिखी। पौराणिक स्थली बाबा घुइसरनाथ धाम में सावन मेले का हवाला देते हुए विधायक मोना ने प्रदेश के उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक को धाम समेत इन रिक्त स्थानों पर फार्मासिस्टों की तैनाती के लिए दस जुलाई को पत्र लिखा था। इस पर डिप्टी सीएम बृजेश पाठक ने बारह जुलाई को अस्पतालों मे फार्मासिस्टों के रिक्त पदों पर तैनाती के निर्देश दिये थे।

सात वर्ष पहले फरार हुई युवती बरामद करने में पुलिस को मिली सफलता

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सात वर्ष पहले घर से फरार हुई युवती को लालगंज पुलिस ने बरामद करने मे सफलता हासिल की है। स्थानीय कोतवाली के वर्मा नगर निवासी राधेश्याम वर्मा की पुत्री सीमा बीते चार अगस्त 2015 को घर से फरार हो गयी थी। मामले मे पुलिस ने युवती के पिता की तहरीर पर गांव के आरोपी दिलीप कुमार वर्मा पुत्र कमलेश के खिलाफ सीमा के अपहरण का केस दर्ज किया था। सीमा की बरामदगी न हो पाने पर पुलिस ने आरोपी बनाए गये दिलीप को जेल भी भेज दिया था। इस बीच युवती की तलाश में पुलिस व सर्विलांस टीम लगी रही। सर्विलांस के जरिए पुलिस को जानकारी हुई कि अपहृता युवती नोएडा में इस समय मौजूद है। पुलिस ने बीते सप्ताह टेलीफोन से युवती के नंबर पर संपर्क साधा। इसके बाद कोतवाली पुलिस की एक टीम युवती के नोएडा स्थित निवास पर पहुंची। वहां सीमा तथा उसके पति से पुलिस ने संपर्क किया। इसके बाद पुलिस सीमा को पति के साथ स्थानीय कोतवाली ले आयी। इस बीच सीमा ने नागला जादू विधुना औरैया निवासी बैजनाथ के पुत्र उमेश कुमार यादव से शादी कर ली। सीमा के इस समय तीन बच्चे भी हैं। हालांकि मुकदमें मे युवती के मिलने के बाद आरोपी बनाए गये दिलीप को निर्दोष होने की स्थिति में भी लगभग तीन माह जेल की भी यातना सहनी पड़ गयी थी। पुलिस ने बुधवार को सीमा को सक्षम न्यायालय में बयान के लिए भी महिला पुलिस की अभिरक्षा मे भेजवाया है।

धोखाधड़ी से जमीन का बैनामा कराने पर मुकदमा दर्ज

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के छिदौरा गाव निवासी रन्नो देबी ने पुलिस को दिए गए तहरीर में आरोप लगाया है कि गाँव के चार लोगों ने दवा के बहाने कुंडा ले जाकर मेरी जमीन का बैनामा करा लिया। जब मुझे जानकारी हुई तो आरोपियों ने गाली गलौज दिया और जान से मारने की धमकी दिया। मामले में पुलिस जांच करने में जुटी हुई है। मुकदमा लिखे जाने से आरोपियों में हड़कम्प मचा हुआ है।

कौशाम्बी संदेश

खबर संक्षेप

गृह भेदन करने वाले अभियुक्तों को पांच वर्ष कारावास की सजा

कौशाम्बी। शासन की प्राथमिकता के आधार पर गम्भीर एवं जघन्य अपराधों में पैरवी कर अभियुक्तों को सजा दिलाने के क्रम में पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में प्रभावी पैरवी कराते हुए मानिटरिंग सेल के माध्यम से थाना करारी पर पंजीकृत मुकदमा के तीन अभियुक्तों सन्तोष उर्फ नाटे पासी पुत्र सम्भू पासी निवासी ओसा थाना मझनपुर राम आसरे पासी उर्फ मासर पुत्र नत्थू पासी व कमला प्रसाद पासी पुत्र नत्थू पासी निवासीगण सल्लहा थाना करारी को न्यायालय एडीजे-06 द्वारा प्रत्येक अभियुक्त को पाँच पांच वर्ष कारावास तथा पांच पांच हजार रुपए का अर्थदण्ड से दण्डित किया गया अर्थदण्ड न अदा करने पर एक माह का अतिरिक्त कारावास की सजा सुनाई गई।

घर से निकला बालक गायब

कौशांबी। करारी थाना क्षेत्र के भवनी का पुरवा बैश कांटी गांव से बालक अंशुमान पाल पुत्र सूरजपाल 25 जुलाई को दोपहर बाद खेत जाने को कह कर घर से निकला था लेकिन वापस घर नहीं पहुंचा है जिससे परिजन चिंतित है मामले की सूचना बालक के पिता ने करारी थाना पुलिस को दी है।

स्वयं सहायता समूह योजना के क्रियान्वयन में बैंको की अहम भूमिका : जिलाधिकारी

डीएम ने स्वयं सहायता समूह का खाता खोलने एवं सीसीएल के कार्य में उत्कृष्ट कार्य करने वाले शाखा प्रबन्धकों को प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने उदयन सभागार में जनपद स्तरीय सूक्ष्म वित्त एवं वित्तीय समावेशन पर उ0प्र0 ग्रामीण आजीविका मिशन के अन्तर्गत आयोजित समस्त शाखा प्रबन्धकों की एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ किया। जिलाधिकारी ने कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वयं सहायता समूह भारत सरकार की महत्वाकॉक्षी योजना है। इस योजना का उद्देश्य जमीनी स्तर पर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण स्तर पर 10 महिलाओं को लेकर समूह का गठन किया जाता है, यह समूह 05 सूत्रीय कार्यक्रम का अनुपालन करते हुए कार्य करती हैं। उन्होंने स्वयं सहायता समूह योजना की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि इस योजना के क्रियान्वयन में बैंक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने समस्त शाखा प्रबन्धकों से अपेक्षा की कि स्वयं सहायता समूह का खाता खोलने एवं सी0सी0एल0 आदि के कार्यों में सकारात्मक रूप अपनाते हुए सहयोग किया जाय। उन्होंने कहा कि स्वयं सहायता समूह से सम्बन्धित आवेदनों को लम्बित न रखा जाय तथा स्वीकृत ऋण आवेदनों पर तत्काल वितरण की कार्यवाही किया जाय। उन्होंने डी0एम0एम0 एवं बी0एम0एम0 को बैंको के साथ समन्वय में रहकर स्वयं सहायता समूह के कार्यो को निष्पादित कराने के निर्देश दिये जिलाधिकारी एवं मुख्य विकास अधिकारी ने वित्तीय वर्ष 2021-22 में स्वयं सहायता समूह का खाता खोलने एवं सी0सी0एल0 के कार्य में उत्कृष्ट कार्य करने वाले यथा-शाखा प्रबन्धक बैंक ऑफ़ बड़ौदा कनैली अनुभव यादव, शाखा प्रबन्धक बड़ौदा यू0पी0 बैंक कल्याणपुर श्री सतीराम भारती, शाखा प्रबन्धक बड़ौदा यू0पी0 बैंक रामपुर धामावां राहुल सिंह, शाखा प्रबन्धक बड़ौदा यू0पी0 बैंक म्योहर संजय सिंह तथा शाखा प्रबन्धक बड़ौदा यू0पी0 बैंक बारा विनोद कुमार को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी, जिला विकास अधिकारी विजय कुमार एवं एल0डी0एम0 सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण एवं समस्त शाखा प्रबनधक उपस्थित रहें।

कार्यक्रम में उपस्थित शाखा प्रबंधक व अन्य

प्रमाण पत्र वितरित करते अधिकारी

न्यूज झरोखा

चायल तहसील में तैनात रजिस्ट्रार कानूनगो का पैसा लेते वीडियो वायरल

चायल कौशाम्बी। तहसील चायल में तैनात रजिस्ट्रार कानूनगो अनामिका सिंह वरासत पफ के नाम पर लोगों से 500 रुपए से 1000 रुपए तक की वसूली करने में मस्त है रजिस्ट्रार कानून अनामिका सिंह का रकम लेते हुए सोशल मीडिया में वीडियो वायरल हो रहा है एक तरफ सरकार कानून व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करने में लगी है लेकिन उनके अधीनस्थ कर्मचारी अधिकारी है सरकार के नियमों की धज्जियां उड़ाने में लगे हैं रजिस्ट्रार कानूनगो को यदि वरासत के मामले में रकम नहीं मिल पाती तो वह लोगों को तहसील का चक्कर लगवाती हैं जिससे परेशान हो कर फरियादी उनकी डिमांड आसानी से पूरी कर देते हैं फिर सोशल मीडिया में उनके कारनामे का एक वीडियो वायरल हो रहा है अब इस वीडियो को अधिकारी कितना संज्ञान लेते हैं इस बात की इंतजार जनता कर रही है।

एसपी हेमराज मीणा ने निरीक्षकों को लगाया स्टार, दी बधाई

कौशाम्बी। उपनिरीक्षक से निरीक्षक पद पर प्रोन्नत हुवे निरीक्षकों को एसपी कार्यालय में स्टार लगाया गया है पुलिस अधीक्षक हेमराज मीणा व अपर पुलिस अधीक्षक समर बहादुर सिंह द्वारा स्टार लगाकर सभी को बधाई देते हुवे उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई इस दौरान क्षेत्राधिकारी मंझनपुर वाई के नारायण एवं क्षेत्राधिकारी प्रशिक्षणाधीन मौजूद रहे।

होम्योपैथिक अस्पताल जाने वाली सड़क में गड्ढे

कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद मंझनपुर में कई करोड़ रुपए सड़क नाली में खर्च किए जाने के बाद तमाम सड़कों में अभी भी गड्ढे मौजूद है जिससे नगर पालिका द्वारा कराए गए विकास कार्यों में सवाल खड़े हो रहे हैं नगर पालिका मंझनपुर के दुर्गा मंदिर रोड से लिंक रोड पर होम्योपैथिक चिकित्सालय है इस सड़क पर सैकड़ों लोगों का परिवार रहता है सड़क में बीच में नाला का निर्माण किया गया है और नाला के ऊपर लगाया गया ढक्कन जगह जगह से टूटा है जिससे सड़क दुर्घटना को बढ़ावा दे रही है इस सड़क की नाली भी पूरी तरह से टूट गई है जिससे आए दिन सड़क पर निकलने वाले लोग दुर्घटनाग्रस्त होते हैं लेकिन करोड़ों की रकम विकास के नाम पर खर्च किए जाने के बाद भी नगर पालिका ने आम जनता के आवागमन की सड़कों पर मरम्मत नहीं कराई है जिससे नगर पालिका के कार्यों पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

सरकारी डाला ने बाइक सवार को मारी टक्कर

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के मूरतगंज चौकी अंतर्गत मूरतगंज कशिया मोड़ में सरकारी गाड़ी डाला ने बाइक सवार को टक्कर मार दिया है हादसे में बाइक सवार जख्मी हो गया है बाइक सवार पीयूष पांडे पुत्र राम सिया पण्डे ग्राम आलमचंद थाना कोखराज का रहने वाला था वह मूरतगंज किसी काम से आया था और वह अपने घर फिर बाइक से वापस जा रहा था तभी सामने आ रही सरकारी डाला ४स्त्र70ॅ 3854 ने बाइक सवार को टक्कर मार दिया हादसे में घायल बाइक सवार को इलाज के लिए मूरतगंज निजी अस्पताल में भर्ती किया गया है चिकित्सकों ने बताया कि उसका दाहिना पैर टूट गया है।

बुधवार को भदवा गांव से कवारियों का दल बाबा धाम रवाना

कौशांबी। सिराथू विधान सभा क्षेत्र के भदवा गांव से कावाडियो का दल बाबा धाम यात्रा को रवाना हुआ गांव दुर्गा शक्ति पीठ पर एकसाथ इकट्ठा हो साणा नाथ धाम भदवा होते हुए बहादुर की बाग रास्ते से रवाना हुए और बम बम भोले नाथ बोल बम बोल बम के जय घोष से गांव सहित क्षेत्र के वातावरण को शिव मय बना दिया गांव के लोगों ने इन सब कावाडियो को जय घोष शुभकामनाएं शुभ फल शुभयात्रा का आशीर्वाद देकर रवाना किया कावाडियो में संतोष कुमार मिश्रा कोटे दार पति अनिल कुमार तिवारी पत्रकार पवन कुमार तिवारी मोनू तिवारी मोंटू पांडेय सुनील तिवारी प्रधान अंशू तिवारी राहुल तिवारी छोटकू तिवारी शुभम् दुबे रिषभ तिवारी पंकज तिवारी शम्भू दिवा कर गबुल सहित तमाम कावाडिया रहें।

5 दिन पहले महिला घर से गायब नहीं लगा सुराग

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के बलीपुर टाटा गांव की एक विवाहिता 5 दिन पहले घर से गायब हो गई है मामले की सूचना विवाहिता के पति पप्पू पुत्र भैरव लाल ने चरवा थाना पुलिस को दिया है। दिए गए शिकायती पत्र के मुताबिक पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के ग्राम बिचका निवासी जगत की पुत्री कुंती देवी से पप्पू की शादी 3 वर्ष पूर्व हुई थी 21जुलाई को सुबह 9:00 बजे पप्पू मजदूरी करने चला गया तभी उसकी पत्नी कुंती घर से कहीं गायब हो गई है पप्पू का आरोप है कि 15 हजार रुपए नगद आधार कार्ड और एक लाकेट लेकर उसकी पत्नी गई है पत्नी के जाने के बाद पप्पू ने रिश्तेदारी में उसकी खोजबीन किया लेकिन पता नहीं चल सका है पप्पू ने मामले की सूचना चरवा पुलिस को दी है।

बिना कार्य कराए निकल गया करोड़ों बीडीओ को नहीं लगी भनक

भ्रष्टाचार में लिप्त ग्राम प्रधान और पंचायत सचिव योगी सरकार की छवि कर रहे हैं धूमिल

अखंड भारत संदेश

अधूरा पड़ा निर्माण कार्य

कौशाम्बी। मंझनपुर विकासखंड क्षेत्र में भ्रष्टाचार चरम पर पनप रहा है ग्राम पंचायतों में बड़ी धांधली के बाद भी खंड विकास अधिकारी मंझनपुर को भनक नहीं लग रही है बिना कार्य कराए पंचायत सचिव और ग्राम प्रधान सरकारी खाते से रकम निकाल रहे हैं कई ग्राम पंचायतों में धांधली की आला अधिकारियों से शिकायत हुई लेकिन कार्यवाही के नाम पर नतीजा शून्य रहा। मंझनपुर विकासखंड क्षेत्र में गजब तो तब हो गया जब पूरे विकासखंड क्षेत्र के ग्राम पंचायतों के विकास करने के लिए शासन से मिली रकम का पांचवा हिस्सा 50 लाख रुपए से ऊपर की रकम अकेले एदिल पुर ग्राम पंचायत को दे दिया गया है जिससे अन्य ग्राम पंचायतों को विकास की रकम नहीं मिल सकी आखिर अन्य ग्राम पंचायतों के साथ खंड विकास अधिकारी ने पक्षपात क्यों किया है ग्राम पंचायत एदिल पुर में सामग्री खरीद के नाम पर 50 लाख रुपए से अधिक की रकम मिलने के बाद आधे अधूरे कार्य कराए गए हैं योजना के कार्य कराए जाने के नाम पर मनरेगा योजना से फर्जी मजदूरों के नाम दर्ज करके लगभग 50 लाख रुपए की रकम मजदूरों के नाम निकाल लिए जाने का भी आरोप ग्राम पंचायत के जिम्मेदारों पर ग्रामीणों ने लगाया है एदिल पुर गांव का विकास कराए जाने के नाम पर मनरेगा योजना से करोड़ों की रकम इस वित्तीय वर्ष में निकल गई है लेकिन गांव में विकास कार्य आधे अधूरे हुए हैं पंचायत सचिव से लेकर ग्राम प्रधान की भूमिका सवालों के घेरे में है बिना कार्य कराए करोड़ों की रकम निकाल दिए जाने के मामले में खंड विकास अधिकारी मंझनपुर को भनक नहीं लगी है जिससे करोड़ों की रकम के भ्रष्टाचार में उनकी संलिप्तता से इनकार नहीं किया जा सकता करोड़ों रुपए की हेराफेरी के मामले में ग्रामीणों ने अधिकारियों से शिकायत की जांच मनरेगा उपायुक्त को सौंपी गई लेकिन उपायुक्त ने डीएम के आदेश का पालन करने के बजाय दोषी खंड विकास अधिकारी मंझनपुर को जांच सौंप दिया है इस संबंध में मनरेगा उपायुक्त से बात करने का प्रयास किया गया लेकिन कार्यालय में मौजूद ना होने से बात नहीं हो सकी अब सवाल उठता है कि करोड़ों की रकम में हेरा फेरी की साजिश में शामिल लोगों से जांच कराई जाएगी तो कैसे सरकारी खजाना सुरक्षित रहेगा दोषी बीडीओ को जांच सौंपने के बाद इस मामले में मनरेगा उपायुक्त की भी भूमिका सवालों के घेरे में कैद हो गयी है।

एक घंटे की बारिश में नगर पंचायत चायल के नव निर्मित नाला चोक

ओवरफ्लो नाला

कौशाम्बी। चायल विकास खण्ड के नगर पंचायत चायल की नालियां पूरी तरह चोंक हो गई है। नालियों में पड़ा कूड़ा-कचड़ा पूरी तरह बदबू मारने लगा है। वहीं नालियां चोक होने से बरसात का पानी रास्ते में उमड़ जाता है। कस्बा के लोगों ने इसकी शिकायत नगर पंचायत के जिम्मेदारों से किया। इसके बावजूद नगर पंचायत के जिम्मेदारों ने इस ओर कोई ध्यान नही दिया। चायल नगर पंचायत में सफाई कर्मी के मनमानी से हाल में बने नाला चोक हो गई है। नाला में पड़ा कूड़ा-कचड़ा पूरी तरह बदबू मारने लगा है। नाला चोंक होने से बरसात का पानी रास्ते व लोगो के घरों में भर गया है। जिससे लोगों को आने-जाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। बरसात का पानी लोगों के घरों में जा रहा है। दूसरी कड़ी में वार्ड न0 3 में बने नाला जिसमे लगभग 5 वार्डो का पानी का निकासी है जिसकी समय से सफाई न होने से इस बारिश में नाला पूरी तरह चोक हो गया जिससे बारिश का पानी रास्ते में भारा रहता है। यहां तक लोगो के घरों में बारिश का पानी और चोक नाले का पानी भर जाता है जिससे इस बारिश में कस्बा के लोगो को काफी परेशानी झेलनी पड़ती है। जिसका नगर पंचायत के जिम्मेदार कोई ध्यान नहीं देते है और कागजी कार्यवाही कर खानापूर्ति करते है।

रास्ते में जलभराव

वार्ड वासी मूलभूत समस्याओं ,जलभराव से त्रस्त, जिम्मेदार कमीशन खोरी में मस्त

अझुवा कौशाम्बी। सरकार की मंशानुरूप आमजनमानस को साफ सफाई सहित मूलभूत दिक्कतों का सामना न करना पड़े उसके लिए प्रदेश सरकार कटिबद्ध दिखाई दे रही है वही नगर पंचायत सिराथू के वार्ड नं 1 निवासी जलनिकासी की समस्या से त्रस्त दिखाई दे रहे वार्ड में जलनिकासी न होने से लोगों के घरों में गंदा पानी भर रहा है जिससे लोग गंदगी और संक्रामक बीमारियों से जूझ रहे हैं जिसकी शिकायत वार्ड वासियों ने नगर के जिम्मेदारों से कई बार किया लेकिन भ्रस्टाचार के आकंठ में डूबा नगर प्रशाशन केवल कमीशन खोरी पर मचल रहा है वार्ड के महेंद्र,मोहन,दुर्गा सरोज,हीरो,छोटेलाल मनोज सरोज ,मन्नू,अनुज,प्रमोद,ज्ञानमती पन्ना लाल महेश,टिल्लू,अनिता देवी,घनश्याम हीरालाल सरोज ने जिम्मेदारों पर आरोप लगाते हुए बताया कि जलभराव से सम्बंधित अधिशासी अधिकारी सिराथू को 9 जून और उपजिलाधिकारी को 29 जून 2022 को ज्ञापन भी दिया गया था लेकिन समस्या जस की तस बनी हुई है कागज में आदर्श नगर पंचायत का तमगा पाए सिराथू वार्ड नम्बर 1 के वासियों ने जिलाधिकारी कौशाम्बी का ध्यान आकृष्ट कराते हुए समस्या से समाधान की उम्मीद लगायी है।

सांस्कृतिक प्रतिभा खोज का आयोजन दो से चार अगस्त तक

कौशाम्बी। संस्कृति विभाग उ0प्र0 द्वारा अपनी विविध स्वायत्तशासी संस्थाओं के माध्यम से विभिन्न प्रदर्शनकारी कलाओं के संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य निरन्तर किया जाता है, ऐसी प्रदर्शनकारी सांस्कृतिक विधाओं यथा-लोक गायन, लोकनृत्य, लोकवादन, आदिवासी नृत्य, आल्हा गायन, लोकनाट्य, रामलीला, रासलीला, भजन एवं कीर्तन, ललित कला आदि के प्रतिभावान कलाकारों की खोज हेतु शासन के निर्देशानुसार आजादी का अमृत महोत्सव के अन्तर्गत सांस्कृतिक प्रतिभा खोज का आयोजन जनपद कौशाम्बी में दिनांक 02, 03 एवं 04 अगस्त 2022 को विकास भवन स्थित सरस हाल में किया जायेंगा। अति0 जिला सूचना अधिकारी नेबताया कि सांस्कृतिक प्रतिभा खोज प्रतियोगिता में प्रतिभाग हेतु 01 अगस्त 2022 तक कार्यालय, जिला सूचना अधिकारी कौशाम्बी से आवेदन पत्र प्राप्त एवं जमा कर सकते हैं। कोई अन्य शुल्क देय नहीं होगा। कलाकारों के प्रस्तुति के आधार पर ए0/बी0/सी0 श्रेणी में पंजीकृत किया जायेंगा। समस्त कलाकारों को अपने वाद्ययन्त्र एवं संगतकर्ताओं के साथ भाग लेना होगा, कलाकारों को संस्कृति विभाग, उ0प्र0 की ई-डायरेक्ट्री में पंजीकृत किया जायेंगा तथा उनको क्यू-आर कोड बेस्ड पहचान पत्र उपलब्ध कराया जायेंगा।

अपने बनाए निर्माण कार्यों को तोड़कर फिर बनाने में सरकारी धन बर्बाद कर रहा नगर पालिका

नगर पालिका मंझनपुर के भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के लिए जिम्मेदारों ने नहीं बढ़ाए हाथ

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। नगर पालिका परिषद मंझनपुर में विकास कार्यों के नाम पर जमकर धांधली हो रही है मनमानी तरीके से कार्य योजना बनाकर केवल सरकारी खजाने से धन निकालने की योजना तक नगर पालिका मंझनपुर के अधिकारी सीमित है जहां पर कार्य कराए जाने की जरूरत नहीं है वहां पर भी फर्जी प्रस्ताव बनाए जा रहे हैं जिससे सरकारी खजाने से रकम निकालकर कमीशन खोरी की जा सके अधिशासी अधिकारी ने अपने कार्यकाल में मंझनपुर कस्बे के कर्बला के बगल से मस्जिद के आगे तक बनाए गए नाले को बेवजह तोड़कर नया नाला का निर्माण कराया है लेकिन तोड़े गए नाले की रकम की रिकवरी अभी तक अधिशासी अधिकारी से नहीं हो सकी है 2 वर्ष पहले मंझनपुर चौराहे के सौंदर्यीकरण के नाम पर 30 लाख रुपए से अधिक की रकम नगर पालिका ने खर्च की थी लेकिन इन दिनों से मंझनपुर चौराहे पर परिवर्तन किया जा रहा है पहले के कार्यों को नष्ट किया जा रहा है वहां पहले मिट्टी डालकर चौराहा का सुंदरीकरण किया गया था लेकिन अब चौराहे से मिट्टी निकाल कर नया रूप देने का प्रयास किया जा रहा है आखिर कुछ दिनों में परिवर्तन का क्या आधार है इसका जवाब अधिशासी अधिकारी के पास नहीं है केवल मनमानी तरीके से कार्य योजनाओं को अंजाम देकर सरकारी धन में कमीशन खोरी की मंशा से नगर में कार्य कराए जा रहे हैं लेकिन नगर के कार्यों में धांधली के मामले में शासन प्रशासन से लेकर जनप्रतिनिधियों ने अभी तक अधिशासी अधिकारी के भ्रष्ट कारनामे को संज्ञान नहीं लिया है जिससे उनके हौसले बुलंद हैं और शासन से तमाम रकम मिल जाने के बाद रकम को खर्च करने की झूठी प्लानिंग बनाई जा रही है नगर वासियों ने योगी सरकार का ध्यान आकृष्ट कराते हुए भ्रष्ट अधिशासी अधिकारी के कारनामों का संज्ञान लेते हुए उनके कार्यकाल में कराए गए कार्यों की जांच कराते हुए दोषी अधिशासी अधिकारी और ठेकेदार को दंडित किए जाने की मांग की है।

चौराहे से मिट्टी निकालते नगरपालिका कर्मी

बैठक में उपस्थित समर्थ पार्टी नेता

किसानों को मिले मुफ्त बिजली : अजय सोनी

कौशांबी। समर्थ किसान पार्टी ने प्रदेश सरकार से किसानों को मुफ्त बिजली देने की मांग की है। पार्टी नेता अजय सोनी ने बुधवार को किसानों के साथ ग्राम उदहिन में बैठक किया और उनकी समस्याएं सुनी। इस अवसर पर बिजली पानी का मुद्दा छाया रहा। बैठक में किसानों से वार्ता करते हुए अजय सोनी ने कहा कि प्रदेश का किसान बुरे दौर से गुजर रहा है और उसकी माली हालत ठीक नहीं है। कोरोना महामारी से किसानों को भारी नुकसान हुआ है और प्रदेश सरकार किसानों की सुधि नहीं ले रही है। इससे किसान मजदूरी करने को विवश हो गया है। इसी के साथ अजय सोनी ने कहा कि केंद्र सरकार किसानों की आय दुगुनी करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है और किसान आर्थिक रूप से टूटता जा रहा है। इसी के साथ अजय सोनी ने कहा कि प्रदेश सरकार किसानों के निजी नलकूप का पुराना विद्युत बिल माफ करे और किसानों को सिंचाई के लिए मुफ्त बिजली दे। आगे कहा कि देश के कई राज्यों में किसानों को सिंचाई के लिए विद्युत बिल माफ है लेकिन उत्तर प्रदेश सरकार ने अभी तक किसानों को सिंचाई के लिए मुफ्त बिजली की व्यवस्था नहीं की है। इसी के साथ अजय सोनी ने कहा कि हम प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार से मांग करते हैं कि प्रदेश के किसानों को सिंचाई के लिए मुफ्त बिजली दी जाए। साथ ही किसानों का पुराना विद्युत बिल माफ हो। इस अवसर पर शिव सिंह पटेल, राकेश चौधरी, आदित्य तिवारी, घसीटे सरोज, जुम्मन अली, दीपक लोधी, राजू दिवाकर आदि मौजूद रहे।

वाहन की टक्कर से वृद्ध की हुई दर्दनाक मौत

अझुवा कौशाम्बी। कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र के दारानगर गांव के सैनी रोड दुल्हन तालाब के पास एक वाहन की टक्कर से एक बुजुर्ग की दर्दनाक मौत हो गयी है टक्कर मारने के बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया है, सूचना पाकर मौके पर पहुंची कड़ा धाम पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हाउस के लिए भेज दिया है खबर लिखे जाने तक मृतक की शिनाख्त नहीं हो सकी है घटना मंगलवार की सुबह की बताई जाती है दुर्घटना के बाद सड़क पर चारों ओर खून बिखरा हुआ है।

दहेज हत्या का वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना मंझनपुर पुलिस बल द्वारा तीन वांछित अभियुक्तों प्रदीप कुमार सिंह पुत्र फूलचन्द्र फूलचन्द्र पुत्र स्व0 रामआसरे बेलपति देवी पत्नी फूलचन्द्र निवासीगण खोजवापर थाना मंझनपुर को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्तों को न्यायालय भेज दिया है।

तीन बार रोकने के बाद चौथी बार फिर शुरू हुआ सरकारी जमीन पर कब्जा

तहसील प्रशासन और नगर पालिका परिषद अधिकारियों को गुमराह कर सरकारी जमीन पर कब्जा करने वालों के पक्ष में लगा रहा है उर्जा

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जनपद मुख्यालय मंझनपुर कोतवाली के ठीक सामने अभिलेखों में हेराफेरी कर सरकारी संपत्ति में कब्जा करने का कुचक्र 12 वर्ष पूर्व शुरू हुआ था लेकिन तत्कालीन डीएम ने सरकारी संपत्ति को बचाने में सफलता हासिल कर ली अवैध कब्जा धारक के भवन पर बुलडोजर लगाकर भवन गिरा दिया लेकिन सरकारी संपत्ति पर कब्जा करने की नियत वाले हताश नहीं हुए और लगातार तहसील प्रशासन मंझनपुर और नगर पालिका परिषद मंझनपुर से प्रयास करते रहे 3 महीने पहले फिर उसी भूमि पर कब्जे का प्रयास शुरू हुआ जिस पर अधिकारियों को जानकारी मिली कि अवैध कब्जा किया जा रहा है जिस पर सरकारी भूमि के कब्जे को रोक दिया गया फिर सेटिंग शुरू हुई और सेटिंग शुरू होते ही 1 महीने पहले फिर अवैध कब्जा शुरू हुआ फिर मामला डीएम के संज्ञान में पहुंचा फिर कब्जा रोक दिया गया लेकिन अवैध कब्जा कर ज्योति वाले खड़ी कर दी गई थी उस पर योगी सरकार का बुलडोजर नहीं चलाया गया जिससे तहसील प्रशासन और नगर पालिका प्रशासन की भूमिका सवालों के घेरे में खड़ी हो गई आखिर अवैध कब्जा धारक के बचाव में क्यों तहसील और नगरपालिका ऊर्जा लगा रही है तहसील और नगरपालिका की मौन स्वीकृति मिलने के बाद 3 दिन से फिर मंझनपुर कोतवाली के सामने करोड़ो की सरकारी जमीन पर बेखौफ तरीके से कब्जा शुरू है कई मजदूर लगाकर बेखौफ भवन निर्माण कराया जा रहा है तहसील प्रशासन से लेकर नगर पालिका प्रशासन मूकदर्शक की भूमिका पर उतर आया है आखिर अवैध संपत्तियों पर योगी सरकार का चलने वाला बुलडोजर कौशांबी के अवैध कब्जे पर अभी तक क्यों नहीं चलाया गया है गरीब कमजोर मजलूम की झोपड़ी गिराने वाले नगर पालिका और तहसील प्रशासन करोड़ों की सरकारी संपत्ति बचाने के बजाय अवैध कब्जा धारक के बचाव में क्यों ऊर्जा लगा रहा है यह तमाम सवाल तहसील प्रशासन और नगर पालिका को कटघरे में खड़ा कर रहा है बताते चलें कि अवैध कब्जा धारक ने जिससे जमीन का बैनामा लिया है उसके पास अभिलेखों में तो जमीन थी लेकिन मौके पर शेष जमीन पर उसने अपना निजी भवन बना लिया है जिससे उसके पास जमीन नहीं थी अपने बने भवन के हिस्से की जमीन को बेचकर के सरकारी जमीन पर कब्जा कराया जा रहा है। मंझनपुर कोतवाली के सामने करोड़ो की सरकारी जमीन पर पहले तीन बार कब्जा का प्रयास हुआ तो रोक दिया गया लेकिन अर्ध निर्मित भवन नहीं गिराए गए थे अवैध कब्जा करने वाले पर मुकदमा दर्ज करके उसकी गिरफ्तारी भी नहीं कराई गई है जिससे हौसले बुलंद हैं 3 दिन से फिर सेटिंग के बाद

भड़ेसर गांव की करोड़ों कीमत के सरकारी जमीन पर कब्जा

कौशांबी। जनपद मुख्यालय के नहर रोड पर न्यायालय चहारदीवारी के बगल में भड़ेसर ग्राम पंचायत की सरकारी जमीन पर बीते 3 महीने से अवैध कब्जा हो रहा है लेकिन राजस्व विभाग सरकारी जमीन के अवैध कब्जे के मामले में मूकदर्शक बना हुआ है जिससे सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा करने वालों के हौसले बुलंद हैं मामले की जानकारी उप जिलाधिकारी सिराथू को फोन के जरिए दी गई जिस पर उन्होंने भड़ेसर लेखपाल से सरकारी भूमि पर कब्जे के बारे में आख्या मांगी लेकिन उसके बाद भी मौके पर पहुंचकर लेखपाल ने सरकारी भूमि पर कब्जे की जानकारी एकत्रित करने का प्रयास नहीं किया है देर शाम लेखपाल से बात हुई तो उसने कहा कि कहां पर सरकारी जमीन में कब्जा हो रहा है उसे जानकारी नहीं है सूत्रों की माने तो लेखपाल के संरक्षण में सरकारी भूमि पर अवैध तरीके से कब्जा हो रहा है यह गंभीर मामला है और जनपद मुख्यालय से जुड़े हुए ग्राम पंचायत भड़ेसर में खुलेआम सरकारी जमीन में कब्जा होगा तो कैसे ग्रामीण क्षेत्र की सरकारी भूमि सुरक्षित रहेगी ग्रामीणों ने शासन प्रशासन का ध्यान आकृष्ट कराते हुए सरकारी भूमि पर बनाए गए अवैध तरीके से सरकारी भवन पर बुलडोजर चलाए जाने की मांग की है।

निर्माण तो रूका लेकिन मुक्त नहीं हुई सरकारी भूमि

कौशाम्बी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के करारी थाना अंतर्गत शुक्लन का पुरवा में सरकारी जमीन पर दबंगों ने कब्जा शुरू किया था मामले की शिकायत ग्रामीणों ने डीएम एसडीएम से की जिस पर दबंगों के सरकारी जमीन कब्जे पर रोक लगा दी गई है लेकिन अवैध तरीके से सरकारी भूमि पर बनाए गए दीवाल को अभी तक नहीं गिराया गया है इस जमीन को कब्जा कराने का लेखपाल पर ठेका लेने का आरोप है आरोप लगाने वाले ने अधिकारियों को शिकायती पत्र देकर बताया कि 35 हजार रुपए लेखपाल ने सरकारी जमीन कब्जा कराने के लिए लिया है लेकिन सरकारी जमीन कब्जा नहीं करने दिया है इस मामले की भी जांच चल रही है इतना ही नहीं सरकारी जमीन पर कब्जा कराने के नाम पर हल्का लेखपाल ने कई लोगों से मोटी रकम वसूल ली है ग्रामीणों ने अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए सरकारी भूमि पर कब्जा कराने के नाम पर वसूली करने वाले लेखपाल को दंडित करने की मांग की है।

संपादकीय

आओ अपनी मां पृथ्वी को बचाएं

प्राकृतिक संसाधनों के अथक मानव अति दोहन से प्राकृतिक मौसम पैटर्न अति असामान्य,जैव विविधता को नुकसान, वन्यजीवों के आवासों का विनाश, जीवो की जातियों प्रजातियों की विविलुप्ता, भूस्खलन, तूफान, जंगलों में आग, ज्वालामुखी जैसी अनेकों घटाएं आज के प्राकृतिक मौसम पैटर्न परिपेपक्ष में भारी बदलाव दिखता है जिसका मुख्य कारण मां पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों का मानवीय जीव द्वारा अति दोहन है। इसलिए आज विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस 28 जुलाई 2022 के उपलक्ष में हम इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे कि आओ अपनी मां पृथ्वी को बचाएं,अपने कर्तव्यों को निभाए, सरकारों द्वारा बनाए गए अधिनियमों नियमों विनियमों अंतरराष्ट्रीय संधियों का कड़ाई से पालन करें। साथियों बात अगर हम प्रकृति के संरक्षण की करें तो आज समय आ गया है कि हर मानव जीव को तात्कालिक इसके संरक्षण रूपी यज्ञ में अपने सहयोग रूपीआहुति देनी ही होगी क्योंकि यह सिर्फ पर्व या उत्सव मनाने, भाषण देने, वातार्लाप करने से नहीं बल्कि हमें इसके आचरण में उतरना होगा प्रकृति प्रेम तभी हो सकेगा जब पर्यावरणका संरक्षण होगा आइए, एक संकल्प लें कि अपनी ओर से पर्यावरण को संरक्षित करें। न केवल नए पौधे लगाएं बल्कि पुराने पेड़ों के संरक्षण का भी प्रयास करें। जलस्त्रोतों को संरक्षित करने में आगे आएं। विदेशों में आप देखेंगे कि सड़क के दोनों ओर हरियाली नजर आती है लेकिन अपने देश में सड़क के दोनों ओर पॉलीथिन उड़ते नजर आ जाएगी। सड़क पर दौड़ती कार के शीशे से चिप्स के रैपर, पॉलीथिन फेंकने वाले लोग भी हम ही हैं। वन्यजीवों के प्रति भी हमारे कान बंद हो गए हैं। चिड़िया पानी के बगैर तड़प रही हैं। पर्यावरण में पेड़ लगाने के साथ-साथ पारिस्थिति तंत्र को सुरक्षित रखने के लिए आगे आएं। घर के बाहर चिड़ियों के लिए पानी रखें। यह कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि गोवंश पानी के लिए तड़प रहे हैं, अगर हम उन्हें पानी पिला लें तो यह भी पर्यावरण के प्रति हमारा योगदान होगा।साथियों बात अगर हम प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए भारत सरकार द्वारा बनाए गए अधिनियमों नियमों विनियमों कार्यक्रमों की करें तो राष्ट्रीय आर्द्रभूमि (वेटलेंड) संरक्षण कार्यक्रम,नगर वाहन उद्यान योजना,प्रोजेक्ट टाइगरस्वच्छ भारत अभियान,मगरमच्छ संरक्षण परियोजना,यूएनडीपी समुद्री कछुआपरियोजना,प्रोजेक्ट हाथी,मत्स्य पालन अधिनियम 1897,भारतीय वन अधिनियम 1927खनन और खनिज विकास विनियमन अधिनियम 1957 पशुओं के प्रति क्रूरता कीरोकथाम 1960, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972, जल (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम 1974, वन संरक्षण अधिनियम 1980, वायु (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम 1981, पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 जैविक विविधता अधिनियम 2002, आर्द्रभूमि संरक्षण और प्रबंधन नियम 2010 इत्यादि बनें हैं। साथियों बात अगर हम मां पृथ्वी की करें तो, पृथ्वी ने हमें पानी, हवा, मिट्टी, खनिज, पेड़, जानवर, भोजन आदि जैसी जीने के लिए बुनियादी आवश्यकताएं प्रदान की हैं।

आदिवासी भारत और कनाडा के

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

भारत में आदिवासियों को कितना महत्व दिया जाता है, इसे आप इसी तथ्य से समझ सकते हैं कि इस समय भारत की राष्ट्रपति आदिवासी महिला द्रौपदी मुर्मू हैं। देश के तीन राज्यपाल भी आदिवासी हैं। छत्तीसगढ़ की राज्यपाल अनुसुइया उइके मूलतः मध्य प्रदेश की हैं। आदिवासियों के लिए कई पहल की हैं। भारत में कई आदिवासी मुख्यमंत्री और मंत्री हैं और पहले भी रहे हैं। संसद में भी भारत के लगभग 50 सदस्य आदिवासी ही होते हैं। कई विश्वविद्यालयों के उपकुलपति और प्रोफेसर भी आदिवासी हैं। भारत के कई डाक्टर और वकील भी आपको आदिवासी मिल जाएंगे। सरकारी नौकरियों और संसद में उन्हें आरक्षण की भी सुविधा है लेकिन आप जरा जानें कि अमेरिका और कनाडा के आदिवासियों का क्या हाल है। मैं अपनी युवा अवस्था से इन देशों में पढ़ता और पढ़ाता रहा हूं।

मुझे इनके कई आदिवासी इलाकों में जाने का मौका मिला है। यह संयोग है कि मेरे साथी छात्रों में कभी कोई अमेरिकी या कैनेडियन आदिवासी नहीं रहा। वहां के आदिवासी आज भी जानवरों की जिंदगी जी रहे हैं। उनसे माफी मांगने के लिए 86 वर्षीय पोप फ्रांसिस कनाडा पहुंचे हैं।

व्हीलचेयर में बैठे पोप वहां क्यों गए हैं? उन्होंने ईसाई पादरियों और गोरे प्रवासियों द्वारा वहां के आदिवासियों पर किए गए अत्याचारों के लिए माफी भी मांगी। पिछले 80-90 साल में आदिवासियों के लगभग डेढ़ लाख बच्चे लापता हो चुके हैं। इन बच्चों को उनके घर से जबरन उठाकर ईसाई स्कूल में भर्ती कर दिया जाता था। उन पर हुए अत्याचारों की कहानी रोंगटे खड़े कर देती है। हजारों बच्चे भूख से तड़प-तड़प कर मर गए। हजारों के साथ बलात्कार हुआ और हजारों की हत्या कर दी गई।

यह ईसाई स्कूल गांवों से इतने दूर बनाए जाते थे कि उनके मां-बाप वहां तक नहीं पहुंच सकें। कनाडा सरकार ने जांच आयोग बिठाकर जो तथ्य उजागर किए, उनसे पोप मर्माहत हुए और कनाडा जाकर उन आदिवासियों से माफी मांगी। कनाडा सरकार ने उनके पुनरोद्धार के लिए 40 बिलियन डॉलर देने की घोषणा की है। अमेरिका और कनाडा के आदिवासियों को रेड इंडियन और इंडियन कहा जाता है लेकिन जरा देखिए कि उन देशों और भारत के आदिवासियों में कितना फर्क है।

(लेखक, भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष हैं।)

सत्ता के लिये धार्मिक परम्परायें सर्वोपरि या संविधान की रक्षा ?

निर्मल रानी

पिछले दिनों सेंट्रल विस्टा नामक परियोजना के अंतर्गत भारत के नव निमार्णाधीन संसद भवन पर अशोक स्तंभ की एक विशालकाय विवादित प्रतिमा स्थापित की गयी। जिसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हिन्दू रीति रिवाज एवं कर्मकाण्ड के साथ किया। यह वह अशोक स्तंभ है स्वरूप है जो भारतीय संविधान के मुख्य पृष्ठ पर अंकित है। और इसी संविधान का अनुच्छेद 51 अ प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिये अनेक कर्तव्य सुनिश्चित करता है। और इसी क्रम में यह उल्लेख है कि प्रत्येक नागरिक भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे, भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे तथा व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले। सवाल यह है कि क्या प्रधानमंत्री द्वारा अशोक स्तंभ के उद्घाटन के समय किया जाने वाला कर्मकाण्ड संविधान की उक्त परिभाषा के अंतर्गत सही था ? इस के अलावा भी भारत के प्रधानमंत्री भारत नेपाल अथवा अन्य किसी देश में किसी मंदिर अथवा धार्मिक आयोजन में शरीक होते हैं तो उनका पहनावा देखकर तो कोई यह कह ही नहीं सकता कि वे किसी धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के प्रधानमंत्री हैं। बल्कि ऐसा प्रतीत होता कि भारत को जिस हिन्दू राष्ट्र बनाने की बात की जा रही है वह हिन्दू राष्ट्र बन चुका है और यही उस 'हिन्दू राष्ट्र के पहले प्रधानमंत्री' हैं। दो वर्ष पूर्व राफेल लड़ाकू विमान के पूजा पाठ यहाँ तक कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा विमान पर निम्बू व हरी मिर्च लटकाने जैसी अंधविश्वासपूर्ण परंपरा का पूरी दुनिया में मजाक उड़ाया गया। क्या इन्हीं अंधविश्वासी 'कारगुजारियों ' से संविधान के अनुरूप 'जनता में वैज्ञानिक और मानववादी चिंतन विकसित' किया जायेगा? कभी इसी अंधविश्वासी कुनबे का कोई नेता यहां तक दावा कर बैठता है कि हमारे

मंत्रोच्चारण मात्र से चीन की सेना पराजित हो जायेगी। कहीं कांवड़ियों पर उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से पुष्प वर्षा कराई जा रही है और मुख्यमंत्री स्वयं हेलीकॉप्टर से कांवड़ यात्रियों का अभिवादन कर रहे हैं। तो कहीं उत्तरांचल के मुख्यमंत्री कांवड़ियों के पैर धोते दिखाई दे रहे हैं। राष्ट्रपति का उम्मीदवार बनने के बाद द्रौपदी मुर्मू विभिन्न मंदिरों में झाड़ू लगाती नजर आईं। कहीं ब्राह्मण मण्डली द्वारा कथित तौर पर उनका शुद्धिकरण किये जाने के वीडिओ वायरल हुए। प्रधानमंत्री,उनके अनेक मंत्रिमंडलीय सहयोगी तथा अनेक भाजपाई मुख्य मंत्रियों व मंत्रियों से जुड़ी इसी तरह की अनेक खबरें व उनके चित्र अक्सर सामने आते रहते हैं। परन्तु पिछले दिनों ठीक इसके विपरीत एक समाचार तमिलनाडु राज्य की धर्मपुरी लोकसभा क्षेत्र से प्राप्त हुआ।

इस क्षेत्र के लोक सभा सदस्य डॉक्टर सेंथिल कुमारको पी डब्ल्यू डी द्वारा शुरू की जाने वाली एक सड़क परियोजना के शुभारंभ के लिये आमंत्रित किया गया था। विभाग की ओर से अवसर पर भूमि पूजन कराये जाने के उद्देश्य से ब्राह्मणों को भी आमंत्रित किया गया था। समारोह स्थल पर जब सांसद ने पूजा सामग्री सहित ब्राह्मण को मौजूद देखा उसी समय वे आग बबूला हो उठे। उन्होंने सवाल किया कि यहाँ केवल ब्राह्मण ही क्यों? चर्च के फादर इमाम आदि क्यों नहीं? सभी को इसमें शामिल करना चाहिये?

उन्होंने निर्देश दिया कि भविष्य में किसी भी सरकारी समारोह में किसी धर्म विशेष के लोगों को न बुलाया जाये। क्योंकि यही तमिलनाडु का द्रविण मॉडल है और मुख्य मंत्री एम के स्टालिन भी यही चाहते हैं। गौर तालाब है कि मुख्यमंत्री एम के स्टालिन के किसी भी उद्घाटन समारोह की शुरूआत किसी भी धर्म विशेष के धार्मिक रीति रिवाजों से नहीं की जाती है। बल्कि संविधान उल्लिखित धर्मनिरपेक्ष बिंदुओं का ही पालन किया जाता है। बेशक उत्तर भारतीय राजनीतिज्ञों की नजरों में दक्षिण भारत के केरल व तमिलनाडु जैसे राज्य खटकते रहते हों परन्तु हकीकत यह है कि अपनी इसी संवैधानिक,धर्मनिरपेक्ष व संविधान सम्मत सोच व विचारधारा के चलते ही आज जहां केरल में ०.7 तथा तमिलनाडु में 4.9 प्रतिशत गरीबी है वहीं बिहार,उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में क्रमशः 51.9,37.8 तथा 36.7 प्रतिशत गरीबी है। इन राज्यों में शिक्षा का आंकड़ा भी कम-ो-बेश इसी अनुपात में है।

आधुनिकीकरण के इस दौर में जब इन संसाधनों का अंधाधुन्ध दोहन हो रहा है तो ये तत्व भी खतरे में पड़ गए हैं। अनेक शहर पानी की कमी से परेशान हैं। आप ही बताइये कि कहां खो गया वह आदमी जो स्वयं को कटवाकर भी वृक्षों को कटने से रोकता था? गोचरभूमि का एक टुकड़ा भी किसी को हथियाने नहीं देता था। जिसके लिये जल की एक बूंद भी जीवन जितनी कीमती थी। कत्लखानों में कटती गायों की निरीह आहें जिसे बेचैन कर देती थी

प्रायः विभिन्न मंचों पर यह बहस होती ही रहती है कि मानववादी चिंतन तथा वैज्ञानिक व तर्कशील सोच हमें और हमारे देश को आगे ले जाएगी या फिर धार्मिक रीति रिवाज,उनकी आड़ में पनपने वाले पाखण्ड,दकियानूसी सोच और इसी से जुड़ी वोट बैंक की वह राजनीति जो किसी धर्म विशेष को प्रसन्न कर सत्ता तक पहुँचने में सहायक होती है ? इतिहास में यह दर्ज है कि जब गजनवी ने सोमनाथ मंदिर को लूटा उस समय भी वहां मौजूद ब्राह्मण मण्डली वहां उपस्थित हजारों लोगों को यह विश्वास दिलाती रही कि अभी श्लोकों के उच्चारण से गजनवी की सेना तबाह हो जाएगी। परन्तु आक्रांता गजनवी मंदिर का सोना लूट कर ले भागा और सैकड़ों लोगों की हत्या कर दी। कितना हास्यास्पद है कि आज चीन से लड़ने के लिये फिर से वही भाषा बोली जा रही है ? अतीत से हम कोई सबक सीखने के बजाये उसी दकियानूसी व अवैज्ञानिक विचारों को फिर खाद पानी दे रहे हैं ? जिस गाय के गोबर और गौमूत्र को पूरे विश्व के किसी भी आधुनिकतम व प्रगतिशील देश में कोई वैज्ञानिक महत्व व मान्यता न दी जा रही हो उस गोबर और गौमूत्र को हम जबरन औषधि यहाँ तक कि 'अमृत' के रूप मान्यता देने के लिये व्याकुल हैं। ऐसे ही अवैज्ञानिक प्रयासों के अंतर्गत कहीं किसी धर्म विशेष का धर्मग्रन्थ स्कूलों में पढ़ाया जाने लगा तो कहीं ज्योतिष विद्या सिखाए जाने का समाचार मिल रहा है। जो कभी दूसरों पर तुष्टीकरण का आरोप लगाया करते थे उन्होंने अपनी 'कारगुजारियों ' को तृप्तीकरण का नाम दे दिया है।

धर्म विशेष के 'धर्म भीरुओं 'को हो सकता है यह सब अच्छा भी लग रहा हो। हो सकता है कि किसी को मजार पर चादरें चढ़ाना और इफ़्तार पार्टी से सुकून मिलता हो। परन्तु केरल और तमिलनाडु जैसे जो राज्य धर्म के बजाये वैज्ञानिक सोच को प्राथमिकता देते हों वहां की शिक्षा व आर्थिक सम्पन्नता का स्तर देखकर तो आँखें खोलनी ही चाहिए। और यह स्थिति यह सोचने के लिये भी काफी है कि आखिर सत्ता के लिये धार्मिक परम्परायें सर्वोपरि हैं या संविधान की रक्षा ?

महामहिम जी का हिन्दी में शपथ लेने का संदेश तो समझिए

आर.के. सिन्हा

भारत के 15 वें राष्ट्रपति पद की शपथ हिन्दी में लेकर श्रीमती द्रौपदी मूर्मू ने सारे देश को एक बेहद महत्वपूर्ण संदेश दिया है। मूल रूप से उड़ीसा से संबंध रखने वाली श्रीमती द्रौपदी मूर्मू अगर उड़िया या किसी अन्य भाषा में भी शपथ लेती तो कोई अंतर नहीं पड़ता। देश को अपनी सभी भाषाओं और बोलियों पर गर्व है। पर, वह हिन्दी में शपथ लेकर तो अचानक से सारे देश में पहुंच गई। समूचे देश ने उन्हें हिंदी में शपथ लेते हुए देखा-सुना। बेशक, हिन्दी देश की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। इस संबंध में कोई विवाद नहीं हो सकता। हिन्दी की सारे देश में स्वीकार्यता है और यह दिन-प्रतिदिन बढ़ भी रही है। अगर छुद्र राजनीति को छोड़ दिया जाए तो इसे सारे देश में बोला और समझा जा रहा है।

कुछ समय पहले ही देश के आठ पूर्वोतर राज्यों के स्कूलों में दसवीं कक्षा तक हिन्दी को अनिवार्य रूप से पढ़ाने पर वहां की राज्य सरकारें राजी हुईं हैं। इन राज्यों में 22 हजार हिन्दी के अध्यापकों की भर्ती की जा रही है क नौ आदिवासी जातियों ने भी अपनी बोलियों की लिपि देवनागरी को स्वीकार कर लिया है। पर दुर्भाग्य से कुछ दल और उनके कुछ अंग्रेजीदां नेता हिन्दी को लेकर ओछी टिप्पणियां करने से बाज नहीं आते। जब पूर्वोत्तर राज्यों ने हिन्दी को स्कूलों में अनिवार्य रूप से पढ़ाने को लेकर फैसला लिया तो कांग्रेस के राज्य सभा सदस्य जयराम रमेश यह कहने लगे हिन्दी राजभाषा है न कि राष्ट्रभाषा। गनीमत है कि कांग्रेस या किसी अन्य दल के नेता ने श्रीमती द्रौपदी मूर्मू जी के हिन्दी में शपथ लेने पर बवाल नहीं काटा। हिन्दी को राष्ट्र भाषा का दर्जा यूं ही तो नहीं मिला। इसकी सर्वत्र राष्ट्र भाषा के रूप में मान्यता है। जब अनुच्छेद 343 में देवनागरी में लिखी हिन्दी को सर्वसम्मति से मान्यता मिली तभी तो वह राष्ट्रभाषा हिन्दी मानी गई। बाद में चलकर कोई राजभाषा कोई सरकारी भाषा और कोई आधिकारिक भाषा कहने लगा। सरदार पटेल ने 13 अक्तूबर,1949 को अपने एक संदेश हिन्दी के लिए राष्ट्र भाषा शब्द का ही प्रयोग किया है। शहीदे आजम भगत सिंह मूल रूप से पंजाब से होने के बावजूद हिन्दी के पत्रकार के रूप में काम करते रहे थे। वे कानपुर में गणेश शंकर विद्यार्थी जी के अखबार प्रताप में नौकरी करते थे। वे प्रताप के प्रतिनिधि के रूप में कानपुर से दिल्ली में दंगा कवर करने भी आए थे। उन्हें हिन्दी की शक्ति का पूरा पता था। वे अंग्रेजी को अच्छी तरह जानते थे, पर वे पत्रकार हिन्दी के ही बने ताकि अपनी आवाज दूर तक ले जाएं। देखिए श्रीमती द्रौपदी मूर्मू जी सुदूर ग्रामीण उड़ीसा से आती हैं और वहां भी हिन्दी सुदूर गांवों तक में बोली जाती है। वह पूरे पांच वर्ष झारखंड की राज्यपाल भी रहीं। झारखंड हिन्दी भाषी राज्य है। वहां पर रहते हुए वह हिन्दी के और निकट आईं। अतः यह कहना चाहिए कि उन्होंने सोच-समझकर ही हिन्दी में शपथ ली। हिन्दी करोड़ों भारतवसियों की प्राण और आत्मा है। इसमें वे अपने को सही ढंग से व्यक्त कर पाते है। यह प्रेम और सौहार्द की भाषा है। यह सबको जोड़ती है। संयोग देखिए कि उड़नपरी पी.टी. उषा ने भी राज्यसभा के नामित सदस्य के रूप में हिन्दी में ही शपथ ली। वह केरल से आती हैं और खांटी मलयालम उनकी मातृभाषा है। पर यह हिन्दी को लेकर उनका प्रेम ही है, जिसके चलते वह हिन्दी में शपथ लेती हैं। पीटी उषा के राज्य सभा के लिए मनोनीत किए जाने से तो सारा देश ही प्रसन्न है। उन्हें देश ने पहली बार सन 1982 में नई दिल्ली में आयोजित एशियाई खेलों से ही जाना था। 16 साल की पीटी उषा ने 1980 के मास्को ओलंपिक खेलों में भी भाग लिया था। पर दिल्ली और देश ने उन्हें कायदे से पहली बार राजधानी के जवाहरलाल नेहरु स्टेडियम में देखा था। पीटी उषा ने 100 मीटर की स्पर्धा में फाइनल में पहुंच कर एक तरह से साबित कर दिया था कि वह अब लंबे समय तक ट्रैक पर राज करेंगी। मुझे याद है 100 मीटर स्पर्धा के फाइनल को देखने के लिए जवाहरलाल नेहरु स्टेडियम किस तरह खचाखच भरा हुआ था। रेस के आरंभ होते ही पीटी उषा ने बढ़त बना ली थी। वह शेष प्रतियोगियों से काफी आगे दौड़ रही थीं। पर फिर अचानक से वह पिछड़ने लगीं। रेस खत्म होने से पहले वह किसी तरह से दूसरे स्थान पर आ गईं और अंत में सिल्वर मेडल जीतने में सफल रहीं। तब दिल्ली के मुख्य रूप से हिन्दी भाषी दर्शकों ने उनका भरपूर उत्साहवर्धन और अभिवादन किया था। पर पीटी उषा के राज्य से ही आने वाले एक अंग्रेजी के संपादक महोदय को देश की नई राष्ट्रपति के हिन्दी में शपथ लेने पर वास्तव में बहुत कष्ट हो रहा है। उन्होंने अपने फेसबुक पेज पर यह लिखा कि यदि वह उड़िया या संथाली में शपथ लेतीं तो बेहतर होता। वैसे ये ज्ञानी संपादक महोदय यह नहीं बता सके कि कैसे बेहतर होता। उन्हें जब कहा गया कि हिन्दी को देश में सर्वाधिक लोग जानते-समझते हैं, तो वे कुतर्क पर उतर आए। कहने लगे, अंग्रेजी ही भारत की संपर्क भाषा है। अंग्रेजी सभी भारतीयों को जोड़ती है। क्या आप मानेंगे कि कोई व्यक्ति हिन्दी को लेकर इतनी नफरत का भाव रख सकता है? आखिर कौन कह रहा है कि आप हिन्दी पढ़ें या जानें। मत पढ़िये, मत सीखिए। कोई जोर-जबरदस्ती तो नहीं कर रहा है। पर अंग्रेजी को हिन्दी की तुलना में इक्कीस साबित करने के लिए झूठ तो मत बोलिए। अब इन महामूर्ख पंडित को कौन बताये कि विश्व की महान विश्वविद्यालयों से एम.बी.ए. करके जब कोई बड़ा प्रबंधक बहरत में पदस्थापित होता है, तब साडी मल्टीनेशनल कंपनियों में एक ही नियम है कि उसे पहले हिंदी सीखकर परीक्षा पास करनी होती है तभी उनकी पोस्टिंग स्थायी होती है क्योंकि पूरा विश्व का व्यापार यही मानता है कि हिंदी ही भारत की सार्वदेशिक संपर्क भाषा है। यह सब जानते हैं कि दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार सभा ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। यहां के अध्यापक हिन्दी के प्रसार-प्रचार में अपना अभूतपूर्व योगदान दे रहे हैं। हर साल चेन्नई की हिन्दी प्रचार सभा हजारों हिन्दी प्रेमियों को हिन्दी लिखना-पढ़ना सिखाती है। इससे जुड़े तमिल मूल के अध्यापक ही सच्चे हिन्दी सेवी हैं। सन 1918 में मद्रास में हिन्दी प्रचार आंदोलन की नींव रखी गई थी और उसी वर्ष में स्थापित हिन्दी साहित्य सम्मेलन मद्रास कार्यालय आगे चलकर दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के रूप में स्थापित हुआ। वर्तमान में इस संस्थान के चारों दक्षिणी राज्यों में प्रतिष्ठित शोध संस्थान है और बड़ी संख्या में दक्षिण भारतीय मूल के लोग इस संस्थान से हिन्दी में दक्षता प्राप्त कर ज्यादातर दक्षिण राज्यों में या देश के अन्य भागों में और विदेश के अन्य अनेकों देशों में जाकर हिन्दी की सेवा कर रहे हैं।

महात्मा गांधी से ज्यादा इस देश को कोई नहीं जान-समझ सकता। गांधीजी का ही विचार था कि देश की सांस्कृतिक एकता के लिये दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार- प्रसार जरूरी है। गांधी जी के समय से लेकर अब तक दुनिया तो बहुत बदली है।

बाढ़ और भूस्खलन के लिए प्रकृति को नहीं कोसें

सुनील कुमार महला

हाल ही में, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग द्वारा गुजरात, राजस्थान और इससे सटे मध्य प्रदेश में भारी बारिश जारी रहने का अनुमान जताया है। यह बात ठीक है कि मानसून की उपलब्धता लोगों के सामाजिक-आर्थिक विकास को प्रभावित करती है, लेकिन बारिश के असमान वितरण से बहुत परेशानियां आतीं हैं। ज्यादा या भारी बारिश से फसलें नष्ट हो जाती हैं, जान-माल का भी नुकसान होता है तो कम बारिश के कारण भी फसलों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। पिछले कुछ समय के दौरान ही छत्तीसगढ़, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, कोंकण और हिमाचल प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में अलग-अलग स्थानों पर भारी से बहुत भारी वर्षा हुई। पश्चिम राजस्थान, ओडिशा, तमिलनाडु, पूर्वी मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल और सिक्किम, कर्नाटक के दक्षिणी अंदरूनी हिस्सों, अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय और पंजाब में अलग-अलग स्थानों पर भी बहुत भारी वर्षा हुई है। इन राज्यों में अभी राहत की उम्मीद नहीं जताई जा रही है। मानसून आता है तो सभी लोग खुश होते हैं, क्योंकि बारिश से सभी को राहत मिलती है। खेती-बाड़ी के लिए मानसून का समय पर और अच्छी तरह से आना जरूरी माना जाता है लेकिन बहुत बार यही मानसून हमारे लिए वरदान के स्थान पर एक आपदा के रूप में साबित होता है। हाल ही में राजस्थान के गंगानगर जिले में भारी बरसात के कारण निचले इलाकों में पांच से आठ नौ फुट तक पानी भर गया। पानी निकालने के लिए सेना तक की मदद लेनी पड़ी। हमने देखा कि गंगानगर में मूसलाधार बारिश से पूरी तरह से जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया था। बहुत से स्थानों पर तो सेना को पानी की मोटरें लगाकर पानी की निकासी करनी पड़ी। बारिश से शहर की सड़कें बरसाती पानी से लबालब भर गई, जैसा कि बारिश ने पैंतीस चालीस सालों का रिकॉर्ड तोड़ दिया था। बाजार में भी सड़क के लेवल वाली दुकानों में पानी घुस गया था और लोगों को बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ा। इस साल मानसून की शुरूआत से ही इस साल देश के कई हिस्सों में मूसलाधार बारिश , बाढ़ , बादल फटने , बिजली गिरने और भू-स्खलन से तबाही का सिलसिला अनवरत जारी है। मौसम विभाग ने इस बार देशभर में 96-104 फीसदी बारिश की उम्मीद जताई थी और वर्तमान में बहुत से स्थानों पर उम्मीद से ज्यादा बारिश हो रही है। पहाड़ों पर तो आसमानी आफत टूट रही है तो देश के कई इलाके बाढ़ के कहर से त्राहि - त्राहि कर रहे हैं । भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम और मेघालय में बाढ़ का कहर लगातार जारी है। बाढ़ और भूस्खलन के कारण पिछले कुछ समय से अब तक असम और मेघालय में पचास से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। असम में बाढ़ के पानी के कारण अब तक लाखों घर पानी में डूब गए हैं और कई इलाकों में परिवहन संपर्क पूरी तरह टूट गया है। असम के बाद गुजरात तथा महाराष्ट्र भी वर्तमान में बाढ़ के प्रकोप से त्रस्त हैं। गुजरात और महाराष्ट्र में भी जान-माल का काफी नुकसान हुआ है। भारी बारिश के कारण या यूं कहें कि अतिवृष्टि के कारण देशभर के अनेक इलाकों में अनेक नदियां और जलाशय उफान पर हैं, तो वहीं दूसरी ओर बहुत से इलाके मानसूनी बारिश के लिए अब तक तरस रहे हैं। दरअसल, यह सब हमारे पर्यावरण के असंतुलन का ही परिणाम है कि कहीं पर बारिश कम तो कहीं पर बारिश ज्यादा होती है। यहां हमें यह विचार करने की जरूरत है कि आखिर हमारे पर्यावरण के असंतुलन के प्रमुख कारण क्या हैं ? तो जानकारी देना चाहूंगा कि हमारे पर्यावरण के असंतुलन के दो प्रमुख कारण हैं। एक कारण है हमारी बढ़ती जनसंख्या और दूसरा कारण है बढ़ती मानवीय आवश्यकताएं तथा उपभोक्तावृत्ति। मानवीय आवश्यकताएं असीमित हैं और हमारी उपभोक्ता वृत्ति ने इस धरती को कहीं का भी नहीं छोड़ा है। हम संसाधनों का लगातार दोहन करते चले जा रहे हैं। इन दोनों का असर प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ता है और शायद यही कारण है कि आज इसकी वहनीय क्षमता लगातार कम हो रही है।

लेट्स लर्न हिंडी

डॉ. सुरेश कुमार

एक अंग्रेजी माध्यम की पाठशाला में हिंदी अध्यापिका बच्चों को हिंदी पढ़ा रही थी। अध्यापिका ने देखा कि कक्षा में बच्चे बड़ी शरारत कर रहे हैं। उन्होंने सबको डाँटते-फटकारते हुए कहा चुपचाप बैठने के लिए कहा। बच्चों ने कहा, टीचर आपकी हिंदी हमारे पल्ले नहीं पड़ रही है। टीचर ने पलटकर कहा, डियर स्टूडेंट्स! आई एम गोइंग टु टीच यू हिंडी। बट वाई आर यू मेकिंग सच नॉइस। प्लीज डोंट मेक नॉइस। डियर स्टूडेंट्स हिंडी इज अवर ऑफिशियल लैंग्वेज। एक्चुअली इटीज वेरी इजी यू नो। फॉर एग्जांपल लेट्स राइट ह्यअह्न। फर्स्ट यू ड्रा ए स्टेट लाइन। देन अंडर स्ट्रेट लाइन राइट नंबर थ्री। देन ड्रा ए शार्ट स्ट्रेट लाइन इन द मिडिल। देन ड्रा स्टैंडिंग लाइन। दट्स इट। हिंडी इज वेरी वेरी इजी। बच्चे खुसुर-फुसुर करने लगे। एक बच्चे ने दूसरे से कहा, यह कैसी हिंदी कक्षा है। केवल विषय का नाम हिंदी है। लेकिन वही इसमें से गायब है। ऐसे में हम हिंदी खाक सीखेंगे। अंग्रेजी माध्यम का मतलब हिंदी को हिंडी बनाकर हमारा मर्डर करना है। हिंदी कक्षा का नाम सुनते ही कान में से खून निकलने लगता है। यह अंग्रेजी का भूत हमारी जान लेकर ही छोड़ेगा। टीचर ने बच्चों की खुसुर-फुसुर रोकते हुए कहा, चिल्ड्रेन फ्रॉम नेक्स्ट क्लास वी विल लर्न पड्य। तभी एक लड़के ने दूसरे से पूछा यह ह्यपड्यह्न क्या है? दूसरे ने जवाब दिया ह्म पद्य। टीचर आगे कहने लगी, टुलसी वाज ए ग्रेट पोएट। ही वाज डिवोटी ऑफ लॉर्ड रामा। ही रोट मेनी बुक्स। हीज फेमस बुक इज रामाचरिटामानसा। स्कूल की घंटी बज चुकी थी। बच्चे अपने-अपने घर लौटे। एक लड़का जब घर पहुँचा तब टीवी पर रामायण सीरियल चल रहा था। दादा ने उसे अपनी गोदी में बिठाकर कहा, यह रामायण है। इसमें जो पद्य सुनाये जा रहे हैं उसे रामचरितमानस से लिया गया है। इसके कवि तुलसी हैं। पोते ने तुरंत पलटकर कहा, दादा जी आपको कुछ नहीं मालूम।

भारत शतरंज ओलंपियाड में पदक जीतने का मजबूत दावेदार: कार्लसन

चेन्नई। मौजूदा विश्व चैम्पियन मैग्नस कार्लसन ने कहा कि मेजबान भारत आगामी 44वें शतरंज ओलंपियाड में पदक जीतने का मजबूत दावेदार है। भारत पहली बार इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता की मेजबानी 28 जुलाई से 10 अगस्त तक करेगा। ओलंपियाड में भाग लेने के लिए यहां पहुंचे कार्लसन ने कहा, '' भारत की दोनों टीमों में शानदार खिलाड़ी हैं और मुझे लगता है कि दोनों के पास पदक जीतने का मौका है।'' रूस और चीन की गैरमौजूदगी में भारत 'ए' टीम को अमेरिका के बाद दूसरी वरीयता दी गयी है जबकि 'बी' टीम को 11वीं वरीयता प्राप्त है। पांच बार के विश्व चैम्पियन कार्लसन की नार्वे टीम को तीसरी वरीयता मिली है।

आईएसएसएफ, एनआरएआई ने राष्ट्रीय स्तर के कोचिंग कार्यक्रम को फिर शुरू किया

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ (आईएसएसएफ) और भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) ने नये तरीके से तैयार किये गये राष्ट्रीय स्तर के कोचिंग पाठ्यक्रम को फिर से शुरू करने के लिए मंगलवार को हाथ मिलाया। 'आईएसएसएफ कोच कार्यक्रम' को 2019 में पहली बार शुरू किया गया था। यह आईएसएसएफ 'सी लाइसेंस' के स्तर का था। कोरोना वायरस महामारी के कारण इसे 2020 में रोक दिया गया था। एनआरएआई के पदाधिकारियों के मुताबिक नये तरीके से तैयार किये गये कार्यक्रम में कुछ बड़े बदलाव हुए हैं। आईएसएसएफ के शीर्ष प्रशिक्षक पाठ्यक्रम का संचालन करने के लिए नियमित रूप से भारत आते रहेंगे। आईएसएसएफ के दो प्रशिक्षक, पिस्टल के लिए मिस्र के अहमद सीफ अल दीन दाऊद और राइफल के लिए रूस की नताल्या झुकोवा वर्तमान में पाठ्यक्रम का संचालन करने के लिए भारत में हैं। वे समरेश जंग और मनोज कुमार के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। एनआरएआई के संयुक्त महासचिव और निदेशक, कोच विकास कार्यक्रम पवन सिंह ने कहा, '' यह पूरी दुनिया में पहली बार है जब आईएसएसएफ इस तरह के कोचिंग पाठ्यक्रम के साथ आया है। वे यहां निशानेबाजी के लिये मौजूद आधारभूत संरचना से काफी प्रभावित है।''

स्क्वॉश में एकल में पदक जीतने का मिथक तोड़ने उतरेगी भारतीय टीम, घोषाल और चिनप्पा रचना चाहेंगे इतिहास

चेन्नई। सभी वर्गों में पदक जीतने के लक्ष्य के साथ भारतीय स्क्वॉश टीम राष्ट्रमंडल खेलों के लिए बर्मिंघम पहुंच गई है जिसमें सौरभ घोषाल और जोशना चिनप्पा एकल में पदक जीतने का मिथक तोड़ने के लिए अपना आखिरी प्रयास करेंगे। दीपिका पल्लीकल, जोशना और सौरभ की तिकड़ी पिछले 15 वर्षों से भारतीय स्क्वॉश टीम का जिम्मा अपने कंधों पर उठाए हुए हैं। इन तीनों ने इस बार खेलों के लिए कड़ी मेहनत की है क्योंकि यह उनके आखिरी राष्ट्रमंडल खेल भी हो सकते हैं। स्क्वॉश को राष्ट्रमंडल खेलों में पहली बार 1998 में शामिल किया गया था और तब से लेकर अभी तक भारत केवल तीन पदक जीत पाया है। इनमें आठ साल पहले ग्लास्गो में जोशना और दीपिका द्वारा जीता गया ऐतिहासिक स्वर्ण पदक भी शामिल है। वे फिर से खिताब के प्रबल दावेदार के रूप में ब्रिटिश धरती पर पहुंच गए हैं। उन्होंने इस साल के शुरू में विश्व खिताब भी जीता था। अब जुड़वां बच्चों की मां दीपिका ने घोषाल के साथ मिलकर अप्रैल में विश्व युगल चैंपियनशिप में मिश्रित युगल का खिताब जीतकर शानदार वापसी की है।

बीस वर्षों में नहीं जीता है एकल पदक

मिस्र को छोड़कर स्क्वॉश खेलने वाली चोटी की सभी टीमें राष्ट्रमंडल खेलों का हिस्सा है। भारत अभी तक एकल में पदक नहीं जीत पाया है लेकिन जोशना और घोषाल इस बार कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। दीपिका ने वापसी के बाद अभी एकल में खेलना शुरू नहीं किया है। घोषाल से जब पूछा गया कि क्या भारत के पास 2022 में एकल में पदक जीतने का सर्वश्रेष्ठ मौका रहेगा उन्होंने कहा, 'ऐसी उम्मीद है। 20 साल पहले जब हमने खेलना शुरू किया था तब से हमने काफी प्रगति की है। हमने खिलाड़ियों के रूप में भी अच्छी प्रगति की है। राष्ट्रमंडल खेलों में चुनौती कड़ी होती है। यहां पदक जीतना आसान नहीं होता है।' घोषाल को पिछली बार राष्ट्रमंडल खेलों में तीसरी वरीयता दी गई थी लेकिन वह शुरू में ही बाहर हो गए थे। वह इस बारे में सोच कर अपने पर अतिरिक्त दबाव नहीं बनाना चाहते हैं। उन्होंने कहा, 'मैं ड्रॉ के बारे में नहीं सोच रहा हूं पिछली बार मैंने ऐसी गलती की थी। मैं एक बार में एक मैच पर ध्यान देना चाहता हूं।' भारत ने बर्मिंघम रवाना होने से पहले चेन्नई में विश्व के पूर्व नंबर एक खिलाड़ी ग्रेगरी गॉल्टियर की देखरेख में अभ्यास किया था। भारतीय महिला टीम में 14 वर्षीय अनहत सिंह भी शामिल है। उनके प्रदर्शन पर सभी की निगाहें रहेंगी। पिछले महीने एशियाई जूनियर स्क्वॉश चैंपियनशिप में उन्होंने लड़कियों के अंडर-15 वर्ग में खिताब जीता था। अनहत अभी तक 46 राष्ट्रीय सर्किट और दो राष्ट्रीय खिताब जीत चुकी है। स्र

केएल राहुल वेस्टइंडीज के खिलाफ नहीं खेल पाएंगे टी20 सीरीज

बेंगलुरू। भारत के सलामी बल्लेबाज केएल राहुल जो 21 जुलाई को कोविड-19 पॉजिटिव पाए गए थे, संक्रमण के ठीक होने के बाद भी वेस्टइंडीज के खिलाफ 29 जुलाई से शुरू होने वाली टी20 श्रृंखला से बाहर हो सकते हैं। बीसीसीआई द्वारा 26 जुलाई को अपने ट्विटर अकाउंट पर रोहित शर्मा, ऋषभ पंत, भुवनेश्वर कुमार, दिनेश कार्तिक जैसे अन्य लोगों के साथ त्रिनिदाद में एकदिवसीय टीम में शामिल होने के बारे में वीडियो अपलोड की गई जिसमें केएल राहुल दिखाई नहीं दिए थे।

एक रिपोर्ट में कहा गया है कि राहुल जो जून के अंत में सर्जरी के लिए जर्मनी जाने के बाद से बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट

अकादमी में ठीक हो रहे हैं, अब अगस्त में जिम्बाब्वे के खिलाफ एकदिवसीय मैचों के लिए उपलब्ध होंगे। रिपोर्ट के मुताबिक, उन्हें वेस्टइंडीज दौरे के टी20 इंटरनेशनल सीरीज में शायद ही खेलते देखा जाए, भले ही उन्होंने दो अनिवार्य नकारात्मक परीक्षण पास किए हों। उनके हृदय परीक्षणों के परिणाम के आधार पर राहुल वेस्टइंडीज के यूएसए लेग के लिए विचार कर सकते थे। लेकिन अब यह निश्चित है कि वह दौरे को पूरी तरह से छोड़ देंगे और इसके बजाय जिम्बाब्वे में एकदिवसीय मैचों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, जो विश्व कप सुपर लीग का हिस्सा हैं। वेस्टइंडीज दौरा खत्म होने के बाद भारत को जिम्बाब्वे के खिलाफ हरारे में 18, 20 और 22 अगस्त को तीन वनडे मैच खेलने हैं। श्रृंखला 2023 पुरुष क्रिकेट विश्व कप के लिए योग्यता निर्धारित करने वाली एकदिवसीय सुपर लीग का एक हिस्सा होगी, जिसके लिए भारत मेजबान होने के आधार पर स्वचालित रूप से योग्य हो गया है।

सैम करन को कंधे पर उठाना पड़ा महंगा, चोटिल हो गए बेयरस्टो

ब्रिस्टल। इंग्लैंड के बल्लेबाज जॉनी बेयरस्टो को अपने साथी खिलाड़ी सैम करन को कंधे पर उठाकर ले जाना महंगा पड़ा क्योंकि इससे वह चोटिल हो गए और उनका दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20

श्रृंखला के पहले मैच में खेलना संदिग्ध है। बेयरस्टो को अभ्यास सत्र बीच में ही छोड़ना पड़ा। उनके बाएं घुटने पर पट्टियां बंधी थी। उन्हें चलने में दिक्कत हो रही थी लेकिन अभी तक उनके पहले टी-20 मैच में खेलने को लेकर कोई फैसला नहीं किया गया है। इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका को लगातार दो मैच खेलने हैं और ऐसे में वेरिटो को पहले मैच से बाहर रहना पड़ सकता है। यदि ऐसा होता है तो फिल सॉल्ट और हैरी ब्रूक मध्यक्रम में बने रहेंगे। ये दोनों खिलाड़ी भारत के खिलाफ खेले थे। तब बेयरस्टो को विश्राम दिया गया था।

क्रिकेट में वापसी पर मिताली का बयान, महिला आईपीएल का हिस्सा बनना चाहूंगी

नई दिल्ली। पूर्व भारतीय कप्तान मिताली राज ने इशारा किया है कि इस जून क्रिकेट से संन्यास लेने के बावजूद वह अगले साल महिला आईपीएल के संभावित आयोजन में खेलना चाहेंगी। मिताली ने आईसीसी के नए 'हंड्रेड परसेंट क्रिकेट पॉडकास्ट' पर पूर्व इंग्लैंड गेंदबाज इशा गुहा और न्यूज़ीलैंड हरफनमौला फैंकी मकाय से बातचीत करते हुए कहा, 'मैंने यह विकल्प अपने लिए खुला रखा है। आईपीएल होने में अभी भी काफ़ी महीने बचे हैं। हालांकि इतना ज़रूर है कि मैं महिला आईपीएल के पहले संस्करण का हिस्सा बनना चाहूंगी।'

मिताली ने 1999 और 2022 के बीच अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 10,000 से अधिक रन बनाए और वनडे क्रिकेट में उनके 7805 रन किसी भी महिला के लिए रिकॉर्ड है। हालांकि उन्होंने टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में भारत के लिए 2019 के बाद भाग नहीं लिया था। और तो और महिला टी20 चैलेंज प्रतियोगिता में भी वह इस साल नहीं खेलीं थी। उन्होंने 2020 में वेलॉसिटी टीम की कप्तानी की थी। पॉडकास्ट के दौरान 1999

में मिल्टन कींस में आयरलैंड के खिलाफ अपने डेब्यू मैच के बारे में उन्होंने कहा, 'मैं एक ऐसे शहर [हैदराबाद] से हूं जहां [मोहम्मद] अजहरुद्दीन ने पहले तीन टेस्ट में तीन शतक लगाए थे। जब मैं 16 साल की उम्र में भारत की टीम में चुनी गई तो मुझसे भी कुछ ऐसी उम्मीदें थीं।' मिताली और उनके साथ डेब्यू कर रहीं रेशमा गांधी दोनों ने शतक जड़े और साथ में पहले विकेट के लिए नाबाद 258 रन जोड़े और इस पर मिताली ने कहा, 'सच पूछिए तो मुझे मैच के बारे में बहुत कुछ याद नहीं लेकिन 100 रन बनाकर मैं काफ़ी निश्चिंत थी।' 2002 में इंग्लैंड के खिलाफ टॉन्टन में दूसरे टेस्ट में मिताली ने अपने तीसरे ही टेस्ट में रिकॉर्ड 214 रनों की पारी खेली थी। संयोग से यह मैच इशा का डेब्यू था। इस मुकाबले के बारे में मिताली बोलीं, 'मैं उस मैच में उपकप्तान थी और हम टीम संयोजन को लेकर काफी सोच में थे। आखिरकार हमने केवल चार विशेषज्ञ बल्लेबाज चुने और बाकी ऐसे खिलाड़ी रखे जो मुख्यतया गेंदबाज थे लेकिन कारगर बल्लेबाजी भी कर सकते थे। जब मैं बल्लेबाजी करने गई तो कप्तान अंजुम चोपड़ा दूसरे छोर पर थी।

राष्ट्रमंडल खेल : कोविड पॉजिटिव पाए जाने के कारण दो महिला क्रिकेटर भारत में रुकीं

बर्मिंघम। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की एक और सदस्य कोविड-19 पॉजिटिव पाई गई है और शुक्रवार को यहां ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाले पहले मुकाबले से पूर्व भारत में ही रुक गई है। भारतीय टीम रविवार सुबह बर्मिंघम के लिए रवाना हुई लेकिन दो खिलाड़ी टीम के साथ नहीं जा पाई।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष सौरव गांगुली ने इससे पहले टीम की एक सदस्य के पॉजिटिव होने की पुष्टि की थी। खेलों से पहले टीम ने राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में ट्रेनिंग की। महिला क्रिकेट राष्ट्रमंडल खेलों में पदार्पण कर रहा है। भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) के एक अधिकारी ने बताया, 'दूसरी खिलाड़ी कोविड-19 पॉजिटिव पाई गई है और यह रवानगी से पहले हुआ। दोनों खिलाड़ी भारत में ही रुक गई हैं।

बीसीसीआई सूत्र ने कहा, 'नियमों के अनुसार नेगेटिव आने पर ही दोनों खिलाड़ी टीम के साथ जुड़ सकती हैं। मौजूदा स्थिति को देखते हुए दोनों खिलाड़ियों के ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले मैच

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष सौरव गांगुली ने इससे पहले टीम की एक सदस्य के पॉजिटिव होने की पुष्टि की थी। खेलों से पहले टीम ने राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में ट्रेनिंग की।

में खेलने की संभावना नहीं है। भारत को दूसरा मैच 31 जुलाई को चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान के खिलाफ खेलना है और टीम अपना अंतिम लीग मैच तीन अगस्त को बारबडोस के खिलाफ खेलेगी।

फाइनल सहित सभी मुकाबले एजबेस्टन में खेले जाएंगे। आयोजकों ने कहा है कि सेमीफाइनल और फाइनल के टिकट पहले ही बिक चुके हैं। टीम के रवाना होने से पहले भारतीय कप्तान हरमनप्रीत ने राष्ट्रमंडल खेलों में खेलने के बारे में कहा, 'हमें काफी बार इसे अनुभव करने का मौका नहीं मिलता इसलिए इसे लेकर उत्सुक हैं। उद्घाटन समारोह हम सभी के लिए विशेष अनुभव होगा।

2025 में महिला एकदिवसीय क्रिकेट विश्वकप की मेजबानी करेगा भारत

नई दिल्ली। भारत 2025 में महिलाओं के 50 ओवर के विश्व कप की मेजबानी करेगा क्योंकि बीसीसीआई ने बर्मिंघम में संपन्न आईसीसी के वार्षिक सम्मेलन के दौरान इस मेगा टूर्नामेंट के लिए बोली जीत ली है। देश एक दशक से अधिक समय बाद फिर से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के इस महत्वाकांक्षी टूर्नामेंट की मेजबानी करेगा।

पिछली बार भारत में महिलाओं का 50 ओवर का विश्व कप 2013 में आयोजित किया गया था। इस विश्व कप में, मुंबई में फाइनल मुकाबले में ऑस्ट्रेलियाई वेस्टइंडीज को 114 रनों से हराकर चैंपियन बना था। आज तीन अन्य आईसीसी महिला टूर्नामेंट के मेजबानों की भी घोषणा की गई। 2024 का टी-ट्वेंटी विश्व कप बांग्लादेश में होगा। 2026 का टी-ट्वेंटी विश्व कप इंग्लैंड में आयोजित किया जाएगा। 2027 के टी-ट्वेंटी विश्वकप की मेजबानी श्रीलंका करेगा। आईसीसी विज्ञप्ति के अनुसार बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली ने कहा, 'हम आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप 2025 की मेजबानी करने के इच्छुक थे और हमें खुशी है कि हमें इसकी मेजबानी मिल गई है।'

लवलीना की शिकायत पर खेल मंत्रालय का एक्शन, कोच संध्या गुरुंग को खेल गांव में प्रवेश

बर्मिंघम। टोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन की कोच संध्या गुरुंग को राष्ट्रमंडल खेलों के खेल गांव में प्रवेश मिल गया है। लवलीना ने राष्ट्रमंडल खेलों से तीन दिन पहले 'मानसिक उत्पीड़न' का आरोप लगाते हुए कहा था कि उनकी कोच को खेल गांव में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जा रही है।

लवलीना ने ट्विटर पर एक पोस्ट साझा करके कहा था, 'आज मैं बड़े दुख के साथ कहती हूं कि मेरे साथ बहुत उत्पीड़न हो रहा है। हर बार मेरे कोच, जिन्होंने मुझे ओलंपिक में पदक लाने में मदद की, उन्हें हटाकर मेरी ट्रेनिंग

में बाधा डाली जा रही है।' उन्होंने आरोप लगाया था कि उनकी कोच संध्या गुरुंग को खेल गांव में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जा रही थी, जबकि उनके दूसरे कोच को वापस भारत भेज दिया गया था।

उन्होंने लिखा, 'अभी मेरी कोच संध्या गुरुंग जी राष्ट्रमंडल खेल गांव के बाहर खड़ी हैं और उन्हें प्रवेश करने नहीं दिया जा रहा है, और मेरी ट्रेनिंग खेलों के आठ दिन पहले रुक गई है। मेरे दूसरे

लवलीना ने ट्विटर पर एक पोस्ट साझा करके कहा था, 'आज मैं बड़े दुख के साथ कहती हूं कि मेरे साथ बहुत उत्पीड़न हो रहा है।

कोच को भारत वापस भेज दिया गया है। मेरे बहुत विनती करने के बाद भी ऐसा हुआ है और इससे मेरा मानसिक उत्पीड़न हुआ है। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि मैं खेलों पर कैसे ध्यान केंद्रित करूं।' लवलीना की इस शिकायत के बाद खेल मंत्रालय ने तुरंत हरकत में आते हुए भारतीय ओलंपिक संघ को आदेश दिया था कि वह लवलीना की कोच के प्रमाणन का इंतज़ाम करे। इसके बाद भारतीय मुक्केबाजी संघ ने बयान जारी कर कहा कि यह सुनिश्चित करने की कोशिश में है कि संध्या गुरुंग बर्मिंघम में टीम का हिस्सा बन सके और इसके लिए वह भारतीय ओलम्पिक संघ के साथ काम कर रहा है। इन सबका नतीजा यह हुआ कि संध्या गुरुंग को उनका मान्यता पत्र मिल गया। इसके साथ ही उनके बर्मिंघम में खेल गांव में प्रवेश और कमरा भी मिल गया।

हॉकी इंडिया के चुनाव और संविधान को लागू करने के लिए 20 हफ्ते का समय स्वीकार्य नहीं: एफआईएच

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) ने कहा कि वे हॉकी इंडिया के नए संविधान को लागू करने और मान्यता प्राप्त तथा लोकतांत्रिक रूप से चयनित बोर्ड के लिए 20 हफ्ते के समय को स्वीकार नहीं कर सकते और चाहते हैं कि जल्द से जल्द यह प्रक्रिया पूरी हो। एफआईएच पहले ही 13 से 29 जनवरी तक भुवनेश्वर और राउरकेला में होने वाले पुरुष विश्व की मेजबानी का अधिकार भारत से वापस लेने की धमकी दे चुका है। देश में हॉकी का संचालन कर रही दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त प्रशासकों की समिति (सीओए) को लिखे तीसरे पत्र में एफआईएच के सीईओ थियेरीवील ने कहा कि 20 हफ्ते का समय वैश्विक संस्था को 'अस्वीकार्य' है। वील ने पत्र में कहा, ''22 जुलाई के आपके पत्र में जिक्र किया गया है कि आप संविधान में संशोधन, चुनाव का आयोजन और लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई इकाई को काम सौंपने की प्रक्रिया को अदालत के आदेश की तारीख से 20 हफ्तों के अंदर पूरा करेंगे। इस संदर्भ में हम इसे असंतोषजनक जवाब समझते हैं।''इस पत्र की प्रति पीटीआई के भी पास है।वील ने कहा, ''हम एक बार फिर दोहराना चाहते हैं कि एफआईएच 20 महीने के समय को स्वीकार नहीं

कर सकता। हमारी सलाह मानें कि संविधान में संशोधन और इसे लागू करना तथा हॉकी इंडिया के कार्यकारी बोर्ड के चुनाव जल्द से जल्द हों।''एफआईएच के तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल नव नियुक्त कार्यवाहक अध्यक्ष सैफ अहमद की अगुआई में आपात बैठक के लिए 15 अगस्त को भारत दौरे पर आने की उम्मीद है। यह प्रतिनिधिमंडल नए संविधान को लागू करने के संदर्भ में प्रगति का आकलन करेगा क्योंकि यह विश्व कप की मेजबानी बचाने के लिए जरूरी है। वील ने कहा कि एफआईएच को अब भी भारत के विश्व कप की मेजबानी की उम्मीद है लेकिन अगर अगले महीने के दौरान चीजें उम्मीद के मुताबिक नहीं रहीं तो हॉकी इंडिया पर प्रतिबंध लगने की भी संभावना है। सीओए सदस्यों से इस मामले में लगातार फोन करने के बावजूद संपर्क नहीं हो पाया।

भारतीय पहलवान सबसे मजबूत, कनाडा और नाईजीरिया से मिलेगी चुनौती

बर्मिंघम। बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों में भारत को पहलवानों से काफी उम्मीद है। ओलंपिक पदक विजेता पूर्व पहलवान योगेश्वर दत्त का मानना है कि रवि दहिया, बजरंग पूनिया, विनेश फोगाट और साक्षी मलिक के नेतृत्व में भारतीय पहलवान 8 से 9 स्वर्ण पदक जीत सकते हैं। कुश्ती में भारतीय पहलवानों को सबसे बड़ी चुनौती कनाडा और नाईजीरिया से मिलेगी। इनसे निपटने के लिए हमारे एक दर्जन पहलवान कमर कसकर तैयार हैं।

पदक जीतने में कनाडा के बाद दूसरे नंबर पर है भारत

रूस, जापान, ईरान और कजाखस्तान को कुश्ती का पावर हाउस कहा जाता है। ये देश राष्ट्रमंडल खेलों हिस्सा नहीं लेते हैं। इसलिए बर्मिंघम में भारत को मुख्य चुनौती कनाडा और नाईजीरिया से मिलेगी। कनाडा 66 स्वर्ण, 43 रजत और 26 कांस्य सहित 135 पदक जीतकर पहले स्थान पर है। वहीं, 43 स्वर्ण, 37 रजत और 22 कांस्य सहित कुल 102 पदक के साथ भारत दूसरे नंबर पर है। 21 स्वर्ण सहित 42 पदक जीतकर पाकिस्तान तीसरे नंबर पर है। 9 स्वर्ण सहित 42 पदक जीतने वाला नाईजीरिया छठवें नंबर पर है। हालांकि कुछ वर्षों में नाईजीरिया के पहलवानों ने अच्छा प्रदर्शन किया है।

लंबे समय से संघर्ष कर रहीं पूर्व नंबर एक विनेश फोगाट और रियो ओलंपिक की कांस्य विजेता साक्षी मलिक के पास बर्मिंघम में पदक जीतने का सुनहरा अवसर है। विनेश टोक्यो ओलंपिक की निराशा को दूर कर स्वर्ण जीतने के का लक्ष्य लेकर बर्मिंघम गई हैं। पेरिस ओलंपिक 2024 में होने हैं। इसलिए राष्ट्रमंडल खेलों का पदक विनेश का आत्मविश्वास बढ़ाने का काम करेगा। मनोवैज्ञानिक से सलाह ले चुकीं साक्षी ने पिछले कुछ समय से अपने प्रदर्शन में सुधार किया है। उन्होंने सोनम मलिक और मनीषा को हराकर 62 किलो भारवर्ग में बर्मिंघम का कोटा हासिल किया। टोक्यो ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता बजरंग पूनिया अपनी चोट से उबर गए हैं। वह अमेरिका में रहकर अपनी कमियों को दूर कर स्वर्ण के लिए दांव लगाने के लिए तैयार हैं। बजरंग ने 2018 में भी स्वर्ण पदक जीता था। वह इस बार भी स्वर्ण पदक जीतने के प्रबल दावेदार हैं। टोक्यो ओलंपिक के रजत विजेता रवि दहिया (57 भारवर्ग) की कुश्ती में कलात्मकता है। वह एक हाथ और एक पैर से जीतने की क्षमता रखते हैं।

तालिबान ने हिंदुओं-सिखों से की लौटने की अपील, गृह मंत्रालय ने कहा- देश में बहाल हुई सुरक्षा

काबुल। अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जा जमाने के बाद से वहां सुरक्षा के हालात बेहद खराब हो गए हैं। अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों पर हमले आम बात हैं। इसी कारण देश से खासकर हिंदुओं और सिखों ने पलायन शुरू कर दिया है। अब तालिबान के गृह मंत्रालय के अधिकारियों ने इस समुदाय के नेताओं से मिलकर दावा

किया कि देश में सुरक्षा की समस्या को हल कर लिया गया है। इसलिए हिंदुओं और सिख समुदाय के लोगों को वापस लौट आना चाहिए। अफगानिस्तान के हिंदू और सिख परिषद के सदस्यों से 24 जुलाई को मुलाकात के बाद तालिबान के चीफ ऑफ स्टाफ डॉ. मुल्ला वसी के कार्यालय ने एक ट्वीट में कहा, अफगानिस्तान में सुरक्षा की स्थिति अब काफी बेहतर है। ट्वीट के मुताबिक, बैठक के दौरान परिषद के सदस्यों ने इस्लामिक स्टेट के खुरासान गुट की ओर से काबुल के कर्ता-ए-परवान गुरुद्वारे पर किए गए हमले के दौरान प्रभावी कार्रवाई करने के लिए तालिबान को धन्यवाद भी दिया।

अफगानिस्तान में तालिबान का शासन के दौरान हिंदू और सिख ही नहीं, शिया समुदाय के लोग और उनके धार्मिक स्थल भी कट्टरपंथियों के हमलों का निशाना बनते रहे हैं। कुछ दिन पहले ही शियाओं के धार्मिक और शैक्षिक स्थलों पर हमलों का सिलसिला चल निकला था।

चीन के वुहान शहर में वापस लौटा कोरोना, लाखों लोगों पर लगीं सख्त पाबंदियां

बीजिंग। चीन में एक बार फिर कोरोना वायरस ने अपना प्रकोप दिखाना शुरू कर दिया है। कोरोना की शुरुआत वुहान शहर से हुई थी और अब एक बार फिर वुहान में ही कोरोना के नए मामले सामने आ रहे हैं। बुधवार को वुहान शहर में व्यवसायों और सार्वजनिक परिवहन को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया है। 10 लाख आबादी वाले जियांगक्सिया जिले को शटडाउन कर दिया गया है। समाचार एजेंसी के मुताबिक, प्रशासन के मुताबिक, जियांगक्सिया जिले के शहरी इलाके में बुधावार से तीन दिनों के लिए अस्थायी नित्रण उपायों को लागू किया गया है। लाकडाउन लगाने के आदेश दिए गए। जिले में सिनेमा हाल, बार और कई स्थानों को बंद कर दिया

गया है। साथ ही बड़े आयोजनों पर रोक लगा दी गई है। सभी धार्मिक स्थलों को भी बंद करने के निर्देश दिया गया है और धार्मिक गतिविधियों पर रोक लगा दी गई। लोगों को शहर ना छोड़ने के सलाह दी गई है। बता दें कि चीन में कोरोना महामारी रोकथाम के लिए जीरो-कोविड पालिसी पर जोर दिया गया । गौरतलब है इस फैसले से चीन में कोरोना वायरस को नियंत्रण करने में मदद मिली लेकिन सख्त प्रतिबंध की वजह से चीन की जनता परेशान भी हो गई। जीरो- कोविड पालिसी ने चीन में आर्थिक गतिविधियों से लेकर आवाजाही पूरी तरह से ठप हो चुकी थी। बता दें कि भले ही चीन इस नियम को लेकर चीन भले ही अपनी पीठ थप-थपा रहा है लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस नीति की आलोचनी की है।

ईरान में कार-ट्रक की भीषड़ टक्कर, छह लोगों की मौत

ईरान। मध्य ईरान में एक सड़क पर दो कारों की टक्कर में कम से कम छह लोगों की मौत हो गई। नैन रेड क्रिसेंट सोसाइटी के प्रमुख मोहम्मद जमानी ने बताया कि नैन-इस्फहान मार्ग पर हुए हादसे में एक कार बायीं ओर मुड़ी और विपरीत दिशा से आ रहे ट्रेलर से टकरा गई। जमानी ने कहा कि दुर्घटना में एक यात्री घायल हो गया, दुर्घटना के अन्य कारणों की जांच की जा रही है। आधिकारिक आंकड़े बताते हैं कि ईरान में हर साल यातायात दुर्घटनाओं में 20,000 से अधिक लोग मारे जाते हैं और 200,000 अन्य घायल होते हैं। ड्राइविंग अनुभव की कमी और कारों और सड़कों की कम दक्षता कथित तौर पर शीर्ष कारण हैं।

पूर्व राष्ट्रपति राजपक्षे को सिंगापुर का नया वीसा जारी, 14 दिन बढ़ी मियाद

कोलंबो। श्रीलंका में ऐतिहासिक संकट व हिंसक प्रदर्शन के बीच देश से रफूचक्कर हुए पूर्व राष्ट्रपति गोतबाया राजपक्षे सिंगापुर में डेरा जमाए हैं। सिंगापुर सरकार ने उनके प्रवास के लिए नया वीसा जारी किया। सिंगापुर में प्रवास की मियाद 14 दिन बढ़ाई गई है। बुधवार को आई मीडिया रिपोर्ट के अनुसार राजपक्षे के वीसा की अवधि 11 अगस्त तक के लिए बढ़ा दी गई है। राजपक्षे अपने देश श्रीलंका की अर्थव्यवस्था को नहीं संभाल पाने के कारण कोलंबो में फैले जनाक्रोश के बीच 13 जुलाई को देश छोड़कर मालदीव चले गए थे। वहां से अगले दिन वे निजी यात्रा पर सिंगापुर पहुंचे।

'द स्ट्रेट्स टाइम्स' की खबर के अनुसार, राजपक्षे को नया वीजा जारी किया गया है। सिंगापुर में उनके रहने की अवधि 11 अगस्त तक बढ़ा दी गई है। पहले सिंगापुर ने पूर्व राष्ट्रपति को 14 जुलाई को निजी यात्रा पर देश में प्रवेश करते ही 14 दिनों का अल्पकालिक यात्रा पास प्रदान किया था।

जल्दी देश वापस लौटने की उम्मीद

इससे पूर्व श्रीलंका की नवगठित रानिल विक्रमसिंघ सरकार के प्रवक्ता ने गुनावर्धने ने कहा था कि पूर्व राष्ट्रपति छिपे नहीं थे। उनके जल्दी ही सिंगापुर से लौटने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि उन्हें विश्वास नहीं है कि पूर्व

राष्ट्रपति देश छोड़कर भाग गए हैं और छिपे हुए हैं। हालांकि, उन्होंने राजपक्षे की संभावित वापसी के बारे में कोई अन्य जानकारी नहीं दी। गुनावर्धने परिवहन और राजमार्ग और मास मीडिया मंत्री भी हैं।

श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति को हिरासत में लेने के मामले में दिया बयान

श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति को हिरासत में लेने के लिए सिंगापुर के अटॉर्नी जनरल से किए गए अनुरोध पर टिप्पणी करते हुए, कैबिनेट प्रवक्ता ने कहा कि यदि कोई स्थिति है, तो देश में जिम्मेदार अधिकारी यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाएंगे कि पूर्व राष्ट्रपति को कोई नुकसान न हो। दक्षिण अफ्रीका के एक अधिकार समूह ने सिंगापुर के अटार्नी जनरल को एक आपराधिक शिकायत सौंपी है। इसमें उसने पूर्व राष्ट्रपति राजपक्षे पर कथित युद्ध अपराधों लगाएं और उनके लिए उन्हें गिरफ्तार करने का अनुरोध भी किया है। जानकारी के मुताबिक, इंटरनेशनल ट्रुथ एंड जस्टिस प्रोजेक्ट के वकीलों ने ये शिकायत प्रस्तुत की है। गौरतलब है कि आर्थिक संकटों का सामना कर रहे श्रीलंका में उनके खिलाफ महीनों के सार्वजनिक विरोध के बाद लोग 9 जुलाई को राष्ट्रपति भवन में घुस गए थे। इतना ही नहीं प्रदर्शनकारियों ने पीएम आवास सहित कई अन्य सरकारी कार्यालयों पर कब्जा जमा लिया था। इसके बाद राजपक्षे 13 जुलाई को मालदीव भाग गए और वहां से अगले दिन सिंगापुर के लिए रवाना हो गए थे।

भूकंप के तेज झटकों से कांपा फिलीपींस, रिक्टर स्केल पर 7.0 रही तीव्रता

मनीला। फिलीपींस में बुधवार सुबह 6.13 बजे भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। रिक्टर पैमाने पर भूकंप की तीव्रता 7.0 रही। हालांकि, इस दौरान किसी तरह के हताहत होने की खबर नहीं मिली है और ना ही सुनामी की कोई चेतावनी दी गई है। फिलीपींस के ज्वालामुखी और भूकंप विज्ञान संस्थान ने बताया कि भूकंप का केंद्र अब्रा प्रांत में किसी पर्वतीय इलाके में जमीन से 25 किलोमीटर की गहराई में स्थित था।

भूकंप के बाद भी कई झटके महसूस किए गए

भूकंप आने के बाद कई झटके महसूस किए गए। अधिकारियों ने बताया कि भूकंप के तीव्र झटकों के कारण इमारतों और मकानों की दीवारों में दरारें आ गयीं। गौरतलब है कि फिलीपीन भूकंप के लिहाज से संवदेनशील क्षेत्र है। देश में 1990 में आए 7.7 तीव्रता के भूकंप में करीब 2,000 लोग मोर गए थे।

जानें क्यों आता है भूकंप?

धरती मुख्य तौर पर चार परतों से बनी होती हैं। इनर कोर, आउटर कोर, मैनटल और क्रस्ट। क्रस्ट

और ऊपरी मैन्टल कोर को लिथोस्फेयर कहते हैं। ये 50 किलोमीटर की मोटी परत कई वर्गों में बंटी हुई है जिसे टैकटोनिक प्लेट्स कहते हैं। ये टैकटोनिक प्लेट्स अपनी जगह पर कंपन करती रहती हैं और जब इस प्लेट में बहुत ज्यादा कंपन हो जाती हैं, तो भूकंप महसूस होता है।

जानिए भूकंप के केंद्र और तीव्रता का क्या मतलब है?

भूकंप का केंद्र वह स्थान होता है जिसके ठीक नीचे प्लेटों में हलचल से धरती हिलने लगती है। इस स्थान पर या इसके आसपास के क्षेत्रों में भूकंप का असर ज्यादा होता है। अगर रिक्टर स्केल पर 7 या इससे अधिक की तीव्रता वाला भूकंप है तो आसपास के 40 किमी के दायरे में झटका तेज होता है।

कोरोना के बाद अब पैर पसार रहा मंकीपॉक्स, मेक्सिको में 60 मामलों की पुष्टि

मेक्सिको सिटी। कोरोना के कहर से दुनिया अभी ठीक से संभली भी नहीं है इसी बीच एक और वायरस डराने लगा है। इस नए वायरस का नाम मंकीपॉक्स है। मेक्सिको ने मंकीपॉक्स के 60 मामलों की पुष्टि की है। मेक्सिको के रोकथाम और स्वास्थ्य संवर्धन अवर सचिव ह्यूगो लोपेज-गैटेल ने मंगलवार को यह जानकारी दी। लोपेज-गैटेल ने कहा कि अब तक मेक्सिको में मंकीपॉक्स से कोई मौत नहीं हुई है।

लोपेज ने आगे कहा कि 'केवल पांच या छह लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है क्योंकि उनमें गंभीर प्रतिरक्षा दमन पाया गया है, लेकिन सामान्य तौर पर सभी लगभग 21 दिनों में ठीक हो गए।' 11 मैक्सिकन शहरों में मंकीपॉक्स के मामलों का पता चला है, जो वायरस से संबंधित है जो चेचक का कारण बनता है, लेकिन इसके मरीजों में हल्के लक्षण पाए जाते हैं और शायद ही कभी घातक हो सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, 75 देशों और क्षेत्रों में 16,000 से अधिक मंकीपॉक्स के मामले सामने आए हैं और पांच संबंधित मौतें दर्ज की गई हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने शनिवार को मंकीपॉक्स के प्रकोप को 'अंतर्राष्ट्रीय चिंता का सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल' घोषित किया था।

क्या है मंकीपॉक्स वायरस, कैसे फैलता है?

मंकीपॉक्स, स्मॉलपॉक्स (चेचक) की तरह ही एक वायरल इन्फेक्शन है जो चूहों और खासकर बंदरों से इंसानों में फैल सकता है। अगर कोई जानवर इस वायरस से संक्रमित है और इंसान उसके संपर्क में आता है तो संभावना है कि उसे भी मंकीपॉक्स हो जाए। यह देखने में चेचक का बड़ा रूप लगता है, इसमें लगभग लक्षण भी वहीं हैं। जिन लोगों में ज्यादा संक्रमण होता है उन्हें निमोनिया के लक्षण भी दिख सकते हैं। यह बीमारी एक इंसान से दूसरे में फैल सकती है। संक्रमित व्यक्ति को छूने से उसकी छींक या खांसी के संपर्क में आने से, संक्रमित व्यक्ति के मल के संपर्क में आने से या फिर संक्रमित व्यक्ति की वस्तुओं को इस्तेमाल करने से ये बीमारी दूसरे व्यक्ति में फैल सकती है। मंकीपॉक्स के विषय में डब्लूएचओ के क्षेत्रीय निदेशक, साउथ-ईस्ट एशिया रीजन, पूनम खेत्रपाल सिंह का कहना है कि मंकीपॉक्स उन देशों में भी फैलता हुआ देखा जा रहा है जहां पहले कभी नहीं देखा गया। वहीं, भारत में भी इसके बढ़ते मामले सामने आ रहे हैं।

मंकीपॉक्स से न्यूयॉर्क में दहशत, WHO से इसलिए की नाम बदलने की मांग

लंदन। कोरोना महामारी से जूझ रही दुनिया के सामने मंकीपॉक्स का खौफ बढ़ता जा रहा है। अमेरिका में न्यूयॉर्क में सबसे ज्यादा मरीज मिले हैं। बढ़ती दहशत को देखते हुए न्यूयॉर्क के स्वास्थ्य आयुक्त ने विश्व स्वास्थ्य संगठन WHO से इस वायरस का नाम बदलने की मांग की है। डब्ल्यूएचओ के अनुसार मंकीपॉक्स अब तक 75 देशों में दस्तक दे चुका है। दुनियाभर में मरीजों की संख्या 16 हजार से ज्यादा हो गई है। डब्ल्यूएचओ ने हाल ही में मंकीपॉक्स को लेकर वैश्विक स्वास्थ्य आपातकाल का एलान किया है। दरअसल, न्यूयॉर्क में मंकीपॉक्स के मरीजों की संख्या 1,092 हो गई है। इसे देखते हुए इस बीमारी से पीड़ित लोग बदनाम न हों और उनके इलाज व देखभाल में परेशानी न आए इसलिए बीमारी का नाम बदलने का आग्रह किया गया है। न्यूयॉर्क के पब्लिक हेल्थ कमिश्नर अश्विन वासन ने मंगलवार को डब्ल्यूएचओ के प्रमुख टेड्रोस एडनॉम घेब्रेयेसस को पत्र लिखकर कहा है कि हमें मंकीपॉक्स संक्रमित की बदनामी व इलाज की चिंता है। संक्रमण के खौफ से मंकीपॉक्स रोगी इलाज से वंचित हो सकते हैं।

वासन ने अपने पत्र में यह भी लिखा है कि मंकीपॉक्स का नाम बदलने का सुझाव पिछले माह डब्ल्यूएचओ ने ही दिया था। नाम बदलने की अपनी मांग के समर्थन में वासन ने उस नस्लवादी इतिहास का भी जिक्र किया, जिसके कारण 'मंकीपॉक्स' शब्द का इस्तेमाल खास समुदाय की ओर इशारा करने के लिए किया गया था। उन्होंने कहा कि मंकीपॉक्स दुनिया से खत्म हो चुके चेचक वायरस से भी मिलता जुलता नाम है, इसलिए भी बदला जाना चाहिए।

वासन ने यह भी कहा कि एचआईवी बीमारी के समय भी उसके बारे में भ्रांत जानकारियों के कारण लोगों के जेहन में मरीजों के प्रति नकारात्मक भाव पैदा हुए थे। इसी तरह पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी कोविड-19 को 'चायना वायरस' करार देकर इस महामारी के लिए एशियाई समुदाय को परोक्ष रूप से जिम्मेदार ठहराया था। वासन ने डब्ल्यूएचओ को लिखे पत्र में यह भी कहा कि असल में 'मंकीपॉक्स' वायरस नरवानर प्रजाति से पैदा नहीं हुआ है, जैसा कि उसके नाम से पता चलता है। इसका इस्तेमाल जारी रखने से नस्लवाद के कलंक की दर्दनाक यादें फिर ताजा होंगी। इससे खासकर काले लोगों व एलजीबीटीक्यू (लेस्बियन, गे, समलैंगिक किन्नर आदि) समुदाय के लोगों पर इसका बुरा असर पड़ सकता है।

आसियान की बैठक में उठेगा म्यांमार में फांसी देने का मुद्दा, दुनियाभर में कड़ी प्रतिक्रिया

म्यांमार। म्यांमार में चार राजनीतिक कैदियों को फांसी देने पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कड़ी प्रतिक्रिया हुई। दुनियाभर की सरकारों ने इसकी कड़ी निंदा की। स्थानीय लोगों ने प्रदर्शन कर म्यांमार में लोकतंत्र बहाल करने की मांग उठाई। मलयेशिया ने यह मामला आसियान बैठक में उठाने की बात कही है।सेना ने निर्वाचित नेता आंग सान सू की को फरवरी 2021 में बेदखल कर सत्ता पर कब्जा कर लिया था। इसके बाद से बिना किसी न्यायिक प्रक्रिया के हजारों लोगों की हत्या के आरोप लगे हैं। सोमवार को दशकों बाद देश में आधिकारिक तौर पर फांसी की शुरुआत हुई और चार लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। कुआलालंपुर में संयुक्त राष्ट्र के म्यांमार में विशेष दूत नोइलीन हेजर के साथ संयुक्त पत्रकार वार्ता में मलयेशिया के विदेश मंत्री सैफुद्दीन अब्दुल्ला ने कहा, यह मानवीयता के प्रति अपराध है। अगले हफ्ते कंबोडिया में होने वाली दक्षिणपूर्व एशियाई देशों के संगठन (आसियान) के विदेश मंत्रियों की बैठक में यह केंद्र में रहेगा। म्यांमार इसमें सदस्य है। पिछले वर्ष वह पांच मुद्दों पर सहमत हुआ था। इनमें सभी संबद्ध पक्षों से वार्ता, मानवीय मदद की व्यवस्था, हिंसा तत्काल रोकने और सभी पक्षों से वार्ता के लिए विशेष दूत की व्यवस्था करना थे। उन्होंने कहा, देखा जाएगा कि सैन्य जुंटा इन पांच बिंदुओं को लागू करने के प्रति कितना गंभीर है। उधर, राजधानी में प्रदर्शन कर हजारों लोगों ने कहा, इस तरह की हत्याएं बर्दाश्त नहीं की जाएंगी।

चीन का एक और रॉकेट अनियंत्रित, कहीं भी गिरने का खतरा

बीजिंग। बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धियों के तमाम दावों के बावजूद चीन रॉकेट लांच किये जाने के मामले में दुनिया के लिए मुसीबत बनता जा रहा है। पांच दिन पहले चीन से लांच किया गया एक और रॉकेट अनियंत्रित हो गया, जिसके धरती पर कहीं भी गिरने का खतरा माना जा रहा है। अभी पिछले साल ही

चीन का एक रॉकेट क्रैश होकर हिंद महासागर में गिर चुका है। चीन ने बीते रविवार को 21 टन का एक रॉकेट मार्च 5बी लांच किया था। हैनान स्थित वेनचांग लॉन्च साइट से लांच किया गया यह रॉकेट रॉकेट सौर ऊर्जा से चलने वाली नई लैब को लेकर रवाना हुआ था। इसमें वेनतियान एक्सपेरिमेंट मॉड्यूल का प्रयोग हुआ था और इसे चीन के तियांगॉन्ग स्पेस स्टेशन तक जाना था। चीन के इस रॉकेट में लांचिंग के समय ही धमाका हो गया था। इस कारण यह अनियंत्रित हो गया और जल्द ही कहीं भी और कहीं भी धरती पर गिरने वाला है। ऐसे में इस अनियंत्रित रॉकेट ने दुनिया की चिंताएं बढ़ा दी हैं।

ऐसा पहली बार नहीं है कि चीन से भेजा गया रॉकेट क्रैश हो रहा है। पिछले साल ही एक चीनी रॉकेट क्रैश हो चुका है। पिछले वर्ष मई में भेजा गया चीनी रॉकेट अनियंत्रित होकर हिंद महासागर में गिर गया था। उसके मलबे की वजह से पर्यावरण को खासा नुकसान हुआ था। इस बार भी विशेषज्ञों को चिंता सता रही है कि धरती में दाखिल होते ही रॉकेट पूरी तरह से जल जाएगा। ये अचानक सतह पर आएगा और किसी अज्ञात जगह पर तेज रफ्तार से गिरेगा। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के प्रशासक बिल नेल्सन ने चीन पर गैर-जिम्मेदाराना रवैये का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा है कि चीन जिम्मेदारी से मानकों को नहीं मान रहा है और अंतरिक्ष के मलबे को लेकर बहुत ही लापरवाह है।

अखंड भारत संदेश

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।

सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्

Title UPHIN 29506

ऑफिस मो.:
9565333000

Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

पाकिस्तान में पहली हिंदू महिला डीएसपी बनी मनीषा रुपेता; पाकिस्तानियों ने की तारीफ, रिश्तेदार बोले-टिकेगी नहीं

पेशावरः पाकिस्तान में मनीषा रुपेता को पहली हिंदू महिला छ्स्क्क के तौर पर नियुक्त किया गया है। सिंध लोक सेवा की परीक्षा पास करने और प्रशिक्षण हासिल करने के बाद उन्होंने यह उपलब्धि हासिल की है। पाकिस्तान में आम तौर पर महिलाएं पुलिस स्टेशन और अदालतों के अंदर नहीं जाती हैं। इन स्थानों को महिलाओं के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता है, इसलिए ज़रूरत पड़ने पर यहां आने वाली महिलाएं पुरुषों के साथ आती हैं। ऐसे माहौल में, मनीषा ने पुलिस बल को ज्वाइन करने का फ़ैसला लिया । उन्होंने कहा कि वह इस धारणा को बदलना चाहती थीं कि अच्छे परिवार की लड़कियां पुलिस स्टेशन नहीं जाती हैं।

मनीषा ने की थी डॉक्टर बनने की कोशिश

सिंध जिले के पिछड़े और छोटे से जिले जाकूबाबाद की मनीषा ने यहीं से अपनी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा हासिल की। मनीषा ने डॉक्टर बनने की कोशिश की थी, लेकिन महज एक नंबर कम होने की वजह से उन्हें स्ब्क्क्र में दाखिला नहीं मिला था। इसके बाद उन्होंने डॉक्टर ऑफ फिजिकल थेरेपी की डिग्री ली।

इस दौरान बिना किसी को बताए वह सिंध लोक सेवा आयोग की परीक्षा की तैयारी भी करती रहीं। उन्होंने ना केवल इस परीक्षा में कामयाबी हासिल की बल्कि 438 सफल आवदेकों में 16वें स्थान पर रहीं। उन्होंने बताया, 'हमें यह स्पष्ट तौर पर पता है कि कौन सा पेशा महिलाओं के लिए है और कौन सा था।

लेकिन मुझे हमेशा पुलिस का पेशा आकर्षित करता रहा और प्रेरित भी करता रहाय़मुझे लगता है कि यह पेशा महिलाओं की स्थिति को सशक्त बनाता है।÷ उन्होंने मुझे यह भी बताया कि उनका मुख्य उद्देश्य पुलिस के पेशे को महिलाओं से जोड़ने की कोशिश करना था।

मनीषा नें कराची के सबसे मुश्किल इलाके ल्यारी में ली ट्रेनिंग

मनीषा ने कहा कि पीड़ितों में ज़्यादातर महिलाएं हैं ऐसे में उनकी सुरक्षा करने वाली भी महिलाएं होनी चाहिए और इसी प्रेरणा से वह हमेशा पुलिस बल का हिस्सा बनना चाहती थी। स्वतंत्र रूप से डीएसपी का प्रभार संभालने से पहले मनीषा ने कराची के सबसे मुश्किल इलाके ल्यारी में ट्रेनिंग ली है। इस इलाके में पुलिस विभाग में ऑफ़िसर बनने वाली मनीषा पहली महिला हैं। उन्होंने स्क्क आतिफ अमीर की निगरानी में प्रशिक्षण लिया। अमीर का मानना है कि महिला पुलिस ऑफ़िसर की संख्या बढ़ने से पुलिस विभाग की छवि बदलने में मदद मिलेगी। मनीषा ने हमें यह भी बताया कि उनके समुदाय के लोगों का मानना है कि वह लंबे समय तक इस नौकरी में टिक नहीं पाएगी।

पाकिस्तानियों ने की प्रशंसा

इसके बारे में मनीषा ने बताया, 'मेरी कामयाबी पर लोग काफ़ी खुश हुए। पूरे देश ने मेरी प्रशंसा की। हर किसी से प्रशंसा सुनने को मिली लेकिन एक अजीब बात यह हुई कि मेरे नज़दीकी रिश्तेदारों का मानना है कि थोड़े ही समय में ये नौकरी बदल लूंगी।

उन्होंने बताया, 'पितृसत्तात्मक समाज में, पुरुषों को लगता है कि ये काम केवल पुरुष ही कर सकते हैं। यह एक सोचने का नज़रिया हो सकता है। लेकिन आने वाले कुछ सालों में ये लोग अपनी बात वापस लेंगे और हो सकता है कि उनमें से किसी की बेटी पुलिस विभाग में काम करने लगे।

मनीषा कराती हैं लड़कियों को प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी

मनीषा अपनी नौकरी के अलावा लोक सेवा आयोग की परीक्षा की तैयारी कराने वाली एक एकेडमी में पढ़ाती भी हैं। उन्होंने इस बारे में कहा, 'यह मेरे लिए काफ़ी प्रेरक है क्योंकि मुझे लगता है कि मेरी गाइडेंस से कुछ लड़कियों को आगे बढ़ने में मदद मिल सकती है।' मनीषा का मनना है कि पुलिस एक ऐसी सेवा है जो लिंग और धर्म से परे है। उन्होंने यह भी उम्मीद जताई कि आने वाले दिनों में अल्पसंख्यक समुदाय की ज़्यादा से ज़्यादा महिलाएं पुलिस विभाग में शामिल होंगी।

मनीषा के परिवार बारे में खास बातें

मनीषा के पिता जाकूबाबाद में व्यापारी थे और मनीषा जब 13 साल की थीं तब उनका निधन हो गया था।

मनीषा की मां ने अपने दम पर पांच बच्चों की परवरिश की। बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए वो कराची आ गईं ।

अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए मनीषा ने बताया कि जाकूबाबाद में लड़कियों को पढ़ाने लिखाने का माहौल नहीं था।

अगर किसी लड़की की शिक्षा में दिलचस्पी होती थी तो उसे केवल मेडिकल की पढ़ाई पढ़ने के लिए उपयुक्त माना जाता था।

मनीषा की तीन बहनें एमबीबीएस डॉक्टर हैं, जबकि उनका इकलौता और छोटा भाई मेडिकल मैनेजमेंट की पढ़ाई कर रहा है।